

धूप के सिक्के

धूप के सिक्के

एक काव्यमय यात्रा

प्रसून जोशी



रूपा

प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2016
7/16, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली 110002

कॉपीराइट © प्रसून जोशी 2016

हिन्दी अनुवाद © प्रसून जोशी 2016

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं
और तथ्य उसके द्वारा सूचित किए गए हैं
जिन्हें सम्भावित हद तक सत्यापित किया गया है।
प्रकाशक किसी भी तरह से उनके लिए उत्तरदायी नहीं है।

सर्व अधिकार सुरक्षित
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा,
किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से, इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोकॉपी
या रेकार्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

ISBN: 978-81-291-4038-8

प्रथम संस्करण 2016

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

प्रसून जोशी इस पुस्तक के लेखक होने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं।

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंध या खुले किसी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होती हैं। इस सन्दर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकार्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने के प्रति अपमाने, इसका अमुदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी तथा रिकार्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

विषय सूची

भूमिका

फिर मिलेंगे

खुल के मुस्कुरा ले तू
जीने के इशारे मिल गए
खुशियों की कोशिश में
कुछ पल

रंग दे बसंती

रूबरू
मस्ती की पाठशाला
खलबली
ललकार
रंग दे बसंती
तू बिन बताए
खून चला
लुक्का-छुप्पी

क्यों

बादलों की ओट में

ब्लैक

हाँ, मैंने छूकर देखा है

गजिनी

कैसे मुझे तुम मिल गई

सिकंदर
धूप के सिक्के

अधर्म
गाँव की गलियाँ

फ़ना
चंदा चमके
देखो ना

हम तुम
लड़की क्यों
साँसों को साँसों में

थोड़ा प्यार थोड़ा मैजिक
निहाल
प्यार के लिए

देल्ही 6
अर्जियाँ
मसक्कली
रहना तू
गेंदा फूल
काला बंदर
दफ़तन

लंदन ड्रीम्स
यारी बिना
ख्वाब को
खानाबदोश
जश्न है जीत का
शोला शोला

तारे जमीं पर
देखो इन्हें
खोलो खोलो
बम बम बोले
माँ
जमे रहो

ब्रेक के बाद
धूप के मकान
दूरियाँ हैं जरूरी
मैं जीयूँगा
अजब लहर

अब के सावन
अब के सावन
सीखो ना
उसने कहा
भाई रे

सपना देखा है मैंने

मन के मंजीरे
झील
इंतज़ार
बाबुल
माटी
मन के मंजीरे

आरक्षण
कौन सी डोर

लो मशालों को जगा डाला

सत्यमेव जयते

चिटगाँव
जीने की वजह
बोलो ना

चिंतन

भूमिका

समय: सुबह ७ बजकर २ मिनट

स्थान: बीएंडबी कॉटेज

शहर/देश: एसिज़ी/इटली

एक शांत सुबह, एक पेड़ के तले कुछ पुरानी, किन्तु आरामदायक कुर्सी पर मैं बैठा हूँ, हाथ में कॉफी का प्याला, जो मेरी हथेलियों से अपनी गर्माहट को बाँट रहा है। तभी मेरे कानों में गूँजता है पक्षियों का एक जाना-पहचाना कलरव, कु-कु-कु...कुकु। मेरा रोम-रोम रोमांचित हो उठता है, एक नर्म-सी गर्माहट मुझे अपने आगोश में ले लेती है, और मैं कई मील और कई साल पीछे अपने अतीत में पहुँच जाता हूँ...

जब मैं आठ या नौ साल का बच्चा था, हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड के छोटे से शहर अल्मोड़ा के वनों में घूमता हुआ, चीड़ के फल इकट्ठे करता हुआ, तब यही ध्वनि मेरे कानों में रस घोलती थी...कु-कु-कु...कुकु। इसकी मिठास बढ़ाती थी मेरी नानी की आवाज़, जो इस पक्षी के गान से जुड़ी कहानी मुझे सुनाती थी।

वह कहानी कुछ इस प्रकार थी: एक युवा पहाड़ी लड़की, जिसकी शादी एक दूर-दराज़ के गाँव में हुई थी, भाई दूज के त्यौहार पर अपने भाई के आने की बाट जोहती है... आखिर उसका भाई, पूरे साल में बस उसी समय तो उससे मिलने आ पाता था। अपने गाँव से मुँह अँधेरे ही निकला भाई, खाली पेट ही चल पड़ता है, परंपरा के अनुसार, वह खाएगा या पिएगा तब ही, जब उसकी बहन उसके माथे पर टीका लगाएगी। दुर्गम पहाड़ी रास्तों पर घंटों पैदल चलता हुआ, वह अपनी बहन के घर पहुँचता है। पर दिनभर के कामों से थककर चूर उसकी बहना की, इंतज़ार करते-करते, आँख लग जाती है।

घर पहुँचने पर भाई अपनी सोई हुई छोटी बहन को दुलार भरी नज़रों से देखता है। वह उसे एक चादर ओढ़ाता है, उसके माथे को प्यार से सहलाता है। अपनी बहन को कम ही नसीब होने वाले आराम के पलों को वह चुराना नहीं चाहता, इसलिए लौट जाता है।

कुछ समय बाद बहन उठती है। यह जानकर कि उसका भाई आया था पर वापस चला गया, वह ज़ार-ज़ार रो उठती है, यह कहते हुए कि 'मेरे भैया आए थे... थके-मांदे, भूखे-प्यासे...वे वापस चले गए...और मैं अभागी सोती रही।' अपराध बोध में डूबी बहन, अपने भैया की याद में अपने प्राण त्याग देती है। कहते हैं कि इसी बहन को घुघुती पक्षी के रूप में पुनः जन्म मिला है। इसलिए जब भी वह कूकती और गाती है, तो दोहराती है 'घुघुती बसुती, भै भूक गो मैं सूती', जिसका अर्थ है, मेरे भैया भूखे वापस चले गए और मैं सोती रही।

घुघुती बसुती की कहानी — वह पक्षी और उसका गीत — लोक साहित्य का हिस्सा बन

चुके हैं। मैं सोचता था कि यह पक्षी और गीत, पहाड़ों में बसी हमारी छोटी सी दुनिया का ही एक अनूठा अंश है, पर इटली के उस छोटे से शहर में वही चिर-परिचित ध्वनि सुनकर मन कौतूहल से भर गया। शायद इटली में इस पक्षी के गान से जुड़ी कोई और कथा हो। किन्तु यदि न भी हो, तो भी इस कहानी की सुंदरता और करुणा कम नहीं हो जाती। घुघुती बसुती की कहानी किसी की कल्पना की उपज होगी, पर मेरे लिए यह एक बहुत मज़बूत डोर बन गई... मेरे बचपन और उसकी यादों से मुझे जोड़ने वाली।

कहानियों और गीतों की यही शक्ति होती है। ये आपकी आत्मा को समृद्ध करते हैं और खूबसूरत रिश्तों का सृजन करते हैं। रोज़मर्रा की चुनौतियों, साधारण बातों और नीरस वार्तालापों के बीच, इंसान का मन और मस्तिष्क, कोमल संवेदनाओं की चाह रखता है, और इन्हें अभिव्यक्त करता है दिल को छू जाने वाली कहानी से, सुंदर कविता से या कर्णप्रिय गीत से। ये सभी हमारी एक खुशनुमा दुनिया की ज़रूरत को पूरा करते हैं। गीत उपचार करने की शक्ति रखते हैं, ये प्रेरणादायी हो सकते हैं, दार्शनिक हो सकते हैं या मात्र एक नाजुक सा नाता भी। ये उस आस्था के प्रतीक हैं कि अनेक चुनौतियों के बीच भी, जीवन खुशनुमा है — जीने के अनेक कारण हैं।

इसलिए मुझे गीत लिखना पसंद है। गीत जीवन में हमारे विश्वास को पुनः प्रज्वलित करते हैं।

यह जानना दिलचस्प है कि गीतों और समाज में कितना गहरा संबंध है। ऐसा कोई सांस्कृतिक समूह नहीं जो गाता न हो, फिर भले ही वह कितना भी सुदूरवर्ती या पृथक क्यों न हो। गीत न केवल प्राचीन और सार्वभौमिक हैं, इनका संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों से भी है। ईश्वर का आह्वान करना हो या उनकी स्तुति, जीवन के विभिन्न पड़ावों का उत्सव मनाना हो, ऐतिहासिक गाथाओं का वर्णन करना हो, या सिर्फ स्वयं को अभिव्यक्त करना हो, गीतों का हमारे जीवन में एक विशेष स्थान रहा है।

हमारी भारतीय परंपराओं में तो गीत, संस्कृति के वाहक रहे हैं। हमारे ग्रंथ और महाकाव्य, ज़्यादातर पद्य में ही हैं। कबीर और रहीम के दोहे, मीरा और लल् द्यद के गीत, हमारी मौखिक परंपरा के अंग हैं। प्राचीन ज्ञान की विरासत, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, काव्यों और गीतों के माध्यम से ही तो सौंपी जाती रही है। हमारी ललित कलाएँ, जिनमें नौटंकी, जत्रा आदि जैसे लोक नाट्य शामिल हैं, सदैव गीतों से भरपूर रहे हैं।

आगे बढ़ते हैं, उस काल और उन पहलुओं की ओर, जिनसे हम संबंध रखते हैं, जिनसे शायद हमारा अधिक सरोकार है।

हमारे समय में, सिनेमा का प्रभाव, उसकी सार्वभौमिकता और सबको जोड़ने की क्षमता, किसी से छुपी नहीं। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना है, जो एक सशक्त और विविधतापूर्ण कला रूप में विकसित हो गई है। अनेक प्रकार की रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ, जैसे नाट्य, काव्य, संगीत और अन्य कलाएँ, सिनेमा में मंच पाती हैं।

धार्मिक प्रेरणाओं, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और मनोरंजन का स्रोत — भारतीय संगीत, हमारे सिनेमा का एक अभिन्न अंग है। बहुत ही कम हिन्दी फ़िल्में ऐसी रही हैं, जिनमें कोई गीत न हो। आज, प्रयोगवादी सिनेमा, 'क्रॉसओवर' थीम्स और वैश्वीकरण के दौर में, हमारी फ़िल्मों का गीत-संगीत ही भारत की अपनी विशिष्ट पहचान है, और हमारे सिनेमा की एक निर्धारक विशेषता भी।

हमारे सिनेमा और गीतों के बीच के इस अनूठे रिश्ते के बारे में मैंने अक्सर विचार किया है। मुझे यह शायद इसलिए भी अधिक कौतूहलपूर्ण लगता है, क्योंकि मेरी पृष्ठभूमि या जड़ें, फ़िल्मों की दुनिया की नहीं हैं। मैं समझता हूँ कि मैं एक बाहरी व्यक्ति हूँ, जो संयोग से इस उद्योग में आ पहुँचा।

मेरा बचपन और मेरी युवावस्था का काफ़ी हिस्सा उत्तराखंड में बीता, भव्य हिमालय और उसके अवर्णनीय प्राकृतिक सौंदर्य के बीच। भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत में रचे-बसे हमारे पारिवारिक वातावरण में, फ़िल्मों और उनके गीतों का स्थान लगभग नहीं के बराबर था।

पहाड़ी जीवन ही मेरी प्रेरणा का स्रोत था और मैं बचपन से ही कहानियाँ, कविताएँ और गद्य लिखने लगा।

उन दिनों की एक बहुत प्यारी सी स्मृति है — गर्मी की छुट्टियों के दौरान मैंने कहानियाँ लिखीं और उन सबको हाथ से सिली पुस्तकों में संकलित किया। ये पुस्तकें, स्व-निर्मित 'प्रसून बाल पुस्तकालय' नामक एक चलित पुस्तकालय का हिस्सा बनीं। अपनी लिखी हर पुस्तिका के लिए पूरे १ रुपए की राशि लेना, इन सब मासूम बातों ने मेरे बचपन को अनेक प्रकार से समृद्ध किया है।

पर जब मैं बड़ा हुआ, तो घर के रचनात्मक वातावरण के बावजूद मेरे माता-पिता ने मुझे स्पष्ट कर दिया कि लेखन और संगीत, करियर की दृष्टि से व्यावहारिक विकल्प नहीं हैं। मुझे याद है कि पिताजी ने मुझसे कहा था कि वास्तविक दुनिया में, मैं सिर्फ़ काव्य के सहारे गुज़ारा नहीं कर पाऊँगा। तब मैंने, रुचि न होने के बावजूद, औपचारिक शिक्षा के परंपरागत पथ पर चलने का निर्णय लिया — पहले मैंने विज्ञान की पढ़ाई की और फिर एमबीए किया। पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो कई बार सोचता हूँ कि क्यों मैंने अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर अपने सपनों का पीछा नहीं किया। शायद इसलिए कि युवावस्था में भी, मैं अपने माता-पिता की इच्छाओं का सम्मान करता था, उनकी क्रोध करता था। उनकी इच्छाओं की अवहेलना कर विद्रोह करना, मेरे हृदय को गवारा न था। अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं का अनुसरण करना शायद आसान है, पर यह मुझे स्वार्थी और विचारहीन प्रतीत हुआ। मैं इतना असंवेदनशील नहीं हो सका कि विद्रोह कर सकूँ।

तथापि, बिज़नेस मैनेजमेंट मुझे नीरस ही लगा और मेरे मन में आगे के रास्ते को लेकर अनिश्चय था। ९ से ५ बजे की नौकरी का हिस्सा बनने का विचार ही मुझे भयभीत कर देता था। मुझे याद है, एक पेन्ट कंपनी के इंटरव्यू कॉल से तो मैं भाग खड़ा हुआ था। और फिर एक दिन, एक बड़ी अनूठी कंपनी हमारे संस्थान में समर ट्रेनीज़ की भर्ती हेतु आई। मुझे ज्ञात हुआ कि कम्युनिकेशन और एडवर्टाइज़िंग नामक एक क्षेत्र और पेशा भी होता है — एक करियर, जिसमें मैं बिज़नेस मैनेजमेंट के अपने प्रशिक्षण के साथ-साथ, साहित्य, लेखन, काव्य और संगीत में अपनी रुचियों का भी उपयोग कर सकता हूँ। अधिकतर कला रूप जिनसे मुझे प्रेम था, उनका एडवर्टाइज़िंग से कुछ न कुछ संबंध था। यह वह जगह थी, जहाँ मुझे लिखने के पैसे मिलेंगे — मेरे लिए यह किसी सपने के सच होने जैसा ही था। फिर भी, अपने चुने हुए रास्ते को लेकर मन में थोड़ी शंका थी। कारण, उन दिनों मास मीडिया कम्युनिकेशन, करियर विकल्प के रूप में अपेक्षाकृत नया था और उतना स्थापित भी नहीं। कम ही लोग इसका चुनाव करते थे।

फ़िल्में और म्यूज़िक एलबम, इनका तो विचार भी इस समय मेरे मन से कोसों दूर था।

अपने इस दौर के बारे में कभी-कभी सोचता हूँ, तो लगता है कि जीवन में भ्रमित और अस्पष्ट होना भी आवश्यक है. यह एक महत्वपूर्ण अवस्था है. जो दुख, निराशा और कुंठा आप इस दौरान अनुभव करते हैं, उसे मैं गहराई प्रदान करने वाली एक व्यक्तिगत यात्रा कहूँगा, जिसमें आप अपनी शक्तियों को जान पाते हैं और आप जो असल में करना चाहते हैं, उसके साथ संतुलन बैठा पाते हैं. जीवन में मुझे क्या करना है, इस बात को लेकर एक निश्चित मानसिकता के अभाव और मेरी आरंभिक अस्पष्टता के कारण ही मैं खोज कर पाया, प्रयोग कर पाया और एक ऐसे रास्ते पर चल पाया, जो लीक से हटकर था.

इस पूरे दौर में, लेखन के प्रति मेरा प्रेम, मेरे अस्तित्व का अभिन्न हिस्सा बना रहा.

हालाँकि मैं कविताएँ लिखता रहा, पर गीतों के लिए बोल लिखना, एक अकस्मात घटना ही थी.

फ़िल्मों के लिए लिखना, कभी भी मेरी योजना या विचारों में शामिल नहीं था. मुझे संगीत से प्रेम था और मेरा पूरा खाली समय, दिल्ली के कमानी सभागृह में या उसके आसपास ही बीतता था — देर रात तक शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का रसास्वादन करते हुए. मुझे याद है, मैं दिल्ली के बाहरी इलाके में रहता था और वहाँ के लिए बस सेवाएँ रात ११ बजे के बाद बंद हो जाती थीं. उनके पुनः शुरू होने के लिए सुबह पाँच या छह बजे तक इंतज़ार करना पड़ता था. कई बार, देर रात खत्म होने वाले कार्यक्रमों के बाद — दिल्ली की कड़के की ठंड में अपने जैकेट को कसकर बाँधते हुए — मैं सिकुड़कर, बस स्टॉप की बेंच पर ही खुशी-खुशी सो जाया करता था, राग-रागिनियाँ बड़े प्यार से थपकियाँ देकर मुझे गहरी नींद सुला दिया करती थीं.

यही वह दौर था, जब मैं समान सोच रखने वाले लोगों से मिला और मैंने विभिन्न बैंड्स और संगीतकारों, जैसे सिल्क रूट और शुभा मुद्गल के लिए गीत लिखने की शुरुआत की. यह मेरे अंदर के कवि को स्वर देने का माध्यम अधिक था, इसके पीछे कोई व्यावसायिक दृष्टिकोण नहीं था. म्यूज़िक एलबमों के लिए किया गया मेरा कार्य, फ़िल्म निर्देशक राजकुमार संतोषी की नज़र में आया और उन्होंने मुझे एक गीत लिखने का प्रस्ताव दिया. मुझे लगता है, मैं इस बात से अधिक रोमांचित था कि प्रसिद्ध संगीतकार इलैयाराजा मेरे लिखे गीत को संगीतबद्ध करेंगे और लताजी इसे गाएँगी, बजाय इस बात के कि मुझे हिन्दी फ़ीचर फ़िल्म के लिए लिखने का अवसर मिल रहा है.

गीतों के बोल लिखना कभी भी मेरा पेशा नहीं था और न ही है. यह एक शौक है, जुनून है. इसने मुझे काव्य और गीत लेखन के अत्यंत संवेदनशील गुणग्राहकों से जुड़ने का अवसर दिया है. गीत लेखन के विषय में मेरे विचार, मेरी कार्यशैली और मेरा दृष्टिकोण न तो किसी परंपरा की देन हैं और न ही किसी फ़िल्मी पृष्ठभूमि का नतीजा. इनका एकमात्र स्रोत है हर वह बात, जो एक लेखक और व्यक्ति के तौर पर मैंने देखी है, अनुभव की है, आत्मसात की है.

मैं आपके साथ, अपने कुछ बोध और अवलोकन साझा करना चाहता हूँ. ये संभवतः आपको भी विचार करने की प्रेरणा देंगे और इनके माध्यम से गीत-संगीत की मेरी व्यक्तिगत दुनिया की एक झलक भी आपको मिल सकेगी.

मेरी दृष्टि में भारतीय फ़िल्म उद्योग, तकनीक, निर्माण, निर्देशन, अभिनय जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बहुत उन्नत रहा है. पर यदि संगीत की बात करें तो इसे अद्भुत ही कहना होगा, और गीतों के बोलों के संबंध में तो श्रेष्ठता के भी परे. कई मामलों में, हमारे गीतों की विषय-वस्तु की तुलना,

विशुद्ध काव्य या साहित्य से की जा सकती है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि किसी भी देश के लिए यह अत्यंत दुर्लभ बात है कि उसके साहित्यिक लेखक और महान कवि उसकी फ़ीचर फ़िल्मों के लिए लिखें। यह हमारा सौभाग्य ही है कि साहिर लुधियानवी, कैफ़ी आज़मी, गोपालदास 'नीरज', मजरूह सुल्तानपुरी, पंडित नरेंद्र शर्मा, शैलेंद्र और शकील बदायूनी जैसे कवियों ने हमारे सिनेमा को अपनी कला से समृद्ध किया है।

उन्हें हमारे समाज में गीतों की प्रासंगिकता का बोध था। हम एक ऐसी संस्कृति से संबंध रखते हैं, जिसमें पढ़ा कम जाता है लेकिन सुना अधिक जाता है। इस मौखिक परंपरा ने हमारे गीतों को दर्शन, भावनाओं और आस्थाओं से सदा ओत-प्रोत रखा है। गहरी प्रतीकात्मकता और नैतिक विचारधाराएँ, हमारे गीतों में गुँथी हुई रहती हैं।

देखें तो हमारे फ़िल्मी गीतों के बोलों के अध्ययन से, छोटे में ही, विभिन्न दशकों की भारत की लोकप्रिय चेतना के विषय में जाना जा सकता है। आखिर हर दौर के गीत उस काल की नैतिकता के, भावात्मक वातावरण के और उस दौरान जन्म लेने व पनपने वाली बौद्धिक और कलात्मक प्रतिभाओं के दर्पण होते हैं।

उदाहरण के लिए, ३० और ४० के दशकों के गीतों में लोक परंपराओं की प्रधानता दिखाई देती है, इस दौर में दर्जनों गीत, कथा-कहानियों का हिस्सा हुआ करते थे। ५० के दशक के गीत, राष्ट्र निर्माण से जुड़ी आशाओं और आदर्शवाद के प्रतिबिंब थे। ६० के दशक के गीतों में एक किंचित सा सामाजिक मोहभंग नज़र आता है। खुली अभिव्यक्ति और एक अलग पीढ़ी की ऊर्जा, ७० के दशक के गीतों की पहचान रही है।

मेरे समय का सिनेमा व उस दौर के गीत, मुझे बहुत अच्छी तरह से याद हैं। मैं ८० और ९० के दशकों की बात कर रहा हूँ। कुछ अपवादों को छोड़कर, अधिकांश गीत एक फॉर्मूला की तरह लगते थे, स्टॉक म्यूज़िक की तरह। वस्तुतः लोकप्रिय म्यूज़िक बैंड और एकल कलाकारों के रूप में वह समानांतर संगीत उद्योग ही था, जो मुझे प्रभावित करता था। यह मुझे उत्साह और उम्मीद देता था कि प्रतिभा को एक ऐसा मंच भी मिल सकता है, जहाँ वह फिल्म कथानक के बंधनों के परे भी कुछ रच सकती है, अभिव्यक्त कर सकती है। मैंने अपने कुछ बहुत प्रिय गीत स्वतंत्र एलबमों के लिए ही लिखे हैं — अब के सावन, मन के मंजीरे, बूँदें आदि। दुर्भाग्य से, फिल्मों से स्वतंत्र, संगीत की यह धारा लंबे समय तक व्यावसायिक रूप से सफल नहीं रह पाई। यह एक स्थिति है, जिसमें परिवर्तन देखना मुझे बहुत खुशी देगा।

मैं यह इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि संगीत में व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की गुंजाइश को और भी अधिक खोजे जाने की ज़रूरत है। रियलिटी शो और अन्य मंच एक क्षणिक अवसर प्रदान करते हैं, पर सभी कलाकारों की अंतिम मंज़िल सिनेमा ही होती है। आज हर क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण विकास हो रहे हैं, फिर चाहे राजनीति हो, विरोध प्रदर्शन हो, सोशल मीडिया हो अथवा तकनीक। एक ऐसी युवा पीढ़ी, जो आर्थिक रूप से मज़बूत है और अपने आपको व्यक्त करने में हिचकिचाती नहीं, इस समय की पहचान बनकर उभरी है। यह रूझान, स्वतंत्र संगीत के क्षेत्र में भी झलकना चाहिए, जिसमें हमारे समय का प्रतिबिंब और सशक्त अभिव्यक्ति बनने की पूरी क्षमता विद्यमान है।

यह याद करना बड़ा रोचक है कि ९० के दशक में जहाँ एक समानांतर संगीत उद्योग आकार ले रहा था, वहीं समाज के एक अलग स्तर से, एक बिल्कुल ही नई तरह की आवाज़ का आगमन

हो रहा था. 'अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का' और 'तुम तो ठहरे परदेसी' जैसे गीतों ने ज़बरदस्त लोकप्रियता अर्जित की. मेरी दृष्टि में, धुनों, बोलों और आवाज़ों का यह बदलाव, आम आदमी की बोली का भारतीय फ़िल्म संगीत की मुख्यधारा में स्थान बनाने का आरंभ था.

इस प्रवाह ने आज के समय में काफ़ी मज़बूती पाई है. मैंने लोगों को कई बार आजकल के गीतों की गुणवत्ता को लेकर दुख प्रकट करते देखा है. वे उदाहरण देते हैं, अनेक तथाकथित आइटम साँग्स में प्रयुक्त होने वाली निम्न-स्तरीय भाषा और साधारण आवाज़ों का. पर मैं समझता हूँ कि हम इसे तिरस्कारपूर्वक न पूरी तरह से नकार सकते हैं और न ही इसे अपने समय का सूचक मानकर अपना सकते हैं. हमें इसका विश्लेषण करना होगा, इसे समझना होगा.

यह सोचना हमारी अपरिपक्वता ही होगी कि हमारे समाज में इस तरह के गीत पहले विद्यमान नहीं थे. ऐसे गीत होते थे, पर शायद उनके श्रोता सीमित थे. सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अधिक्रम, एक अदृश्य दीवार पैदा कर देते थे. यह वर्गीकरण, चाहे किया गया हो या स्वतः ही उपस्थित रहा हो, एक खास प्रकार के संगीत, आवाज़ों और बोलों को मध्यमवर्गीय घरों व संवेदनाओं तक आसानी से पहुँचने नहीं देता था. आज, बाज़ार का दायरा फैल रहा है, श्रेणियों के बीच की दीवारें गिरती जा रही हैं. पैसों से अपनी पसंद सुलभ हो गई है. तो फिर चाहे अच्छे के लिए हो या बुरे के लिए, हर प्रकार का संगीत मुख्यधारा में स्थान पा रहा है.

तो क्या इसका अर्थ यह है कि जिन विशेषताओं ने पीढ़ियों से हमारे गीतों को पोषित व परिभाषित किया है, उनका लोप हो जाएगा? क्या मधुर गीतों, गहरे बोलों और प्रशिक्षित आवाज़ों का अस्तित्व समाप्त होता चला जाएगा?

जैसा कि मैं देखता हूँ, आज का समय फ़िल्म उद्योग के लिए चुनौतियों और संभावनाओं, दोनों से भरपूर है. जहाँ संगीतकारों, गीतकारों और कलाकारों को बाज़ार की बदलती हुई माँग को स्वीकार कर, फ़िल्मी गीतों के संदर्भ में अनेक विभिन्न रुचियों को संतुष्ट करना होगा, वहीं हमें इसके मूल में शुद्धता और गुणवत्ता को बनाए रखने के प्रयास भी करने होंगे. गीतों को विशुद्ध मनोरंजन के परे जाना ही होगा, क्योंकि उनमें लोकप्रिय चेतना को गढ़ने और प्रभावित करने की क्षमता होती है, वे चेतना को सोच और संवेदनशीलता से परिपूर्ण कर सकते हैं.

गीतकारों को, गुणवत्ता के इस कठिन संतुलन को हासिल करने के लिए, और भी अधिक प्रयोगवादी होना होगा.

मुझे याद है, जब मैंने फ़िल्मों के लिए लिखना शुरू किया तो अक्सर कहा जाता था कि मेरा शब्दों का प्रयोग बहुत असामान्य है. हिन्दी फ़िल्मी गीतों के प्रमुख शब्द, जैसे 'दिल', 'माहिया' इत्यादि मेरे गीतों में नज़र नहीं आते थे. इनके स्थान पर प्रकट होती थी एक नई सोच, जिसके अंतर्गत थे 'मस्ती की पाठशाला' (रंग दे बसंती) या 'कौन सी डोर' (आरक्षण) जैसे गीत. जहाँ फ़िल्मी गीतों में बार-बार प्रयुक्त शब्द बहुत ही कम थे. मेरे विचार से यह इसी बात को प्रदर्शित करता है कि बड़े होते समय, फ़िल्म संगीत से मेरा नाता नहीं रहा. मेरी शब्दावली, साहित्य, लोकसंगीत और बोलचाल की भाषा का निचोड़ है, क्योंकि मैं इन्हीं की संगति में बड़ा हुआ हूँ. कई बार मुझे निर्माताओं और संगीत निर्देशकों द्वारा कहा जाता था, और आज भी कहा जाता है, कि अमूक शब्द, पद या संरचना 'चलेगी नहीं' या आसानी से समझ नहीं आएगी. यहीं मैंने सबसे अधिक संघर्ष किया है, यह समझने के लिए कि किस प्रकार का कार्य मेरे अंदर के कलाकार को संतुष्ट कर सकेगा और फिर भी, आम जनो की स्वीकृति पा सकेगा.

ऐसे समय में सोचता हूँ — क्या संगीत के प्रति प्रेम एक अर्जित गुण है? यदि नहीं, तो ऐसा क्यों होता है कि जो संगीत एक व्यक्ति को सुमधुर लगता है, वही दूसरे को कर्कश लग सकता है? कई बार संगीत को लेकर मानव की प्रतिक्रिया लगभग पूर्वनियोजित सी लगती है। यह ऐसा है, मानो मस्तिष्क का कोई खास हिस्सा संगीत से संबंध रखता है, और भावनाओं व अनुभूतियों का एक निश्चित समूह प्रदाय करता है।

अधिकतर लोग वास्तव में संगीत नहीं खरीदते, वे भावनाओं का एक समूह लेते हैं। 'पुरानी यादें', 'प्रेम', 'प्रेम में ठुकराया जाना', 'भक्ति', 'टेक्नो', 'पार्टी', 'डांस', ये सब गीतों की श्रेणियाँ हैं। एक गीत का आनंद उसके वैयक्तिक अस्तित्व के लिए उतना नहीं लिया जाता, जितना कि उसके संगीत के एक बड़े पैकेज का हिस्सा होने के लिए। पूर्वकल्पित भावनाएँ उमड़ पड़ती हैं, और हमें स्तब्ध कर उस गीत का आनंद लेने में मगन कर देती हैं, जो किसी न किसी रूप में जाना-पहचाना होता है। यहाँ मैं यह बिल्कुल नहीं कह रहा हूँ कि कुछ सच्चे संगीत-गीत सृजक और संगीत-गीत प्रेमी मौजूद नहीं हैं जो नए-नए प्रयोग करते रहते हैं। पर बाज़ार की संस्कृति संख्या को अधिक महत्व देती है और दुर्भाग्य से उनकी संख्या कम है।

गीत की रचनात्मक संरचना — रचना की जटिलताओं, शब्दों की गहराइयों, वाद्य यंत्रों की बारीकियों आदि पर शायद ही कभी ध्यान दिया जाता है। संगीत और गीतों को आँकने के मापदंडों को तो मानो अब एक ही व्यापक विशेषता से बदल दिया गया है — मनोरंजक संगीत। यह शायद हमारे समय की झलक है, जहाँ सतही तत्काल तुष्टि को विषय-वस्तु की गुणवत्ता से अधिक महत्व दिया जाता है।

यदि यह दौर जारी रहा और इस तरह के आधारभूत व तुरंत समझ में आने वाले गीतों की माँग होती रही व अधिकतर समय हम इन्हें स्वीकार भी करते रहे, तो प्रयोग करने की गुंजाइश निरंतर कम होती जाएगी।

शायद यही कारण है कि 'काला बंदर' जैसा गीत, जिसमें 'कसमें तो मूँगफली हैं जब जी चाहे हम खाते' जैसे पद थे, विषय-वस्तु की दृष्टि से सशक्त और व्यंग्यपूर्ण होने के बावजूद उतना पसंद नहीं किया गया जितनी मुझे आशा थी। व्यंग्य की 'हिप-हॉपिश' शैली के लिए शायद आम भारतीय मानस अभी तैयार नहीं है।

पर इस स्थिति का बदलना और बेहतर होना आवश्यक है। यह एक सत्य है कि गीत, किसी विशेष कारण से एक कथा का हिस्सा होते हैं। आइटम सॉन्ग होते हैं 'सस्पेंशन ऑफ लॉजिक' की आवश्यकता के लिए, विराम के लिए। एक दार्शनिक गीत होता है सामूहिक भाव-विरेचन के लिए।

दी गई स्थिति के दायरे में नए आयाम खोजने की गुंजाइश — मेरे अंदर के लेखक को यही बात प्रेरित करती है। 'दी गई स्थिति', इस पद से एक खास पहलू मन में आता है, जिसके बारे में यहाँ कुछ बात करना चाहूँगा — हमारी फ़िल्मों में प्रेम गीतों का महत्व।

व्यापक दृष्टि से देखा जाए तो यह त्वरित और शायद गलत धारणा बन सकती है कि हम भारतीय प्रकट रूप से प्रेमी-हृदय हैं, क्योंकि प्रेम भारतीय फ़िल्म संगीत और गीतों का आधार रहा है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि क्या प्रेम, किसी अन्य भाव की अपेक्षा हमारी संस्कृति का अधिक महत्वपूर्ण पहलू रहा है? क्योंकि हर दूसरे फ़िल्मी गीत में आपको प्रेम की अभिव्यक्ति मिल जाएगी।

भारतीय समाज अनेक परतों से बना है, इसकी सामाजिक और नैतिक बुनावट अत्यंत पेचीदा है। स्त्री और पुरुष का प्राकृतिक संबंध, सामाजिक प्रतिबंधों और स्वीकृतियों के दायरे में संचालित होता है। प्रेम प्रदर्शन पारंपरिक रूप से एक वर्जना थी और इसकी अभिव्यक्ति कविताओं और गीतों के माध्यम से होती थी।

अपने प्रिय को अपनी भावनाएँ बताना हो — 'मौसम है आशिकाना', 'तेरे हुस्न की क्या तारीफ़ करूँ' या स्वयं का हाल सुनाना हो — 'मेरी आँखों से कोई नींद लिए जाता है', 'धीरे-धीरे मचल ऐ दिल-ए-बेकरार' हर स्थिति के लिए गीत विद्यमान हैं। प्रत्येक भाव हमारे गीतों में अभिव्यक्ति पाता है, फिर चाहे लालसा हो — 'दूर रहकर न करो बात करीब आ जाओ', 'मोरा गोरा अंग लई ले'; इरादा — 'मेरे दिल में आज क्या है', 'प्यार पर बस तो नहीं मेरा लेकिन'; शोखी — 'हम आपकी आँखों में'; तड़प — 'अभी ना जाओ छोड़कर', 'याद किया दिल ने', 'हम बेखुदी में तुमको', साथ — 'तेरे मेरे सपने', 'नैन सो नैन'; शिकायत — 'अपनी तो हर आह इक तूफ़ान है, या दर्द और रेचन — 'रसिक बलमा', 'वक़्त ने किया', 'मन रे तू काहे न धीर धरे', 'तेरे बिना ज़िंदगी से कोई शिकवा तो नहीं' — यह सूची अंतहीन है। यहाँ तक कि मुखर दैहिक अभिव्यक्ति ने भी फ़िल्मी गीतों के पारदर्शी पर्दे के पीछे से स्वर पाया है — 'छू लेने दो नाजुक होठों को', 'चंदन सा बदन', 'चौदहवीं का चाँद हो'।

गीतों में जो इतनी सुंदरता से कहा गया, उसे पर्दे पर नहीं दिखाया जा सकता था और न ही संवादों में सीधे-सीधे शामिल किया जा सकता था। यह या तो अपमानजनक प्रतीत होता या हास्यास्पद। रुचियों का ध्यान रखा जाना ज़रूरी था और सामाजिक आचरण के नियम, जिनके अंतर्गत स्त्री-पुरुष संबंध का संचालन होता था, उनका सम्मान किया जाना भी आवश्यक था।

अतः, इस प्रकार की भावनाओं के प्रदर्शन का दायित्व, काफ़ी हद तक गीतों ने निभाया। प्रेम और आवेश व्यक्त करने के वे सर्वश्रेष्ठ माध्यम थे, विशेषकर एक ऐसे समाज में, जिसमें हाल ही तक, पर्दे पर खुलापन दिखाना निषिद्ध था। शायद यही कारण है कि पहले के हमारे गीत, तड़प और अत्यधिक करुणा की अधिक कहते थे।

यह बात मुझे पूर्व के दशकों और वर्तमान समय की रूमानी नैतिकता के विषय में विचार करने की ओर ले जाती है।

मैं देखता हूँ कि एक मुख्य पहलू, जिसका निश्चित रूप से पतन हुआ है, वह है प्रेमी की पूजा करने का भाव। 'प्रेम जोगन बन के', 'एक बुत बनाऊँगा' या 'तुम्हीं मेरी पूजा, तुम्हीं देवता हो' जैसे गीत अब नहीं बनते। प्रेम में श्रद्धा और समर्पण का प्रदर्शन अब कम हो गया है। यह समाज में आए बदलाव का सूचक है। पहले शारीरिक और सामाजिक दूरियाँ, प्रेम को एक भव्य आभा प्रदान करने में महती भूमिका निभाती थीं। यह अक्सर गीतात्मक अतिशयोक्ति का कारण बनता था।

आज प्रेम से जुड़ी दमन, वर्जनाएँ और सामाजिक नियन्त्रण काफ़ी हद तक कम हैं और इसलिए इससे जुड़ा रहस्य भी। प्रेम का अलौकिक, अप्राप्य और इसी कारण पूजनीय अंश अब लुप्त होता जा रहा है। अब प्रतीकों के माध्यम से बात कम ही होती है, रूपक भी कम हो चले हैं।

वस्तुतः प्रेम का रूप बदल गया है। कुछ लोग इस बदलाव के अनेक कारण बताएँगे, जिनमें शामिल हैं हमारे जीवन की आपाधापी, समाज की बदलती नैतिकता, रिश्तों की अस्थिरता, कहानियों की तेज़ गति, गीतों के लिए सीमित स्थान आदि।

पर मेरा दृष्टिकोण थोड़ा अलग है. मैं कहूँगा कि प्रेम को एक नया चित्रण, एक नया रंग मिल गया है. स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव आया है, यह विकसित हुआ है. सामाजिक टकराव भी अपेक्षाकृत कम हैं, स्त्री-पुरुष समीकरण भी बदल गए हैं. आज की नारी को त्याग की मूर्ति कहलाए जाने की कोई अभिलाषा नहीं — जो सदैव बलिदान करती है, कदम-कदम पर कष्ट सहती है. उसका आत्म-विश्वास कहता है कि वह एक मनुष्य है, उसकी अपनी कमियाँ हैं, अपनी शक्तियाँ हैं, और वह चाहती है कि उसे उसी तरह स्वीकार किया जाए. धीरे-धीरे समाज भी इस नई नारी को पहचान दे रहा है, सम्मान दे रहा है.

प्रेम की सीमाएँ विस्तृत हो रही हैं और इन्हें होना ही होगा. कभी न कभी, इसकी अभिव्यक्ति को समलिंगी प्रेम पर भी दृष्टि डालनी होगी, जो अभी अनैच्छिक स्वीकृति तक ही सीमित है. अभी इसकी अभिव्यक्ति मज़ाकिया ढंग से की जाती है या फिर बनावटी असम्मान द्वारा. इस प्रवृत्ति को बदलना होगा.

प्रेम एक कोमल भाव है. यह हमें ऊपर उठाता है और भावनाओं की गहराइयों में गहरे डुबोता भी है. गीत, जो प्रेम को उसकी पूरी खूबसूरती और जटिलताओं के साथ बयान करते हैं, जो मासूमियत की खुशबू और तीव्र जुनून लिए होते हैं, वे कभी लुप्त नहीं होंगे. पर आज, पहले से कहीं अधिक, प्रेम में यथार्थवाद नज़र आता है. अब सिर्फ प्रेम की चाहत नहीं है, बल्कि प्रेम-संबंध की भी चाहत है, साथ ही एक गहरी समझ की, प्रेम के विभिन्न रंगों का अनुभव करने की, प्रेम में होने की भावना से प्रेम करने से ज़्यादा, उस वास्तविक व्यक्ति से प्रेम करने की चाहत है — रहना तू है जैसा तू, थोड़ा सा दर्द तू, थोड़ा सुकूँ.

एक और महत्वपूर्ण बात जो आज के ज़माने के गीतों में देखी जा सकती है, वह है भाषा के प्रयोग में बदलाव. मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि मेरे गीतों में 'जिगर', 'जानेमन' जैसे आम तौर पर प्रयोग किए जाने शब्द क्यों नहीं होते. मैं यह सायास नहीं करता. सच तो यह है कि व्यक्ति उसी भाषा का प्रयोग करता है, जो उसके लिए स्वाभाविक और सहज हो. कुछ पीढ़ियों पहले, यह एक प्रचलित धारणा थी कि प्रेम गीत उर्दू में ही सबसे अच्छे लिखे जाते हैं. पर भरत व्यास और शैलेंद्र ने हिन्दी के सुंदर प्रयोग से इस धारणा को बदल दिया. नीरज ने सुमधुर और मंदिर 'फूलों के रंग से' लिखा, जिसमें 'पाती' जैसे शब्द थे.

आजकल, हिन्दी फ़िल्मी गीतों में 'हिंग्लिश' का बड़ा चलन है. अंग्रेज़ी पद हमारे गानों में बहुतायत से मिल जाएँगे और मुझे भी इन्हें शामिल करने के लिए कहा जाता है, गीतों को आज के ज़माने का पुट देने के लिए.

यह समझा जाना आवश्यक है कि अंग्रेज़ी का बिना सोचे-समझे प्रयोग करना, आधुनिकता नहीं. विचार आधुनिक होना आवश्यक है. 'पाठशाला' जैसे पुरातन शब्द के प्रयोग ने 'मस्ती की पाठशाला' को युवाओं का पसंदीदा गीत बना दिया, क्योंकि इसने बड़े रोचक तरीके से देशज भाषा की विरासत को उनकी तेज़ी से आधुनिक और पाश्चात्य होती जीवनशैली के साथ-साथ रख दिया था.

मेरे विचार से किसी भी भाषा को फलने-फूलने के लिए, नए प्रभावों के लिए अपने द्वार खोलने ही होंगे, उन्हें जगह देनी होगी. भाषा में गतिशीलता होनी चाहिए, एक प्रवाह, बहाव, संचलन. इसे एक निरंतर बहती नदी की तरह होना चाहिए, 'भाषा अड़ गई, तो सड़ गई'.

आज, समाज के सभी तबकों में, अंग्रेज़ी शब्द रोज़मर्रा की बातचीत में प्रयोग किए जाते हैं.

कला को समाज में हो रहे बदलावों को दर्शाना होता है. निःसंदेह, बहुत कुछ इस बात पर भी निर्भर है कि अंग्रेज़ी शब्दों का समावेश किस तरह किया जाता है. यदि यह केवल प्रभाव पैदा करने के लिए किया गया हो तो बेतुका लगेगा, मगर यदि इसे समझदारी से और दिलचस्प तरीके से किया जाए, तो यह एक अनूठा 'कनेक्ट' हासिल कर पाएगा.

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि एक खूबसूरत गीत के घटक क्या होते हैं? पहले क्या आता है, धुन या शब्द? मेरे अनुसार, एक भावपूर्ण गीत वह है जिसमें यह भेद कर पाना असंभव है, जिसमें संगीत और शब्दों के बीच कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं है, वह तो बस एक खूबसूरत योग है. और मैं यही भेद-रहित गुणवत्ता प्राप्त करने का प्रयास करता हूँ. साथ ही यह प्रयास करता हूँ कि प्रकट के प्रलोभन का शिकार न बन जाऊँ. लेखन या कोई भी अन्य कला रूप, जो संदेश को अत्यंत ही स्पष्ट कर दे, उसमें आलस्य निहित होता है. रचनात्मकता और शिल्प के मायने हैं कि प्रभाव दिखाई दे, न कि इसके पीछे का प्रयास.

किसी विशिष्ट स्थिति का चित्रण करना और उसका भावार्थ अचूक रूप से सामने लाना, यह दायित्व अक्सर गीतकारों को सौंपा जाता है. पर इसे एक 'टिपिंग पॉइंट', एक 'ट्रिगर' की तरह इस्तेमाल करना और स्थिति की तात्कालिकता के परे जाकर, एक गहरा, एक विशाल अर्थ हासिल करना, यह कार्य एक सिद्धहस्त व्यक्ति का ही हो सकता है. स्थिति के रूप में देखें तो जेल में दिन काट रही औरत, 'सलाखों के पीछे... कहीं तोड़ रही है उम्मीद दम' जैसे गीत के लिए आदर्श है. पर एक गीत, जैसे 'अब के बरस भेज भैया को बाबुल' ने ऐसा मर्मस्पर्शी वातावरण उत्पन्न कर दिया कि इस गीत ने न सिर्फ़ फ़िल्म के भाग के रूप में भाव-विह्वल कर दिया, बल्कि फ़िल्म के परे भी एक पहचान हासिल की.

मेरे लिए एक और बात मायने रखती है — वह विशेष गुण, साभिप्राय या स्वाभाविक, जिससे दर्शक और श्रोता, गीत से व्यक्तिगत रूप से जुड़ जाते हैं. आखिर, 'कौन रोता है किसी के दुख में, हर किसी को अपना ग़म याद आया'. गीत के अंदर, सुनने वाले के लिए एक स्थान होना चाहिए, जहाँ वह स्वयं को रख सके और उस गीत से एक हो सके. गीत में एक खोज की गुंजाइश रहनी चाहिए, ताकि कोई व्यक्ति उससे घनिष्ठ रूप से जुड़ सके और उससे अपना एक व्यक्तिगत अर्थ निकाल सके.

फ़िल्मों के लिए बोल लिखना रस्सी पर चलने की कवायद होती है — आप अस्पष्ट और बहुत अधिक प्रतीकात्मक नहीं हो सकते, जैसी कविताओं में स्वतंत्रता रहती है, पर उसी समय आप रहस्यात्मकता और सुंदरता से भी समझौता नहीं कर सकते. सही संतुलन स्थापित करना अत्यावश्यक है.

इसलिए एक गीतकार के तौर पर मीटर, जटिल कविता योजनाओं और काव्यात्मक बिंबों का ध्यान रखना आवश्यक है, फिर भी भाषा स्पष्ट होनी चाहिए. रोज़मर्रा की बातों या साधारण वस्तुओं को लेकर भी एक अचम्भे का भाव निर्मित करने की क्षमता होनी चाहिए. उससे भी महत्वपूर्ण, यह सब बिना मिथ्याभिमान और बिना काव्य को अकारण दुर्गम और समझने में कठिन बनाए किया जाना चाहिए.

यह मुझे पुनः एक सच्चे संगीत प्रेमी की विशेषता पर लाता है. एक श्रोता की ज़िम्मेदारी भी कम महत्वपूर्ण नहीं. जिस कार्य की हम सराहना करते हैं, जिसको याद रखते हैं, अपने हृदय में जगह देते हैं, वह दर्शाता है कि एक व्यक्ति और समाज के रूप में हमारे मूल्य क्या हैं. जाने-

पहचाने की तलाश, एक निश्चित प्रकार के संगीत की ही चाहत, ये मूलतः रचनात्मकता के डीएनए के विरुद्ध है। सच्चे संगीत प्रेमी बारीकियों की सराहना करते हैं, और उस कार्य का आदर करते हैं, जो गीत लेखन को एक कला की तरह स्वीकार करता है, न कि मात्र तीन मिनट के तड़कते-फड़कते मनोरंजन की तरह। उच्च गुणवत्तापूर्ण कार्य की ज़िम्मेदारी जितनी रचनाकारों की है, उतनी ही श्रोताओं की भी।

खूबसूरत गीत, हवा के झोंके की तरह होता है, जिसमें मौसम की खुशबू घुली होती है। हवा के दूर चले जाने पर भी खुशबू वहीं रहती है। सृजन करने वाला व्यक्ति, एक कोमल सी रचना श्रोताओं के हाथों में सौंपता है, इसके बदले श्रोताओं को एक मधुर धुन और भावपूर्ण लेखन के प्रति संवेदनशील होने का प्रयास करना चाहिए।

तभी हम उत्कृष्ट और समयातीत गीतों का सृजन कर पाएँगे। गीत, जो भारतीय सिनेमा के गौरवशाली इतिहास में स्थान पा सकेंगे और सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण, सुनने वालों की ज़िंदगी को छू सकेंगे, उसका हिस्सा बन सकेंगे।

इतना सब कहने के बाद, मैं स्वीकार करना चाहूँगा कि ऊपर कही गई सभी बातें, लिखते समय मेरी चेतना में अधिक नहीं रहतीं। जब मैं लिखता हूँ, तो बस लिखता हूँ। सफ़ेद कोरा कागज़ मुझे आवाज़ देता है और अपनी कलम की अँगुली पकड़कर, मैं विचारों और अनुभूतियों की एक अद्भुत दुनिया में सहज ही जा पहुँचता हूँ।

इस दुनिया का एक हिस्सा, इस पुस्तक के माध्यम से मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। यह विचार मेरे मन में तब आया, जब कुछ मित्रों ने कहा कि वे मेरे द्वारा लिखे गए गीतों को बेहतर ढंग से समझना चाहते हैं। शायद इसलिए क्योंकि कभी-कभी संगीत और वाद्य व्यवस्था, शब्दों को ढक देती है या शायद इसलिए कि आज के जीवन की गति कुछ ऐसी है कि अनेक गीतों के बोल, शुरुआती पंक्तियों के बाद लोगों की स्मृति में अपना स्थान नहीं बनाए रख पाते।

सतही रूप से पसंद आने वाले गीत लिखना मेरा ध्येय कभी नहीं रहा है। मैं बहुत सोच-विचारकर, वे ही प्रोजेक्ट्स चुनता हूँ, जिनमें मुझे काव्य की गुंजाइश नज़र आती है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि श्रेष्ठ कार्य को अपनाने वाले और प्रेम करने वाले लोग अवश्य मिलेंगे। तभी मेरा प्रयास रहता है गाने को एक विचार प्रदान कर सकूँ, उसे शुरू से लेकर अंत तक तराश सकूँ, आकार दे सकूँ। फ़िल्मी गीतों के माध्यम से कविताओं को जीवित रखने का, यह मेरा एक विनम्र तरीका है।

मैं अपने मित्रों और शुभचिंतकों का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस संग्रह में अपने गीत और विचार संकलित करने हेतु बाध्य किया। वे लेखक, निर्देशक, संगीत निदेशक और गायक-गायिकाएँ, जिन्होंने अपनी फ़िल्मों में मेरी कविताओं के लिए स्थान बनाया। डॉ. आशा नगाइच, जिन्होंने अपने बहुमूल्य सुझावों से इस प्रयास को सँवारा, मेरे प्रकाशक, जिन्होंने बड़े धैर्य के साथ मेरा कार्य से समय निकालने का इंतज़ार किया, और मेरी पत्नी अपर्णा, जिनके सहयोग और निश्चय के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती।

संस्मरणों का हिन्दी अनुवाद के लिए पवन अग्रवाल 'एकांत' और आरीश नांदेडकर को धन्यवाद।

तो प्रस्तुत है, कुछ ऐसे गीतों का संग्रह जिन्हें लिखने में मुझे बहुत आनंद आया। इनमें से कुछ गीत आपने सुने होंगे और कुछ शायद नहीं, पर मैं आपको इनसे अवश्य मिलवाना चाहूँगा।

शायद, लिखे हुए शब्दों में, भावनाओं की लड़ियाँ आसानी से हाथ आ सकेंगी.

इस संग्रह में कुछ किस्से भी हैं — मेरे विचार और अनुभव, जो इन गीतों को लिखने के दौरान रहे — इन्हें मैं आपसे साझा कर रहा हूँ. मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ते समय आप भी उनसे एक जुड़ाव महसूस कर सकेंगे, जो हमारे आपसी रिश्ते को और भी प्रगाढ़ बनाएगा. आखिर, एक रचनात्मक कार्य तभी संपूर्ण माना जाता है, जब वह किसी के हृदय को छुए, किसी के जीवन में गूँजे.

प्रसून

फिर मिलेंगे

खुल के मुस्कुरा ले तू

खुल के मुस्कुरा ले तू
दर्द को शर्मने दे
बूँदों को धरती पर
साज़ एक बजाने दे
हवाएँ कह रही हैं
आजा झूलें ज़रा
गगन के गाल को चल
जा के छू लें ज़रा

झील एक आदत है
तुझमें ही तो रहती है
और नदी शरारत है
तेरे संग बहती है
उतार ग़म के मोज़े
ज़मीं को गुनगुनाने दे
कंकरोँ को तलवों में
गुदगुदी मचाने दे

बाँसुरी की खिड़कियों पर
सुर ये क्यों ठिठकते हैं
आँख के समन्दर क्यों
बेवजह छलकते हैं

तितलियाँ ये कहती हैं
अब बसंत आने दे
जंगलों के मौसम को
बस्तियों में छाने दे

हवाएँ कह रही हैं
आजा झूलें ज़रा
गगन के गाल को चल
जा के छू लें ज़रा

खुल के मुस्कुरा ले तू
दर्द को शर्मने दे
बूँदों को धरती पर
साज़ एक बजाने दे

गीत-यात्रा

रेवती (निर्देशिका) ने मुझे दृश्य समझाया. एक युवा, सफल, कलाप्रेमी लड़की, जिसकी उम्र २८ वर्ष है, उसे अभी-अभी पता चला है कि वह एचआईवी पॉज़िटिव है. उसकी दुनिया भरभरा कर बिखर जाती है. यह एक विचलित कर देने वाली भावना थी, और मैंने इसे कागज़ पर उतारने के लिए कलम उठाई.

मेरे लिए, यह गीत उस पल के दर्द को समेटता है, पर साथ ही उम्मीद और उजालों की भी कहता है. दुख और दर्द तो प्रकट हैं, पर मैं उन्हें उम्मीद के समक्ष बौना दिखाना चाहता था. यह ऐसा नहीं था कि कोई निराशा के अँधेरों में हो और उसे बलपूर्वक या ज़बरदस्ती सूरज की रोशनी के सामने खड़ा कर दिया जाए. यहाँ भाव था, हौले से मनाने का. यह कहने का कि देखो वह झरोखे से आती सूरज की किरणें कितनी सुंदर दिखती हैं न? यह वैसे ही था कि आप दर्द से गुज़र रहे व्यक्ति के गले में हाथ डालकर, धीरे से, पूरी संवेदनशीलता के साथ, उन छोटी-छोटी पर बेहद खूबसूरत बातों की ओर उसका ध्यान ले चलें, जिन्हें देखकर उसके मन में उम्मीद को गले लगाने की चाह जागे.

फिर इस प्रश्न पर गहन चर्चा हुई — यह गीत कौन गा सकता है? अंत में, बॉम्बे जयश्री को

चुना गया.

इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही कहूँगा कि उनके साथ काम करने का यह मेरा एकमात्र मौका रहा है. उनकी आवाज़ में वाकई जादू है.

पूर्व में, मैंने उनके 'ज़रा-ज़रा महकता है' जैसे कुछ गीत सुने थे, और मुझे कल्पना नहीं थी वे शास्त्रीय संगीत में इतनी पारंगतता दर्शाएँगी. उनके पास एक प्रशिक्षित आवाज़ है और उन्होंने शंकर-एहसान-लॉय द्वारा संगीतबद्ध किए गए सबसे अच्छे गीतों में से एक को गाया है.

जब किसी गीत के तीनों अंग — धुन, शब्द और आवाज़ एक लय में आते हैं, एक साथ धड़कते हैं, तो जादू उत्पन्न होता है, बिल्कुल यही अनुभव हमें इस गीत की रचना के दौरान हुआ.

जीने के इशारे मिल गए

कुछ खुशबुएँ
यादों के जंगल से बह चलीं
कुछ खिड़कियाँ
लम्हों की दस्तक पे खुल गईं
कुछ गीत पुराने
रखे थे सिरहाने
कुछ सुर कहीं खोए थे
बंदिश मिल गई
जीने के इशारे मिल गए
बिछड़े थे किनारे मिल गए

मेरी ज़िन्दगी में तेरी बारिश
क्या हुई
मेरे रास्ते दरिया बने
बहने लगे
मेरी करवटों को तूने आ के
क्या छुआ
कई ख़्वाब नींदों की गली
रहने लगे
जीने के इशारे मिल गए
बिछड़े थे किनारे मिल गए

मेरी लौ हवाओं से झगड़कर
जी उठी
मेरे हर अँधेरे को उजाले

पी गए
तूने हँस के मुझसे
मुस्कुराने को कहा
मेरे मन के मौसम गुलमोहर
से हो गए
जीने के इशारे मिल गए

बिछड़े थे किनारे मिल गए

कुछ खुशबुएँ, साँसों से
साँसों में घुल गई
कुछ खिड़कियाँ, आँखों ही
आँखों में खुल गई
कुछ प्यास अधूरी, कुछ
शाम सिंदूरी
कुछ रेशमी गुनाहों में
रातें ढल गई

जीने के इशारे मिल गए
बिछड़े थे किनारे मिल गए

गीत-यात्रा

मुझे बहुत अच्छे से याद है:

स्थान था, ताज लैंड्स एंड मुंबई का कॉफी शॉप. मैं शंकर महादेवन का इंतज़ार कर रहा था. हम 'फिर मिलेंगे' के संगीत के विषय में चर्चा करने वाले थे.

इंतज़ार करते हुए मैंने पाँच पंक्तियाँ कागज़ पर उतारीं... 'कुछ खुशबुएँ, यादों के जंगल से बह चलीं...बिछड़े थे किनारे मिल गए.'

जब मैं चौथी पंक्ति लिख चुका था, तभी शंकर आए. उन्होंने मुझे लिखते हुए देख लिया था. शंकर ने मेरे हाथों से कागज़ ले लिया, उन पंक्तियों को पढ़ा और वहीं के वहीं उन्हें संगीत में ढालना शुरू कर दिया. शब्द और संगीत साथ आए और एक-दूसरे में कुछ यूँ समाए, जैसे कोई अलौकिक गठबंधन हो.

हमने कोई और चर्चा नहीं की और सीधे फ़िल्म की निर्देशिका, रेवती से मिलने गए. उन्हें गीत का मूल भाव पसंद आया और फिर मैंने इसे आगे आकार दिया. रेवती के विचारों में बहुत गहराई है, वे अत्यंत संवेदनशील हैं. मैं उनके साथ भविष्य में भी फ़िल्में करना चाहूँगा.

'जीने के इशारे' मेरे प्रिय गीतों में से एक है. मुक्त, किसी नदी की तरह सहज, स्वच्छंद बहता हुआ, हर प्रकार के खालीपन को भरता हुआ. यह गीत उन दुर्लभ अवसरों में से एक है जब आप

अनुमान नहीं लगा सकते कि गीत पहले लिखा गया था या संगीतबद्ध किया गया था, दोनों इतने एकरूप हो जाते हैं.

शंकर के साथ काम करने का अपना आनंद है. हम दोनों अपने-अपने शिल्पों को जीते हैं, उनमें गर्व का अनुभव करते हैं. कठिन पद या मीटर, शंकर के लिए बाएँ हाथ का खेल है. 'मेरे रास्ते दरिया बने, बहने लगे' यह पद मेरे लिए इस पूरे प्रोजेक्ट को परिभाषित करता है, जो गीत दर गीत, और भी अधिक संगीतमय, और भी अधिक काव्यमय होता चला गया. 'फिर मिलेंगे' एक ऐसा कार्य रहा, जिससे मेरे मन को बहुत संतुष्टि मिली.

खुशियों की कोशिश में

खुशियों की कोशिश में हर दिन
दर्द झमेला है
बातों को टिम-टिम करने दो
घुप्प अँधेरा है

यहाँ से आगे सीधे जाओ
बार्यी तरफ़ जो रास्ता है
वहीं नहाकर धूप है बैठी
वहाँ पे मौसम हँसता है
बैठा है एक ख़्वाब वहीं पे
बड़ा अकेला है
खुशियों की कोशिश में हर दिन
दर्द झमेला है
बातों को टिम-टिम करने दो
घुप्प अँधेरा है

पानी वाली इन आँखों को
गीत भी गाना होता है
होंठ अगर ज़िद्दी हों तो
मुस्कान को आना होता है
खेल पुराना है ये
हमने कितना खेला है
खुशियों की कोशिश में हर दिन
दर्द झमेला है
बातों को टिम-टिम करने दो
घुप्प अँधेरा है

आओ चल कर उसे छुड़ा लें
साँस जो गिरवी रखी थी
याद करें वो कच्ची इमली
बचपन में जो चखी थी
ग़म की जुड़वाँ बहन खुशी है

जीवन मेला है
खुशियों की कोशिश में हर दिन
दर्द झमेला है
बातों को टिम-टिम करने दो
घुप्प अँधेरा है

चलो पहाड़े दोहराते हैं
ये पहाड़ सा जीवन है
रट लेंगे हम तुझे ज़िन्दगी
उँगली पर हर पलछिन है
अपने आगे चट्टानी सा
जीवन ढेला है
खुशियों की कोशिश में हर दिन
दर्द झमेला है
बातों को टिम-टिम करने दो
घुप्प अँधेरा है

नींद के गालों पे चुटकी लो
मीठी गाली देती है
दुख के पल में बात प्यार की
मन को लाली देती है
देखो पीछे आँगन में
एक नया सवेरा है
खुशियों की कोशिश में हर दिन
दर्द झमेला है
बातों को टिम-टिम करने दो
घुप्प अँधेरा है

गीत-यात्रा

मैं पुनः स्वीकार करता हूँ कि 'फिर मिलेंगे' मेरे प्रिय एलबमों में से एक है। इस एलबम के गीतों पर मुझे गर्व है। मैंने देखा है कि जब निर्देशक मेरे कार्य में कम से कम हस्तक्षेप करते हैं, मेरा काम खिल उठता है।

रेवती हिंदी भाषा की उतनी अच्छी जानकार नहीं हैं, पर उनकी समझ और संवेदनशीलता 0बेमिसाल है। उनके साथ काम करने का मेरा अनुभव कुछ उसी प्रकार रहा, जैसा रहमान और मेरा रहता है। रेवती और रहमान, दोनों मेरे विचारों की दिशा को समझते हैं, और यदि मैं कोई विशिष्ट राह अपनाना चाहूँ, तो उन्हें मुझ पर इतना विश्वास रहता है कि वे मुझे इसकी आज़ादी दें। जब फिल्म निर्देशक, कवियों को खोज करने की, प्रयोग करने की कलात्मक स्वतंत्रता देते हैं, तो इससे अद्भुत बात और कोई नहीं होती।

'घुप्प अंधेरा', 'ये पहाड़ सा जीवन है, चलो पहाड़े दोहराते हैं', 'गम की जुड़वाँ बहन खुशी है' सामान्य से कुछ अलग पद हैं और किसी का हस्तक्षेप, इनकी नाज़ुक बारीकियों और संकेतों को नष्ट कर देता।

यह एक सकारात्मक गीत है, पर उपदेश नहीं देता। उम्मीद और जीवन की अच्छाइयों पर इसका अपना ही एक विश्वास है। उम्मीद एक आह्वान है, एक आवाज़ है, जो हम सबके हृदय की गहराइयों में बसती है। मैंने अक्सर अंत्येष्टियों में होने वाली गतिविधियों को गौर से देखा है। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि अंत्येष्टियाँ, मृत्यु की अंतिमता के विषय में होती हैं। इसके विपरीत, मुझे लगता है, ये निरंतरता और उम्मीद के बारे में अधिक कहती हैं। ऐसे समय में लोगों की देह-भाषा को देखिएगा। वे स्वयं को छोटे-छोटे कार्यों में व्यस्त कर लेते हैं। वे शोकाकुल हैं, अपने किसी प्रिय व्यक्ति के चले जाने से व्यथित, पर वे उम्मीद से खाली नहीं हैं। उनके क्रिया-कलाप यंत्रवत लग सकते हैं, पर यह जीवन की उम्मीद की मौन ऊर्जा ही तो है, जो उन्हें गतिमान रखती है। हम इंसानों में एक अद्भुत प्रवृत्ति होती है — विपत्तियों का सामना करना, पर उम्मीद का हाथ कभी न छोड़ना। दुख एक ओढ़ा हुआ व्यवहार है, यह अस्थायी है। आपकी आत्मा आपको प्रेरणा देती है, कि उठो, आगे बढ़ो, जीवन नामक उत्सव में सहभागी हो जाओ।

कुछ पल

कुछ पल पलकों में पलते हैं
कुछ पल आँखों में जलते हैं
टूटा सा ख्वाब लेकर
दूर जाते हुए
कुछ पल करवट बदलते हैं

लफ़्ज़ों में खुद को छुपाएँ
पहेली से
या संग-संग मुस्कुराएँ
सहेली से
कुछ पल साँसों को खलते हैं

रिश्तों के रास्तों पर
झिलमिलाते हैं
नैनों की कश्तियों में
डूब जाते हैं
कुछ पल सूरज से ढलते हैं

ये पल तो हैं मुसाफ़िर
चलते जाएँगे
धीरे-धीरे, लम्हा-लम्हा
भूल जाएँगे
अपनी धुन में टहलते हैं

गीत-यात्रा

प्रसिद्ध संगीत निर्देशक इलैयाराजा की सुपुत्री, भवथी राजा ने इस गीत को संगीतबद्ध किया। यह एक सुंदर और सरल गीत है, यह उन क्षणों के कोमल अस्तित्व की बात करता है, जिनकी यादें लंबे समय तक आपके साथ रहती हैं। इस गीत का अहसास बिल्कुल अलग था और मैंने इसके शब्द, संगीत रचे जाने के बाद लिखे। रेवती मुम्बई आई थीं, और एक छोटी सी बैठक के बाद, पुनः चेन्नई चली गई। गीत के बोल, मैंने उन्हें ई-मेल किए। इसके बाद मैं उनसे संपर्क नहीं कर पाया और मान बैठा कि उन्हें बोल अच्छे नहीं लगे। मैं गीत के बोलों पर पुनः विचार कर, उन्हें नए सिरे से लिखने लगा।

एक दिन अचानक रेवती ने फ़ोन किया और कहा कि उन्हें और भवती दोनों को यह गीत बहुत पसंद आया। दुर्भाग्य से मैं भवती से मिल नहीं पाया और यह गीत टेक्नोलॉजी के माध्यम से ही अस्तित्व में आया। इस गीत पर हमारा अधिकतर संवाद ई-मेल के माध्यम से ही हुआ।

कुछ दिनों पूर्व मैं एक कार्यक्रम में गायिका श्रेया घोषाल से मिला। हम उन अनेक गीतों के बारे में चर्चा कर रहे थे, जो उन्होंने मेरी अनुपस्थिति में रिकॉर्ड किए। कितनी ही बार मैंने उन्हें प्रत्यक्ष की अपेक्षा, फ़ोन पर ही गीत के विषय में समझाया है। ईमानदारी से कहूँ तो टेक्नोलॉजी, रचनात्मक आवेगों पर कार्य करने का एक अस्पष्ट सा माध्यम है। एक ओर टेक्नोलॉजी ज़िंदगी को आसान बनाती है — आप अपनी व्यक्तिगत सुविधा के अनुसार गीत रिकॉर्ड कर सकते हैं, गायक के लिए ट्रैक तैयार रहते हैं कि वह आए और युगल गीत का अपना हिस्सा गा दे, और भी अनेक ऐसी बातें। पर दूसरी ओर — गीत की रचना के दौरान बनने वाले अनेक यादगार किस्से खो जाते हैं।

मुझे तो साथ काम करने के पुराने तरीके में अधिक रस आता है। गीतकार, संगीतकार, गायक, गायिकाएँ, मिलकर गीत की रचना कर रहे हैं, पुनर्रचना कर रहे हैं, एक दूसरे को समझ रहे हैं, संवाद कर रहे हैं, एक दूसरे से जुड़ रहे हैं। यह अनेक मधुर स्मृतियों को जन्म देता है और गीत को एक अलग ही आत्मा प्रदान करता है। एक विशेष, सामूहिक ऊर्जा, शब्दों के उस ढाँचे को जीवंत कर देती है, जिसे हम गीत कहते हैं।

रंग दे बसंती

रूबरू

अभी-अभी हुआ यकीं
कि आग है मुझमें कहीं
हुई सुबह मैं जल गया
सूरज को मैं निगल गया
रूबरू रोशनी

जो गुमशुदा सा ख्वाब था
वो मिल गया, वो खिल गया
वो लोहा था पिघल गया
खिंचा-खिंचा मचल गया
सितार में बदल गया
रूबरू रोशनी

धुआँ छँटा, खुला गगन मेरा
नई डगर, नया सफ़र मेरा
जो बन सके तू हमसफ़र मेरा
नज़र मिला ज़रा

आँधियों से झगड़ रही है
लौ मेरी
अब मशालों सी बढ़ रही है
लौ मेरी

नामोनिशाँ रहे न रहे
ये कारवाँ रहे न रहे
उजाले मैं पी गया
रोशन हुआ जी गया
क्यों सहते रहें?
रूबरू रोशनी

धुआँ छँटा, खुला गगन मेरा
नई डगर, नया सफ़र मेरा
जो बन सके तू हमसफ़र मेरा
नज़र मिला ज़रा

रूबरू रोशनी

गीत यात्रा

‘रूबरू’ मेरे अंदर की आवाज़ की प्रतिध्वनि है। यह स्वयं की खोज और साक्षात्कार का गीत है। कदाचित, यह हर उस व्यक्ति की भावना को अभिव्यक्त करता है, जिसे अपनी प्रतिभा पर विश्वास है, पर फिर भी शंका के क्षण यदा-कदा उसे घेर लेते हैं। आत्मनिरीक्षण और आत्मसुझाव द्वारा, वह पुनः अपने विश्वास को प्राप्त करता है।

यह राकेश (निर्देशक) के विश्वास को भी अभिव्यक्त करता है। वे अक्सर इन पंक्तियों का उल्लेख करते हैं। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि यह हमारी फिल्म से हैं, बल्कि इसलिए, क्योंकि एक तरह से, यह उनका सत्य भी है। यह आमिर का सत्य भी है, जो अपने विश्वास की खातिर हर चुनौती के सामने डटे रहे हैं। यह रहमान का सत्य भी है, जिन्होंने लोकप्रिय संगीत को पुनः परिभाषित किया।

यही कारण है कि हम सभी, इस गीत से एक गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं।

इस गीत के मैंने दो संस्करण लिखे। पहला तो मुझे याद नहीं — उसका ड्राफ्ट संभवतः प्रोडक्शन हाउस के पास रखा हुआ है।

एक बड़ी रोचक बात यह कि हमें बाद में समझ आया, ‘क्यूँ सहते रहें’ इस पंक्ति ने अपना घर बदल लिया था। यह पद, पहले संस्करण में था और यदि आप ध्यानपूर्वक देखें तो दूसरे में उतना उपयुक्त नहीं है। हम इसे रिकॉर्डिंग में से हटा सकते थे क्योंकि मैं इस हल्की सी विसंगति

को देख पा रहा था. पर मेरा मानना है कि हर गीत की अपनी एक पहचान होती है, अपनी साँसें, अपनी नियति होती है. उस गीत ने स्वयं इस पंक्ति को चुना था, और मैं उसके कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था.

मुझे याद है अटल बिहारी वाजपेयी, जो उस समय के प्रधानमंत्री थे, एक विशेष रूप से आयोजित स्क्रीनिंग में यह फ़िल्म देखकर बाहर आए और उन्होंने मुझे सीने से लगा लिया. 'सूरज को मैं निगल गया', उन्होंने यह पंक्ति दोहराई. इसने उनके अंदर के कवि को छू लिया था.

आज भी, जब मैं विद्यालयों, महाविद्यालयों या प्रबंध संस्थानों में जाता हूँ को और छात्रों को यह गीत गाते देखता हूँ, तो इस गीत पर उनका प्रेमपूर्ण अधिकार-भाव, मुझे आनंद से भर देता है.

स्वयं के ऊपर विश्वास को अपने दृढ़ निश्चय की ऊर्जा से पुनः प्रज्वलित करना, दर्द से भरपूर होता है — पर यह दर्द उठाए जाने के क़ाबिल है.

मस्ती की पाठशाला

लूज़ कंट्रोल!
ना कोई पढ़ने वाला
ना कोई सीखने वाला
अपनी तो पाठशाला
मस्ती की पाठशाला

चेहरे की किताबें हैं
हम वो पढ़ने आते हैं
ये सूरत तेरी-मेरी
मोबाइल लाइब्रेरी

यारों की इक्वेशन है
लव मल्टीप्लिकेशन है
जिसने दिल को जीता है
वो अल्फ़ा है, थीटा है

ना कोई पढ़ने वाला
ना कोई सीखने वाला

टल्ली होकर गिरने से
समझी हमने गैविटी
इश्क़ का प्रैक्टिकल किया
तब आई क्लेरिटी

नाटा ये सन्नाटा है
देखो लम्बू शोर है
हर दिल में बुड़-बुड़ करता
 H_2SO_4 है

ना कोई पढ़ने वाला

ना कोई सीखने वाला
अपनी तो पाठशाला
मस्ती की पाठशाला

गीत यात्रा

‘मस्ती की पाठशाला’ रंग दे बसंती के लिए लिखा गया मेरा पहला गीत था.

इस गीत में, अधिकतर सोच-विचार ‘पाठशाला’ शब्द को लेकर हुआ था.

मत बँटे हुए थे. हम में से आधों को लग रहा था कि यह शब्द पुराना था, प्रचलन में नहीं था, लोग इसे समझ नहीं पाएँगे, या इससे स्वयं को जोड़ नहीं सकेंगे. इसके अलावा यह शब्द, एक अत्यंत आधुनिक संगीत संरचना के बिल्कुल विपरीत था — यह कैसे चल पाएगा?

पर मुझे लग रहा था कि इसमें कुछ अलग बात थी, जो निश्चित ही अपना काम कर जाएगी. यह प्रयोग करने का मेरा अपना विशिष्ट तरीका था. कुछ लोग गीत की ओर ध्यान खींचने के लिए चौंकाने वाले शब्द या भाषा का प्रयोग करते हैं या उसे एक उग्र स्वरूप दे देते हैं. मेरे लिए प्रयोग के मायने, कभी भी ये नहीं रहे. मेरे लिए लिखना और गीत की रचना करना, एक कला है और इसका अनादर नहीं किया जा सकता.

‘पाठशाला’ एक सामान्य से अलग शब्द था पर मुझे विश्वास था कि यह सुनने वालों को अवश्य पसंद आएगा, इसलिए मैं इस शब्द पर कायम रहा.

अपने शिल्प पर अटूट निष्ठा और विश्वास रखना चाहिए. यकीन मानिए, यह संक्रामक होता है. इसके साथ ही, अपने शिल्प को निरंतर निखारते रहना भी आवश्यक है. एक बार आप ऐसा करने लगेंगे, तो स्वयं पर विश्वास और महत्त्वपूर्ण अवसरों पर खरे उतरने की क्षमता, आपका स्वभाव बन जाएगी.

आसमान में ऊँची उड़ान भरती चील, ज़मीन पर स्थित अपने शिकार पर पैनी नज़र रखती है और झपटकर उसे पकड़ लेती है. अक्सर ऐसा करके वह शिकार को पुनः ज़मीन पर छोड़ देती है. चील ऐसा केवल अपनी कुशलता को धार देने के लिए करती है ताकि जब वह वास्तव में भूखी हो तो इतनी ही सरलता से नीचे शिकार पर झपट सके. वह अपने कौशल का अभ्यास करती है.

‘झपटना, पलटना, पलट कर झपटना/लहू गरम रखने का है एक बहाना’, अल्लामा इकबाल की कविता ‘शाहीन’ की ये पंक्तियाँ, इसी विचार को प्रकट करती हैं. मेरे लिए, अपने शिल्प को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है.

श्रोताओं में लोकप्रिय होने से पहले, ‘पाठशाला’ यूनिट के सदस्यों और फ़िल्म से जुड़े लोगों

की ज़बान पर चढ़ चुका था. 'टल्ली होकर गिरने से समझी हमने ग्रैविटी', एक और पंक्ति थी जो विशेष रूप से युवाओं को बहुत पसंद आई.

मुझसे इस गीत में अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग के विषय में भी पूछा जाता है. यदि आप ध्यानपूर्वक देखें, तो इसमें हमारे स्कूल-कॉलेज के पाठ्यक्रमों के कुछ आम शब्दों का ही प्रयोग किया गया है.

यह एक विडम्बना ही है, क्योंकि कई लोगों का सोचना था कि लेखन और काव्य के अनुसरण में मैंने भौतिकी और व्यवसाय प्रबंधन में प्राप्त अपनी शिक्षा को व्यर्थ कर दिया. मेरा मानना है कि किसी भी प्रकार की शिक्षा कभी व्यर्थ नहीं जाती. शैक्षणिक पृष्ठभूमि और वह परिवेश, जिसमें व्यक्ति बड़ा होता है, मिलकर उसके व्यक्तित्व को एक ऐसी बुनावट देते हैं, जिससे उसके काम में एक विशिष्टता आती है.

मैं आपको 'नाटा यह सन्नाटा है देखो लम्बू शोर है/हर दिल में बुड़-बुड़ करता H_2SO_4 है' इस पंक्ति के विषय में भी बताना चाहूँगा. आम तौर पर हमारी फिल्मों में एसिड के लिए तेज़ाब शब्द का प्रयोग किया जाता है, पर मैंने H_2SO_4 का प्रयोग किया और यह काफ़ी पसंद किया गया. यह बिल्कुल सटीक था. मेरे लिए यह बहुत स्वाभाविक भी था, क्योंकि श्रीमान विज्ञान से मेरी पुरानी पहचान जो थी.

यह एक मस्ती भरा गीत था, जो अत्यंत लोकप्रिय हुआ.

खलबली

खलबली है खलबली
खलबली है खलबली
खलबली है खलबली
है खलबली

शोला शोला बल खाए
दरिया दरिया लहराए
ज़र्र ज़र्र थर्राए
है खलबली

खलबली है खलबली
खलबली है खलबली
खलबली है खलबली
है खलबली

होने होने दे नशा
खोने खोने को है क्या
इक साँस में पी जा
ज़रा ज़िन्दगी चढ़ा
है ये तो एक जशन
तू थिरकने दे क़दम
अभी साँसों में है दम
अभी चलने दे सितम

आँखों में है खलबली
धड़कनों में खलबली
मौसमों में खलबली
है खलबली

कैसी ये तब्दीली है
शी! शी! बोतल पी ली है

रात नीली नीली है
है खलबली

हम लपट के साए हैं
हम सुलगने आए हैं
घर बता के आए हैं
है खलबली

ज़िद्दी, ज़िद्दी, ज़िद्दी, ज़िद्दी
ये जुबों
ज़िद्दी, ज़िद्दी, ज़िद्दी, ज़िद्दी अरमाँ
ज़िद्दी है तुफ़ाँ
ज़िद्दी हम भी यहाँ

गीत यात्रा

इस गीत की संगीत रचना में कुछ अरबी और मध्य पूर्वी ओवरटोन थे (आ ला ले लि लि लि लि) और मैं एक ऐसे शब्द की तलाश में था जो स्थिति की आवश्यकता और संगीत रचना के बीच एक सेतु का काम कर सके.

मेरे मन में 'खलबली' शब्द आया, जो आम धारणा के विपरीत, एक उर्दू नहीं हिंदी शब्द है, और हिंदी फ़िल्मों के गीतों में विरले ही प्रयोग किया जाता है.

यह धुन के अरबी मिज़ाज़ और फ़िल्म के बेचैनी के माहौल के अनुकूल था. जब मैंने 'खलबली' के साथ पंक्तियाँ सुनाई, तो रहमान और राकेश दोनों के चेहरों पर मुस्कान तैर गई.

मेरे लिए शब्द, भावना और संवेदना से भरा एक कैप्सूल है. यदि आप इसे फोड़ें तो यह आपके समक्ष एक संसार प्रस्तुत कर देता है. खलबली शब्द ने मेरे लिए यही किया. पूरा गीत मानो एकदम सामने आ गया, पंक्तियाँ और उपमाएँ किसी झरने की तरह फूट पड़ीं, मेरे राइटिंग पैड पर अक्षरों की एक पूरी सेना क़दमताल करने लगी, और मुझे बस उन्हें व्यवस्थित रूप से जमाना था. कितना आसान!

लेकिन अभी जहाँ पर पंक्ति है — 'ज़िद्दी ज़िद्दी है अरमान', उस स्थान के लिए लिखे गए शब्दों से मैं संतुष्ट नहीं था.

इसकी जगह कोई और पंक्ति थी जो मुझे कुछ चुभ सी रही थी. संगीत निर्देशक भी मुझसे बार-बार कुछ और लिखने के लिए कह रहे थे. पर सही शब्द और सही भाव, दोनों ही मुझसे रूठे हुए थे.

शेष गीत पर रहमान के साथ पूरी रात काम करने के बाद, मैं मुंबई की फ्लाइट पकड़ने के लिए निकला. मुझे याद है, मैं कार में ही था जब रहमान का फिर से फ़ोन आया, पूछने के लिए 'क्या आपने कुछ और सोचा?'

कुछ झल्लाकर मैंने कहा 'आप उसे वैसा ही क्यों नहीं रहने देते, ज़िंदी ज़िंदी रहमान'. रहमान बोल पड़े, 'ज़िंदी! यही तो वह शब्द है जो मैं ढूँढ रहा था!'

इसलिए मैंने पंक्ति लिखी 'ज़िंदी ज़िंदी है अरमान'.

एक और अंश जो मुझे पसंद है वह है 'शी! शी! बोतल पी ली है'. 'शीशी' और पीली' शब्दों के यहाँ दो-दो अर्थ हैं. शी! शी!' ध्वनि या निर्देश की तरह और शीशी यानी एक छोटी बोतल.

बाद वाले भाव को स्पष्ट करने के लिए, मैंने अगली पंक्ति में 'पी ली है' शब्दों का प्रयोग किया. अब इसके भी दो अर्थ निकाले जा सकते हैं, 'पीना' (पी ली) और 'पीला रंग'. (पीली)

एक लेखक, अक्सर भाषा के साथ इस प्रकार के प्रयोग करता रहता है. यह अपने शिल्प के प्रति उसका प्रेम है — उसके साथ खेलने, लाड़-दुलार करने का एक भाग. अपने काम की बारीकी लोगों की नज़रों में आए, ऐसी उसकी कोई अपेक्षा नहीं रहती.

पर मुझे तब आश्चर्य मिश्रित खुशी का अनुभव हुआ, जब एक युवा, जो मुझसे कुछ साल पहले जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में मिला था, उसने कहा कि यह अंश उसे बहुत ही कमाल का लगा. उसने इन शब्दों के पीछे झाँक कर देख लिया था.

उसने इन पंक्तियों के विषय में भी बात की-

हम लपट के साए हैं

हम सुलगने आए हैं

घर बता के आए हैं

इन पंक्तियों के पीछे उद्देश्य था कि रोज़मर्रा की बातचीत के भाग — मैंने घर पर बता दिया है कि मुझे देर हो जाएगी — को एक प्रबल भाव में बदला जाए. फ़िल्म में युवा लड़के इसका बलिदान के आशय में प्रयोग करते हैं. 'हम जानते हैं हम किस छोर तक जा सकते हैं और जाएँगे — यहाँ तक कि अपने प्राण भी न्यौछावर कर देंगे. हो सकता है कि हम लौट कर नहीं आएँ. घर के लोग भी इस सच्चाई को जानते हैं'. यह इसका सूक्ष्म आशय था जो उसे समझ में आ सका.

अपनी कला के ऐसे गुणग्राहकों से मिलना, एक लेखक या कवि को आत्मिक संतुष्टि देता है.

ललकार

है लिए हथियार दुश्मन
ताक में बैठा उधर
और हम तैयार हैं
सीना लिए अपना इधर
खून से खेलेंगे होली
गर वतन मुश्किल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है

हाथ जिनमें हो जुनूँ
कटते नहीं तलवार से
सर जो उठ जाते हैं वो
झुकते नहीं ललकार से
और भड़केगा जो शोला सा हमारे
दिल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है

हम तो घर से निकले ही थे
बाँधकर सर पे कफ़न
जाँ हथेली पर लिए लो
बढ़ चले हैं ये क़दम
ज़िन्दगी तो अपनी मेहमाँ
मौत की महफ़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है

दिल में तूफ़ानों की टोली
और नसों में इंक़लाब
होश दुश्मन के उड़ा देंगे
हमें रोको न आज
दूर रह पाए जो हमसे

दम कहाँ मंज़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है

गीत यात्रा

यह गीत वास्तव में मेरे लिए एक चुनौती था. इसलिए मैंने इसे नाम दिया 'ललकार'.

मुझे एक महान व ऐतिहासिक कविता को पुनः लिखने का दायित्व सौंपा गया था. एक कविता, जो अपने आप में अद्भुत रचना है और इसके अतिरिक्त, हमारे इतिहास के अविस्मरणीय अध्याय का भाग भी.

यह हमारी सामूहिक चेतना का अंश है — रामप्रसाद बिस्मिल की 'सरफ़रोशी की तमन्ना'.

मुझे 'सरफ़रोशी की तमन्ना' शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने प्रोजेक्ट के लिए गीत को पूरी तरह नया लिखना था. मैं भली-भाँति जानता था कि मेरे संस्करण को मूल संस्करण के विरुद्ध परखा जाएगा. सिर्फ़ काव्य के आधार पर ही नहीं, महत्त्व के आधार पर भी मेरे संस्करण की तुलना बिस्मिल के संस्करण से की जाएगी, यह बात अपने आप में बहुत चुनौतीपूर्ण थी.

बिस्मिल की कविता में दर्द का सत्य था, उस काल में सुलग रही क्रांति का सत्य था. उस प्रकार का जुनून मेरे लिए संभव नहीं था. देश के स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा होने का अनुभव मेरे पास नहीं था. पर मुझे उसकी कल्पना कर, कविता को पुनः लिखना था.

मुझे स्वीकार करना होगा कि मेरे मन में घबराहट थी. मैं भाषा को बुन सकता हूँ, दिल को छू जाने वाली कविता रच सकता हूँ, पर क्या मैं राम प्रसाद बिस्मिल की भावना की तीव्रता की बराबरी कर सकता हूँ? यह एक दुष्कर कार्य था.

मेरे लिए 'स्वतः का सत्य' कविता की आत्मा है. यदि सत्य का अभाव हो, तो एक कविता खोखले शब्दों के अलावा कुछ नहीं.

साहस एकत्रित कर, मैंने इस गौरवशाली कविता को पुनः लिखने का प्रयास किया. मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि यह कविता, हमारे महान क्रांतिकारियों को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि है.

भाव में इतने पावन और उद्देश्य में इतने सच्चे विचार को मैं अपना कुछ अर्पण कर सका, मेरे लिए यही बहुत सम्मान की बात है.

रंग दे बसंती

थोड़ी सी धूल मेरी धरती की
मेरे वतन की
थोड़ी सी खुशबू
बौराई सी मस्त पवन की
थोड़ी सी धौंकनी वाली
धक-धक, धक-धक, धक-धक साँसें
जिनमें हो जुनूँ-जुनूँ
वो बूँदें लाल लहू की

ये सब तू मिला-मिला ले
फिर रंग तू खिला-खिला ले
और मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे तू रंग दे बसंती

सपने रंग दे, अपने रंग दे
खुशियाँ रंग दे
ग़म भी रंग दे
नस्लें रंग दे, फसलें रंग दे
रंग दे धड़कन, रंग दे सरगम
रंग दे सूरत, रंग दे दर्पण

और मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे तू रंग दे बसंती

धीमी आँच पे तू
ज़रा इश्क़ चढ़ा
थोड़े झरने ला, थोड़ी नदी मिला
थोड़े सागर ला, थोड़ी गागर ला
थोड़ा छिड़क-छिड़क
थोड़ा हिला हिला
फिर एक रंग तू खिला खिला

मोहे मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे तू रंग दे बसंती

बस्ती रंग दे, हस्ती रंग दे
हँस हँस रंग दे, नस नस रंग दे
बचपन रंग दे, जोबन रंग दे
अब देर न कर, सचमुच रंग दे
रंगरेज़ मेरे सब कुछ रंग दे

मोहे, मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे तू रंग दे बसंती

गीत यात्रा

शीर्षक गीत सदैव विशिष्ट होते हैं. ये अपने अंदर पूरी फ़िल्म का सार समेटे होते हैं. इन्हें लिखना आसान काम नहीं

इस शीर्षक गीत में 'रंग दे बसंती' को शामिल किया जाना था और मैं गीत के लिए उपयुक्त विचार हेतु संघर्ष कर रहा था. यह एक ऐसी समस्या है जिसका सामना, गीतकार चिरकाल से करते आ रहे हैं — फ़िल्म के शीर्षक को गीत में शामिल करना और फिर उसके साथ न्याय करना.

मेरी चिंताएँ बढ़ा रहा था, पुरानी फ़िल्म शहीद का ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध गीत 'मेरा रंग दे बसंती चोला'. जब भी मैं अपना गीत लिखने बैठता, यह मेरे दिमाग में गूँजने लगता.

जितना मैं इसे रोकने का प्रयास करता, उतना ही यह तीव्र होते चला जाता. इतना ही नहीं, फ़िल्म के अभिनेता मनोज कुमार का चेहरा भी हर समय मेरी आँखों के सामने आता रहता.

पर एक सुबह, चाँद टैरेस स्थित मेरे घर के सबसे छोटे कमरे में, मेरा संघर्ष रंग लाया. रात को देर तक लिखने का प्रयास करते हुए, मेरी आँख लग गई थी, पुराना गीत तब भी मेरे दिमाग में गूँज ही रहा था.

तड़के मेरी आँख खुली, पूरा घर गहरी नींद में था. मनोज कुमार ने भी मुझे अकेला छोड़ दिया था. उस गहन शांति में एक विचार का उदय हुआ. कविता में एक विधि बताई जाए तो कैसा रहेगा? बसंती रंग बनाने की विधि. और मैं अपने विचार तेज़ी से कागज़ पर उतारने लगा.

यदि आप गीत के बोल ध्यान से पढ़ें, तो आपको यह स्पष्ट होगा — 'थोड़ी सी लाल मिर्च लीजिए', यह गीत किसी विधि की तरह ही लिखा गया है. मुझे शुरुआत मिली — 'थोड़ी सी धूल मेरी धरती की मेरे वतन की', मैंने इसे और आगे बढ़ाया 'धीमी आँच पे तू ज़रा इश्क़ चढ़ा, थोड़ा छिड़क छिड़क थोड़ा हिला हिला'.

इस गीत को लिखना एक अद्भुत अनुभव रहा पर मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था कि इस पर प्रतिक्रिया कैसी रहेगी. निर्देशक और संगीत रचनाकार को यह अत्यंत पसंद आया. हमने इस गीत के लिए अनेक गायकों को आजमाया, दलेर मेहंदी को भी बुलाया गया था.

दलेर, रहमान के स्टूडियो में काम करने के समय से वाकिफ़ नहीं थे. (पूरी रात). वे शाम को आए और देर तक इंतज़ार करने के बाद, सोफे पर ही सो गए. आधी रात के भी बहुत बाद, जब ट्रैक तैयार हुआ, उन्हें हड़बड़ी में उठाया गया और मुँह धोने के लिए भेजा गया.

मैं आश्चर्य नहीं था कि दलेर गाने की स्थिति में हैं अथवा नहीं. पर उन्होंने अपनी प्रस्तुति से हम सबको चकित कर दिया. एक टेक और बिल्कुल सही निशाने पर. एक धौंकनी शब्द को छोड़कर, उन्होंने शेष गीत बहुत जल्दी याद कर लिया. धौंकनी संज्ञा है क्रिया नहीं. यह वह यन्त्र है जिसकी सहायता से लोहार, लोहे की वस्तुएँ बनाता है.

यह लोहार के कार्य का आधार है. धौंकनी की आग में लोहे को चमकदार लाल, नारंगी, पीले, और सफ़ेद रंगों में तपाया जाता है. इन्हीं उच्च तापमानों पर लोहे को मोड़ने योग्य बनाया जा सकता है, आसानी से आकार दिया जा सकता है, उसका स्वरूप बदला जा सकता है.

इसका अर्थ सटीक है और ध्वनि लाजवाब. दलेर ने इसके साथ पूरा न्याय किया. उन्होंने इस गीत को इतने उत्साह और इतनी ऊर्जा के साथ गाया कि इसने लोगों को जोश से भर दिया और सिनेमागृहों में अनेक लोगों को नाचने पर मजबूर कर दिया. देश के प्रति भाव और अपने प्रेम को दर्शाते इस गीत को लिखने का अनुभव बहुत विशेष था.

तू बिन बताए

तू बिन बताए मुझे ले चल कहीं
जहाँ तू मुस्कुराए
मेरी मंज़िल वहीं
मीठी लगी, चख के देखी अभी
मिश्री की डली, ज़िन्दगी हो चली
जहाँ हैं तेरी बाँहें
मेरा साहिल वहीं

तू बिन बताए मुझे ले चल कहीं
जहाँ तू मुस्कुराए
मेरी मंज़िल वहीं
मन की गली तू फुहारों सी आ
भीग जाए मेरे ख्वाबों का क़ाफ़िला
जिसे तू गुनगुनाए
मेरी धुन है वही

तू बिन बताए मुझे ले चल कहीं
जहाँ तू मुस्कुराए
मेरी मंज़िल वहीं

गीत यात्रा

‘तू बिन बताए’ एक प्रेम गीत है पर यह सैकरीन प्रकार का नहीं. इससे अलग, यह सौम्य और गहरा है. यह ‘प्यार होने’ का गीत नहीं है, बल्कि ‘प्यार में होने’ का गीत है. मैं यहाँ नए प्यार के शुरुआती उल्लास का वर्णन नहीं कर रहा हूँ, पर एक गहरा, दो आत्माओं के एक लय में होने का अहसास दर्शा रहा हूँ. यह गीत रिश्तों में एक रूमानियत, एक सहजता की बात कहता है.

फ़िल्म में यह गीत प्रेमी युगल द्वारा नहीं गाया जाता और न ही यह सिर्फ़ उन पर फिल्माया

गया है. वे दोनों अपने करीबी दोस्तों के एक समूह के साथ हैं, और उनका प्रेम, सुंदर और सहज तरीके से, बस महसूस होता है.

‘तू मुझे ले चल कहीं, कहाँ यह मैं जानना भी नहीं चाहती/चाहता...’ मेरे लिए प्रेम विश्वास का नाम है — एक ऐसा विश्वास, जिसमें शंका का ज़रा सा भी स्थान न हो.

प्रेम में व्यक्ति को संपूर्णता देने की क्षमता होती है और प्रेमी की अनुपस्थिति में भी यह आप पर छाया रहता है — यह बात सदैव मेरे लिए कौतूहल का विषय रही है. आपके प्रेमी की एक छवि आपके साथ ही चलती है, उससे जुड़े होने की अनुभूति होती रहती है, उसकी मौजूदगी का अहसास हमेशा आपके साथ रहता है. उस व्यक्ति का विचार मात्र, आपके पूरे अस्तित्व पर अपना अधिकार कर लेता है. जो लोग प्रेम की अनुभूति कर चुके हैं, वे मानेंगे कि इसमें बिना शक और बिना शर्त वाली बात, सबसे बढ़कर होती है. और यही इस गीत का मुख्य भाव है.

इस गीत में, विश्वास और गहराई की, एक सुंदर समर्पण भाव की गूँज है. यह एक सच्चा, ताज़गी भरा, सुमधुर गीत है.

खून चला

कुछ कर गुज़रने को
खून चला खून चला
आँखों के शीशे में
उतरने को खून चला
बदन से टपककर
ज़मीं से लिपटकर
गलियों से रस्तों से
उभरकर उमड़कर
नए रंग भरने को
खून चला खून चला

खुली सी चोट लेकर
बड़ी सी टीस लेकर
आहिस्ता आहिस्ता
सवालियों की उँगली
जवाबों की मुट्ठी
संग लेकर खून चला
कुछ कर गुज़रने को
खून चला खून चला
आँखों के शीशे में
उतरने को खून चला
बदन से टपककर
ज़मीं से लिपटकर
गलियों से रस्तों से
उभरकर उमड़कर
नए रंग भरने को
खून चला खून चला

गीत यात्रा

इस गीत में दर्द और निश्चय, दोनों की बराबर मात्रा में आवश्यकता थी. गीत की रचना के बाद, इसके गायक को लेकर हमने बहुत लंबा व गहन विचार-विमर्श किया. हमें लगा कि भले ही यह गीत प्रबल और कुछ खुरदुरापन लिए है, पर इसके लिए एक विद्रोही किस्म की आवाज़ की आवश्यकता नहीं.

एक सौम्य आवाज़, अपनी विषमता के कारण, दर्द और निश्चय को संभवतः बेहतर ढंग से अभिव्यक्त कर सकेगी. हमें मोहित चौहान का खयाल आया. मोहित, जो आज एक प्रसिद्ध पार्श्वगायक हैं, उस समय उनकी पहचान सिल्क रूट बैंड के प्रमुख गायक के रूप में थी. मोहित और मैंने, बहुत समय पहले 'बूंदें' और 'पहचान' नामक दो म्यूज़िक एलबम साथ किए थे. हम दोनों एक दूसरे को बहुत अच्छे से जानते थे. थोड़ा और विचार, और मोहित का नाम निश्चित किया गया.

इस गीत ने और इसके दृढ़ बोलों ने, सब पर गहरा प्रभाव डाला.

जब मैंने पहली पंक्ति, 'खून चला', लिखी तो मुझे ऐसा लगा कि शायद मैं खून के गाढ़ेपन के साथ अन्याय कर रहा हूँ. एक विद्रोही का रक्त इतना पनीला नहीं हो सकता कि बस यूँ ही बह जाए. फिर मैंने लिखा, 'ले गाढ़ी उम्मीदें, तलवों के नीचे जमने को, खून चला'. मुझे संतुष्टि हुई कि अंततः मैं एक विद्रोही की रक्तधारा के साथ न्याय कर पाया, जो कोई साधारण रक्त नहीं हुआ करता.

दुर्भाग्य से, ये पंक्तियाँ गीत में स्थान न पा सकीं. ये समय-समय पर मुझे याद आती हैं, और मुझे विचलित कर देती हैं. प्रिय रक्त, एक दिन मैं तुम्हें तुम्हारा उचित सम्मान अवश्य दिलवाऊंगा.

'रूबरू', 'ललकार' और 'खून चला' जैसे गीत मेरे अंदर से, स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होते हैं. मैं छोटे शहरों में रहा हूँ और वहाँ के सीमित आकाश के कारण मैंने अनेक समस्याओं का सामना किया है. अपने भीतर की शक्ति का उपयोग कर और चुनौतियों का सामना कर, मैंने उनसे पार पाना सीखा है. मेरे लिए संघर्ष, शाश्वत है, फिर चाहे वह प्रकृति की विषमताओं के विरुद्ध हो, या समाज के विरुद्ध, दूसरों के विरुद्ध या अपने ही विरुद्ध. मैं संघर्ष का गुणगान नहीं करता न ही इसे रूमानी चश्मे से देखता या दिखाता हूँ. मेरे लिए यह, जीवन का अंग है.

लुक्का-छुप्पी

लुक्का-छुप्पी बहुत हुई
सामने आ जा ना
कहाँ-कहाँ ढूँढा तुझे
थक गई है अब तेरी माँ
आ जा साँझ हुई, मुझे तेरी फ़िकर
धुंधला गई देख मेरी नज़र
आ जा ना

क्या बताऊँ माँ
कहाँ हूँ मैं
यहाँ उड़ने को मेरे
खुला आसमाँ है
तेरे क्रिस्सों जैसा भोला, सलोना
जहाँ है यहाँ सपनों वाला
मेरी पतंग, हो बेफ़िकर
उड़ रही है माँ
डोर कोई लूटे नहीं
बीच से काटे ना

आ जा साँझ हुई, मुझे तेरी फ़िकर
धुंधला गई देख मेरी नज़र
आ जा ना

तेरी राह तके अँखियाँ
जाने कैसा-कैसा होए जिया

धीरे-धीरे आँगन
उतरे अँधेरा
मेरा दीप कहाँ
ढल के सूरज करे इशारा
चंदा तू है कहाँ

मेरे चंदा तू है कहाँ
लुक्का-छुप्पी बहुत हुई
सामने आ जा ना
कहाँ-कहाँ ढूँढा तुझे
थक गई है अब तेरी माँ

आ जा साँझ हुई, मुझे तेरी फ़िकर
धुंधला गई देख मेरी नज़र
आ जा ना

कैसे तुझको दिखाऊँ
यहाँ है क्या
मैंने झरने से पानी माँ
तोड़ के पिया है
गुच्छा गुच्छा कई ख़्वाबों का
उछल के छुआ है
छाया लिए भली धूप यहाँ है
नया नया सा है रूप यहाँ
यहाँ सब कुछ है माँ फिर भी
लगे बिन तेरे मुझको अकेला

आ जा साँझ हुई, मुझे तेरी फ़िकर
धुंधला गई देख मेरी नज़र
आ जा ना

गीत यात्रा

यह 'रंग दे बसंती' के लिए लिखा गया अंतिम गीत था. इसका विचार हमें फ़िल्म के शुरुआती रशेज़ देखने के बाद आया था.

रहमान ने गीत की बुनियाद रखी और जल्द ही मुखड़े की धुन हम सबके सामने थी. सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो गए थे. मैंने इस धुन को सबसे पहले मुम्बई के एक होटल के कमरे में सुना था, जहाँ रहमान ठहरे हुए थे. यह धुन उसी क्षण मेरे अंतर्मन में बस गई थी, गूँजती रही, और कुछ दिनों बाद एक संपूर्ण विचार के रूप में प्रकट हुई.

दृश्य यह था कि एक माँ ने अपना इकलौता बेटा खो दिया है. उसका युवा बेटा, जो भारतीय वायुसेना में पायलट था, एक मिग विमान दुर्घटना में मारा गया है, और संपूर्ण राजकीय सम्मान के साथ उसका दाह संस्कार किया जा रहा है. उसकी चिता जल रही है और उसकी माँ का दुख, हृदय को द्रवित कर देने वाला है.

मेरे मन में जो विचार आया वह था — लुका छुपी. एक माँ और उसके नन्हे बेटे के बीच लुका छुपी का खेल. यहाँ अंतर बस इतना था कि बेटा सदा के लिए छुप गया है.

मैंने उस विचार की अँगुली थामी और वह मुझे अपने साथ ले चला. यह माँ और बेटे के बीच एक वार्तालाप बन गया. मुझे बच्चे के छुपने की जगह का वर्णन करना था, जब वह अपनी माँ को उस जगह के बारे में बताने का प्रयास करता है.

बच्चा अब इस दुनिया में नहीं है. वह एक जानी-पहचानी जगह पर नहीं हो सकता. मैं उपयुक्त छवि सोचने का प्रयास कर रहा था और सोचते-सोचते एक काल्पनिक विश्व में जा पहुँचा, झरने से पानी तोड़ कर पीने का एक दृश्य मेरे मन में आया. सामान्यतः पानी को तोड़ कर कोई नहीं पीता पर यह बच्चा एक अलग दुनिया में था...मैं विचारों की इस दिशा में आगे बढ़ने लगा और लिखने लगा.

और फिर आई लताजी. उन्हें पूरे मनोयोग के साथ अपना कार्य करते देखना, एक अत्यंत प्रेरक अनुभव था. वे एक महान कलाकार हैं, पर प्रत्येक गीत के प्रति उनका उत्साह और समर्पण किसी नवोदित कलाकार की तरह होता है. उन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से दो दिन निकाले और पूरे गाने को स्मृतिबद्ध किया, और फिर ही वे स्टूडियो में आई.

जल्द ही, यह गीत सजीव हो उठा.

मधुर संगीत, मर्मस्पर्शी विचार और अद्भुत आवाज़ के मेल ने इसे दिल की गहराइयों में गूँजने वाला एक गीत बना दिया.

क्यों

बादलों की ओट में

बादलों की ओट में
चाँद छुपा क्यों
हौले से वो लेता
अँगड़ाइयाँ है क्यों
मुखड़े पे लिखी, लिखी है उलझन
जानता है आसमाँ
वो तन्हा है क्यों
बादलों की ओट में
चाँद छुपा क्यों

खिले-खिले चेहरे हैं
सूने से नयन
द्वार पे रंगोली है
खाली-खाली मन
चलना अकेले है जो सबको यहाँ
चलें साथ-साथ
परछाइयाँ भी क्यों
बादलों की ओट में
चाँद छुपा क्यों

चूरा चूरा है अँधेरा
हवा सन-न-नन

हाथ हाथ ढूँढे हाथ
हाथ की छुअन
दूर दूर दिल और पास है भरम

हँसते-हँसते लगता है
क्यों हँसे थे हम
जी में आता है रो रो सुजा लें
आँखें हम
रेत के वो पाँव जाने कहाँ
खो गए
रूठी-रूठी हुई पुरवाइयाँ
है क्यों

बादलों की ओट में
चाँद छुपा क्यों
हौले से वो लेता
अँगड़ाइयाँ है क्यों
मुखड़े पे लिखी, लिखी है उलझन
जानता है आसमाँ
वो तन्हा है क्यों
बादलों की ओट में
चाँद छुपा क्यों

गीत यात्रा

मैंने फ़िल्म 'क्यों' एक बहुत विशेष कारण से की — डॉ. भूपेन हज़ारिका. उन्होंने लोक संगीत को नए आयाम दिए हैं और उनकी प्रतिभा के प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान रहा है.

यह विषाद का गीत है, भूपेनदा की अपनी विशिष्ट शैली की रचना. इस गीत के माध्यम से मेरा उनसे परिचय हुआ. उनके साथ कार्य करने को मैं विशुद्ध आनंद का नाम दूँगा. उनसे मिलकर मुझे महसूस हुआ कि ऐसे महान संगीतकार जो कवि भी हैं, उनके साथ कार्य करना

कितना मूल्यवान होता है.

मैं विभिन्न आशयों का प्रयोग कर सकता था और जानता था कि वे इसकी कद्र करेंगे.

‘ओट’, ‘चूरा-चूरा है अँधेरा’, जैसे शब्दों का प्रयोग इसलिए संभव हो सका क्योंकि दादा को काव्य की समझ थी, उससे प्रेम था. ‘रेत के पाँव जाने कहाँ खो गए’, यह पंक्ति सुनकर उन्होंने इसे साल्वाडोर डालीनुमा चित्र करार दिया.

मेरे जैसे एक युवा, अपेक्षाकृत अनजान और नए गीतकार के साथ कार्य करने के उनके उत्साह ने मुझे सबसे अधिक अचंभित किया. कुछ ही सृजनात्मक लोग ऐसे होते हैं — विशाल हृदय और प्रोत्साहन देने वाले.

फ़िल्म नहीं चली. पर इस गीत को और भूपेन दा की स्मृतियों को मैं आजीवन सहेजकर रखूँगा.

ब्लैक

हाँ, मैंने छूकर देखा है

मौसम की अदला-बदली में
पवन गुलाबी हो जाती है
हाँ, मैंने छूकर देखा है

रात सरक कर चलते-चलते
बिल्कुल आधी हो जाती है
हाँ, मैंने छूकर देखा है

मौसम की अदला-बदली में
गरम गुनगुनी धूप से
बातें की हैं मैंने
पानी के बहने में
हँसी सुनी है मैंने
सब कहते हैं दीप बुझा है
लेकिन बाती सो जाती है
हाँ, मैंने छूकर देखा है
मौसम की अदला-बदली में

बिन दस्तक के आए जो
वो प्यार सुना है
बिन बोले मन खोले
वो अधिकार सुना है

लम्हों की उँगली थामे
यादें आँगन में आती हैं
हाँ, मैंने छूकर देखा है
मौसम की अदला-बदली में

ठंडा-ठंडा रंग होता है
इन बूंदों का
और मुलायम रंग होता है
इन फूलों का
चुभने वाले रंग पहनकर
दुल्हन सज-धज के जाती है
हाँ, मैंने छूकर देखा है

गीत यात्रा

बहुत कम लोग जानते हैं कि 'ब्लैक' में एक गीत भी था. यदि मैं आरंभ से ही इस फ़िल्म से जुड़ा होता तो संभवतः यहा गीत फ़िल्म के भीतर स्थान पाता. पर यह गीत उत्तर चिंतन था, बाद में आया हुआ विचार.

जब संजय भंसाली ने मुझसे यह गीत लिखने को कहा तब शूटिंग पूर्ण हो चुकी थी. साथ ही, यह बहुत पहले ही घोषित हो चुका था कि 'ब्लैक' बिना गीतों की फ़िल्म है. अतः यह गीत शीर्षकों में ही स्थान पा सका.

फिर भी, यह एक बहुत विशेष गीत है. फ़िल्म के फुटेज ने मेरे हृदय पर बहुत गहरा प्रभाव डाला. यह प्रभाव इतना प्रबल था कि मैं बीस दिनों तक कलम ही न उठा सका. देखने और सुनने में अक्षम व्यक्ति का जीवन दर्द के पहाड़ के समान होता है. मैं इस अहसास के भार से स्वयं को मुक्त नहीं कर पा रहा था, एक भी शब्द मेरे अंदर से निकलने को तैयार न था.

पर एक दिन, दिल्ली जाने वाली फ्लाइट में बैठे हुए, मेरे मन में एक विचार आया. मुख्य पात्र देख नहीं सकती, सुन या बोल भी नहीं सकती, पर क्या, इस कारण, वह कम या ज़्यादा अनुभव करती होगी? मुझे महसूस हुआ कि वह अलग ढंग से अनुभव करती है. 'हाँ, मैंने छूकर देखा है. ठंडा ठंडा रंग होता है बूंदों का' या 'सब कहते हैं दीप बुझा है लेकिन बाती सो जाती है'. इस गीत में मैंने स्पर्श के विभिन्न पहलुओं को छूने का प्रयास किया.

‘चुभने वाले रंग पहन कर’, के दो अर्थ हैं. एक पद के रूप में यह उग्र, भड़कीले रंगों की ओर इशारा करता है, पर इस लड़की के लिए ये रंग, दृश्य रूप से उग्र या तीखे नहीं हैं. ये वास्तविक रूप से चुभने वाले हैं — तीक्ष्ण किनारों वाले. भारत में विवाह के वस्त्र अक्सर ज़रदोज़ी एम्ब्रॉयडरी, सितारों, काँच के खण्डों से सजे होते हैं, जिनके किनारे अत्यंत तीखे होते हैं, और इसलिए, स्पर्श करने पर चुभने वाले.

जैसे ही फ्लाइट दिल्ली पहुँची, मैंने संजय से यह गीत साझा किया. उन्हें यह गीत बहुत पसंद आया. बाद में, रिकॉर्डिंग के दौरान वे मेरे साथ ही बैठे रहे. इस गीत ने उन्हें बहुत गहरे छुआ था. संजय काव्य के प्रति संवेदनशील हैं. मैं सोचता हूँ कि काश उन्होंने इस गीत को कथा का हिस्सा बनाया होता.

गायत्री ने इस गीत को पूरी अनुभूति के साथ गाया और मोंटी ने इसे खूबसूरती के साथ संगीत से सजाया.

यह एक बहुत कठिन गीत था और निश्चित ही मेरे प्रिय गीतों में से एक.

गजिनी

कैसे मुझे तुम मिल गई

कैसे मुझे तुम मिल गई
किस्मत पे आए ना यक़ीन
उतर आई झील में
जैसे चाँद उतरता है कभी
हौले-हौले धीरे से
गुनगुनी धूप की तरह से
तरन्नुम में तुम
छू के मुझे गुज़री हो यूँ
देखूँ तुम्हें, या मैं सुनूँ
तुम हो सुकूँ, तुम हो जुनूँ
क्यों पहले ना आई तुम

मैं तो ये सोचता था के आजकल
ऊपर वाले को फ़र्सत नहीं
फिर भी तुम्हें बना के वो
मेरी नज़र में चढ़ गया
रुतबे में वो और बढ़ गया

बदले रास्ते झरने और नदी
बदले दीप की टिम-टिम
छेड़े ज़िन्दगी धुन कोई नई
बदले बरखा की रिमझिम

बदलेंगी ऋतुएँ अदा
पर मैं रहूँगी सदा
उसी तरह तेरी बाँहों में बाँहें
डाल के
हर लम्हा, हर पल...

ज़िन्दगी सितार हो गई
रिमझिम मल्हार हो गई
मुझे आता नहीं
किस्मत पे अपनी यक़ीं
मुझको मिली तुम...

गीत यात्रा

यह गीत एक मुख्यधारा की बॉलीवुड एक्शन फ़िल्म के लिए था — इस प्रकार की फ़िल्म के लिए मैं पहली बार लिख रहा था. लेकिन बदले पर आधारित इस फ़िल्म के हृदय में, एक कोमल सी प्रेमकथा थी, और अधिकतर गीत इसी पर केन्द्रित थे.

हालाँकि गजिनी के लिए मैंने और भी कई गीत लिखे थे, जैसे 'बहका' और 'अधूरी प्यास', पर 'कैसे मुझे तुम मिल गई' के अनेक चाहने वालों के आग्रह पर मैंने इसे ही शामिल करने का निर्णय लिया.

वास्तव में, 'बहका' वह गीत था, जिसने मुझे परेशानी में डाल रखा था. धुन रहमान ने बनाई थी और इसका मीटर अत्यंत जटिल था. मुझे याद है, मैं और कार्तिक, इस गीत के पार्श्वगायक, रात को देर-देर तक बैठकर इस गीत की पहेली को हल करने का प्रयास करते. रहमान ने कहा कि बहुत कम लोग इस मीटर पर लिख सकते हैं और आम तौर पर उनके पास इसे बदलने के लिए निवेदनों की झड़ी लग जाती. पर मुझे चुनौतियों में आनंद आता है और इस जटिल ढाँचे के लिए लिखना एक अलग ही अनुभव था. परिश्रम रंग लाया और 'बहका' एक अत्यंत लोकप्रिय गीत सिद्ध हुआ.

जहाँ तक इस गीत का संबंध है, इसमें कोई उच्च काव्यात्मक विचार नहीं है, पर मुझे लगता है इस गीत का आकर्षण इसके सरल और मिलावट रहित भावों में है. यह एक प्रकार का प्रेम-पत्र है.

जब हमें किसी व्यक्ति से प्रेम हो जाता है, वह हमारे लिए सबसे ऊपर, सबसे बढ़कर हो जाता है. और निराली बात यह कि आपको अपनी किस्मत पर यकीन नहीं होता — यह अनपेक्षित सा लगता है, सपने के सच होने जैसा. इस भाव की पराकाष्ठा है, ईश्वर को संबोधित करना और उसे शुक्रिया कहना, यह कहकर कि आपके प्रिय को बनाकर वह और भी बड़ा, और भी महान हो गया है.

ईश्वर के साथ संबंध में जो यह सरलता और सहजता है, वह संभवतः महान सूफी और भक्ति परंपराओं की देन है, जहाँ कवियों ने विशुद्ध प्रेम द्वारा ईश्वर से एकरूपता का मार्ग खोजा है और जहाँ पर प्रेम और भक्ति के बीच की रेखा धुँधली हो जाती है.

इसमें कोई आश्चर्य नहीं था कि यह गीत युवाओं को पसंद आया. यह ताज़गी भरा है, सरल है, और नए-नवेले प्रेम की उमंग को अभिव्यक्त करता है. पर तब मैं अचम्भे में पड़ गया जब एयरपोर्ट पर एक शाम, एक बुजुर्ग दंपति ने मुझसे कहा कि यह गीत उनके हृदय के बहुत निकट है. यह उनके प्रिय गीतों में से एक है. प्रेम, मेरे विचार से, किसी भी सीमा के परे होता है. इसका विस्तार अनंत है, यह समयातीत है.

सिकंदर

धूप के सिक्के

धूप के सिक्के उठाकर
गुनगुनाने दो उसे
बैंगनी कंचे हथेली पर
सजाने दो उसे
भोली-भाली, भोली-भाली रहने दो
ज़िन्दगी को, ज़िन्दगी को, बहने दो
बहने दो

बारूद जब बच्चा था
वो तितली पकड़ता था
वो अंबिया भी चुराता था
पतंगों पर झगड़ता था
अगर तुम उसका माँझा लूटते
वो कुछ नहीं कहता
थोड़ा नाराज़ तो होता मगर
फिर भी वो खुश रहता
मगर धोखे से तुमने उसका
बचपन भी तो लूटा है
ज़रा देखो तो उसकी आँख में
वो कब से रूठा है
जुगनुओं की रोशनी में
दिल लगाने दो उसे

धूप के सिक्के उठाकर
गुनगुनाने दो उसे
बैंगनी कंचे हथेली पर
सजाने दो उसे
भोली-भाली, भोली-भाली रहने दो
ज़िन्दगी को, ज़िन्दगी को, बहने दो
बहने दो

बहुत जल्दी दुपट्टे ओढ़ना सिखला
रहे हैं हम
क्यों ज़िन्दगी को रात से मिलवा रहे
हैं हम
वो पल्लू से चिपक के माँ के
चलती थी तो अच्छी थी
अकेला छोड़कर उसको क्या
कहना चाह रहे हैं हम
एक गहरी नींद से हमको
जगाने दो उसे
धूप के सिक्के उठाकर
गुनगुनाने दो उसे
बैंगनी कंचे हथेली पर
सजाने दो उसे
भोली-भाली, भोली-भाली रहने दो
ज़िन्दगी को, ज़िन्दगी को बहने दो
बहने दो

गीत यात्रा

एक और गीत जो मैंने फ़िल्म की शूटिंग पूर्ण होने के बाद लिखा. मैंने यह फ़िल्म देखी और इसकी विषय-वस्तु पर एक कविता का सुझाव दिया. मुझे महसूस हुआ कि सुधीर मिश्रा (फ़िल्म

के निर्माता) इसके मूल्य को समझ सकेंगे. हम एक दूसरे को अच्छे से जानते हैं और उनका काव्य प्रेम मुझे विदित है.

इस फ़िल्म का विचार बड़ा ही अनूठा था — बचपन और बंदूक. मैंने तथाकथित आतंकवादियों और उनके बचपन के विषय में सोचना शुरू किया और एक विचार मेरे मन में आया — 'बारूद जब बच्चा था, वह तितली पकड़ता था'.

मैं जानता था कि मैं एक बहुत कठिन विषय पर कार्य कर रहा था. एक आतंकवादी से शायद ही किसी को सहानुभूति हो सकती है, पर कविता आपको अनेक बंधनों के परे देखने का अवसर देती है. ऐसे मंचों के लिए मैं लालायित रहता हूँ. इसने मुझे, अपने ही तरीके से, यह व्यक्त करने में सहायता की, कि आर्थिक विकास के साथ-साथ हमारी संवेदनशीलता का भी विकास होना चाहिए. ऐसा नहीं हो सकता कि हम एक ओर ज़्यादा जानकार और समझदार हो जाएँ तथा दूसरी ओर उदासीन, भोलेपन की सुरक्षा में असमर्थ. मेरे विचार से मासूमियत, मानवता का सार है.

'बहुत जल्दी दुपट्टे ओढ़ना सिखला रहे हैं हम', यह उस छोटी लड़की के विषय में है जो फिल्म की प्रमुख पात्र नहीं है, पर मैं स्वयं को यह विचार अभिव्यक्त करने से रोक नहीं सका. एक समाज जो भोलेपन और मासूमियत को सुरक्षा नहीं दे सकता, उसे आत्मविश्लेषण की आवश्यकता है.

सुधीर ने कहा कि इस गीत ने उन्हें निशब्द कर दिया. निर्देशक पीयूष के हृदय को भी इस गीत ने गहरे छुआ. शंकर-एहसान-लॉय ने इस कविता को गीत में ढाला.

हालाँकि, इस प्रकार के गीतों को तब तक उनकी उचित पहचान नहीं मिल पाती जब तक वे मूल कथा का हिस्सा न हों. फिर भी ये गीत, सिनेमा में काव्य का एक अभिन्न हिस्सा होते हैं. मैंने विभिन्न अवसरों पर इस कविता का पाठ किया है और इसे पूरी समझ और संवेदनशीलता के साथ ग्रहण किया गया है.

अधर्म

गाँव की गलियाँ

आँगना आँगना
गाँव की गलियाँ अकेली
ढूँढती होंगी मुझे
नीम की वो छाँव ठंडी
खोजती होगी मुझे
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना
आँखों में ये तिनका नहीं
छलका कोई लम्हा यहाँ

गाँव की गलियाँ अकेली
ढूँढती होंगी मुझे
नीम की वो छाँव ठंडी
खोजती होगी मुझे
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना

भूले झूले याद आए
बीते दिन भी सताएँ
गूँजे किसी की हँसी
कानों में मेरे
कोई तो बताए, कोई ढूँढ लाए
कहाँ है मेरा कारवाँ

मेरी छत के ठीक ऊपर था
मेरा एक आसमाँ
रास्ते भी पहचानते थे मेरे
क्रदमों के निशाँ
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना

अपना कोई तो पुकारे
छूटे मेरे सहारे
लौटा दे मुझको कोई
मेरा आशियाँ
शमा बुझी जाए
यादों में बस है धुआँ

मेरा बस चलता तो झोली भर के
मौसम ले आता
थोड़ी धूप चुरा लाता मैं
गाँव की खुशबू लाता
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना
आँखों में ये तिनका नहीं
छलका कोई लम्हा यहाँ

गाँव की गलियाँ अकेली
ढूँढती होंगी मुझे
नीम की वो छाँव ठंडी
खोजती होगी मुझे
आँगना आँगना
भूले नहीं अपना जहाँ
सौँधी सौँधी माटी
और घर आँगना
आँगना आँगना
आँगना आँगना

गीत यात्रा

मैं निश्चित नहीं हूँ कि यह फ़िल्म सिनेमागृहों तक पहुँची भी अथवा नहीं. यह गीत, मुंबई आ जाने के बाद मेरे लिखे गए आरंभिक गीतों में से एक था. अक्सर लोग शिकायत करते हैं कि निर्माता उन्हें मुक्त होकर लिखने नहीं देते. मेरा अनुभव शुरू से ही आम मत के विपरीत रहा है. मुझे जो भी सही लगा, उसे लिखने की स्वतंत्रता सदैव मिली है.

‘गाँव की गलियाँ अकेली ढूँढती होंगी मुझे’, अपना गाँव, अपना गृहनगर, जिसे आप छोड़कर आए हैं, उसके प्रति आपकी जो ललक है, तड़प है, वही आपको उससे जोड़े रखती है. वे लोग, जिन्होंने एक नई शुरुआत करने के लिए कुछ छोड़ा है, कुछ कुरबान किया है, इसे बखूबी समझ सकते हैं.

मुझे खबर नहीं कि अधर्म के संगीत निर्देशक अब कहाँ हैं, पर जब मैं उन्हें जानता था, वे राजस्थान की मिट्टी की महक लिए हुए थे. अदीप सिंह इस फिल्म के निर्देशक थे और यह गीत नईम अजमेरी और मोहित चौहान ने गाया था.

एक मोहित के अलावा, सबसे संपर्क टूट गया.

यह गीत मुझे उदास कर देता है, मुझे अहसास दिलाता है कि फ़िल्म संसार में जीवन कितना क्षणिक होता है. एक क्षण, एक टीम मिलकर फ़िल्म की योजना बना रही है — नए-नए विचार, संगीत, कविता. और अगले ही क्षण, सब एक दूसरे से अलग हो गए हैं, उनमें से कई कहाँ खो गए, यह भी पता नहीं. यह विचार आपके पैर ज़मीन पर टिकाए रखता है. वहीं, यह इस विश्वास को भी बल देता है कि कभी हार नहीं माननी चाहिए. हमें अपना कर्म तब तक करते रहना होगा, जब तक हमारी प्रतिभा लोगों की नज़रों में नहीं आ जाती. अपनी लौ को प्रज्वलित रखना होगा.

यह गीत उन सभी को समर्पित है, जो इसका भाग थे.

फ़ना

चंदा चमके

चंदा चमके चम चम
चीखे चौकन्ना चोर
चींटी चाटे चीनी
चटोरी चीनीखोर
कितना मुश्किल ये गाना
ज़रा गा के दिखाना
चंदा चीनी चमके चाटे
चौकन्ना चीखे चोर

चंदा चमके चम चम
चीखे चौकन्ना चोर
चींटी चाटे चीनी
चटोरी चीनीखोर

खड़क सिंह के खड़कने से
खड़कती हैं खिड़कियाँ
खिड़कियों के खड़कने से
खड़कता है खड़क सिंह
कितना मुश्किल ये गाना
ज़रा गा के दिखाना
खड़क खड़क के खड़के खिड़की
खड़क सिंह का खड़के ज़ोर

चंदा चमके चम चम
चीखे चौकन्ना चोर
चींटी चाटे चीनी
चटोरी चीनीखोर

पके पेड़ पर पका पपीता
पका पेड़ या पका पपीता
पके पेड़ को पकड़े पिकू
पिकू पकड़े पका पपीता
पके पेड़ पर पका पपीता
पकड़ा पिकी पकी का कपड़ा
कपड़ा हा हा हा...
पके पेड़ पर पका पपीता
पका पेड़ या पका पपीता
पके पेड़ को पकड़े पिकू
पिकू पकड़े पका पपीता

कितना मुश्किल ये गाना
ज़रा गा के दिखाना
पके पेड़ पर पका पपीता
पका पेड़ या पका पपीता
पके पेड़ को पकड़े पिकू
पिकू पकड़े पका पपीता

चंदा चमके चम चम
चीखे चौकन्ना चोर
चींटी चाटे चीनी
चटोरी चीनीखोर
कितना मुश्किल ये गाना
ज़रा गा के दिखाना
चंदा चीनी चमके चाटे
चौकन्ना चीखे चोर
चंदा चमके चम चम
चीखे चौकन्ना चोर

गीत यात्रा

यह गीत, कहानी का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह पिता और बेटे के बीच के रिश्ते का गीत है, जहाँ बच्चे की माँ, अपने जीवनसाथी को एक पिता के तौर पर जान और समझ पाती है — चंचल, शरारती और मस्ती से भरपूर।

यह गीत व्यक्तिगत कारणों से भी बहुत विशेष है — यह मेरे जीवन का वह दौर था जब मैं अपनी एक वर्ष की बेटी को बड़े होते देख रहा था। उसके कारण, मैं बच्चों के प्रति और भी अधिक संवेदनशील हो गया था, उनसे तालमेल बैठाना सीख गया था, पर अपने एक विशिष्ट ढंग से। बच्चों से उनकी ही बोली में या तुतला-तुतलाकर बात करने में मेरा कभी विश्वास नहीं रहा। यह ऐसा लगता है मानो वे हमारे कृपा-पात्र हैं, पूरी तरह अस्वाभाविक। मेरा विचार है कि बच्चों को भी यह सब 'ओले-ओले-गू-गू' बिलकुल नहीं जँचता होगा। बड़ों को बच्चों की नकल करते देखना बड़ा ही हास्यास्पद लगता है। मुझे लगता है कि हमें स्वाभाविक ही बने रहना चाहिए। बच्चों का शब्दकोष सीमित होता है पर उनकी बुद्धि मंद नहीं होती। उनसे बस कुछ वर्ष आगे होना, हमें उनकी बुद्धि का अनादर करने की अनुमति नहीं देता।

बच्चे वस्तुओं को वर्गों में नहीं बाँटते, वे उन्हें बिना किसी छल-कपट के देखते हैं और तुरंत पसंद या नापसंद कर देते हैं। उनका ध्यान आकर्षित करना चुनौतीपूर्ण काम है। उनके लिए संभवतः, कप के अन्दर बजाये जा रहे चम्मच की ध्वनि, पियानो पर बजाए जा रहे सुंदर संगीत से कहीं अधिक मधुर होती है।

इसलिए, जब एक बच्चे पर केन्द्रित गीत लिखना था, तब मैंने अनुप्रास का आश्रय लिया। बचपन में मुझे अनुप्रास अत्यधिक प्रिय था। इसमें मुझे बहुत रस आता था। बचपन में गाए जाने वाले गीत, 'चंदू के चाचा', ने मेरी विचार प्रक्रिया को चाबी देकर चालू किया और फिर खड़क सिंह तो बरसों से मेरा प्रिय रहा है, उसे मैं कैसे जाने देता।

जब मैं बच्चों को यह गीत गाते सुनता हूँ तो मुझे आत्मिक खुशी मिलती है, विशेषकर जब वे इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं कि 'चटोरी' और 'चीनीखोर' का अर्थ क्या है? एक लेखक के तौर पर मुझे बहुत संतोष होता है कि मैं इस प्रकार के सुंदर शब्दों को लोकप्रिय चेतना में वापस ला पाया। इनमें कल्पना का खजाना भरा हुआ है, लयबद्ध ध्वनि है, और किसी बच्चे की ज़बान से तो ये मिश्री जैसे मीठे सुनाई पड़ते हैं।

देखो ना

ये साज़िश है बूंदों की
कोई ख्वाहिश है चुप चुप सी
देखो ना, देखो ना
हवा कुछ हौले-हौले
जुबाँ से क्या कुछ बोले
क्यों दूरी है अब दरमियाँ
देखो ना, देखो ना

फिर ना हवाएँ होंगी इतनी
बेशरम
फिर ना डगमग-डगमग होंगे
ये क़दम
सावन ये सीधा नहीं
खुफ़िया बड़ा
कुछ तो बरसते हुए कह रहा
समझो ना, समझो ना
हवा कुछ हौले-हौले
जुबाँ से क्या कुछ बोले
क्यों दूरी है अब दरमियाँ
देखो ना, देखो ना

जुगनू जैसी चाहत देखो जले-बुझे
मीठी सी मुश्किल है कोई क्या करे
होठों की अज़ीं ऐसे ठुकराओ ना
साँसों की मज़ीं को झुठलाओ ना

छू लो ना, छू लो ना
हवा कुछ हौले-हौले
जुबाँ से क्या कुछ बोले
क्यों दूरी है अब दरमियाँ
देखो ना, देखो ना
देखो ना, देखो ना

गीत यात्रा

‘देखो ना’ एक प्रेम गीत था जो बहुत लोकप्रिय हुआ. पर यहाँ मैं डमी शब्दों को लेकर अपनी निराशा व्यक्त करने से स्वयं को नहीं रोक सकता. कभी-कभार, कुछ साधारण से शब्दों का प्रयोग कर गीत को एक ढाँचा दिया जाता है, ताकि धुन को आगे विकसित किया जा सके. ये शब्द किसी कवि या गीतकार द्वारा लिखे या बताए गए नहीं होते, ये संगीत निर्देशक या उनके सहायकों की उपज होते हैं. इनका व्याकरण की दृष्टि से उचित होना या काव्यात्मक होना, आवश्यक नहीं. बस एक विचार की झलक या शब्द, कभी-कभी तो अर्थहीन पद से भी काम चल जाता है.

यदि ये शब्द इसी उद्देश्य के लिए प्रयोग किए जाएँ तो बहुत अच्छा है, या यूँ कहें कि सहनीय हैं. पर कई बार टीम, इन डमी शब्दों के आगे नहीं देख पाती. दोहराव की शक्ति से, साधारण शब्द भी दिमाग पर अपना अधिकार जमा लेते हैं.

मुख्य गीत में डमी शब्दों के प्रयोग के विरुद्ध एक ही व्यक्ति लड़ता दिखाई देता है — कवि अथवा गीतकार. डमी शब्दों के बदले सच्चे शब्दों को शामिल कराने के लिए उसे बहुत संघर्ष करना पड़ता है. इस गीत में, ‘देखो ना’ डमी शब्द थे. मुझे उनको बनाए रखना था. शुक्र है, मैं शेष डमी पंक्तियों को हटाने में सफल रहा, पर अर्थ को लेकर मुझे अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ी ताकि ‘देखो ना’ अलग-थलग न दिखाई दे.

इस गीत में उत्तेजना है, इसमें प्रकृति दो प्रेमियों को मिलाने की साज़िश कर रही है. हवा, बूंदें, जुगनू, सभी की चाहत है कि दोनों प्रेमी इस क्षण को भरपूरजिएँ. आज भी जब बारिश, मुम्बई के दरवाज़े पर दस्तक दे रही होती है, तो किसी न किसी रेडियो स्टेशन पर यह गीत, दिलों को प्रेम से सराबोर कर रहा होता है.

हम तुम

लड़की क्यों

लड़की क्यों, न जाने क्यों
लड़कों सी नहीं होती

सोचती है ज़्यादा
कम वो समझती है
दिल कुछ कहता है
कुछ और ही करती है
लड़की क्यों, न जाने क्यों
लड़कों सी नहीं होती
लड़की क्यों, न जाने क्यों
लड़कों सी नहीं होती

प्यार उसे भी है मगर
शुरुआत तुम्हीं से चाहे
खुद में उलझी उलझी है
पर बालों को सुलझाए

आई मीन यू आर ऑल द सेम यार
हम अच्छे दोस्त हैं पर
उस नज़र से तुमको देखा नहीं
वो सब तो ठीक है पर
उस बारे में मैंने सोचा नहीं

सब से अलग हो तुम
ये कहकर पास तुम्हारे आए
और कुछ दिन में तुम में अलग सा
कुछ भी ना उसको भाए

उफ़ ये कैसी शर्ट पहनते हो
ये कैसे बाल कटाते हो
गाड़ी तेज़ चलाते हो
तुम जल्दी में क्यों खाते हो
गिव मी ए ब्रेक

तुम्हें बदलने को
पास वो आती है
तुम्हें मिटाने को
जाल बिछाती है
बातों बातों में
तुम्हें फँसाती है
पहले हँसाती है
फिर बड़ा रुलाती है
लड़की क्यों, न जाने क्यों
लड़कों सी नहीं होती
लड़की क्यों, न जाने क्यों
लड़कों सी नहीं होती

इतना ही खुद से खुश हो तो
पीछे क्यों आते हो
फूल कभी तो हज़ार तोहफ़े
आखिर क्यों लाते हो

अपना नाम नहीं बताया आपने
कॉफ़ी पीने चलेगी
मैं आपको घर छोड़ दूँ
फिर कब मिलेंगीं

बिखरा-बिखरा बेमतलब सा
टूटा फूटा जीना
और कहते हैं अलग से हैं हम
तान के अपना सीना

भीगा तौलिया कहीं फ़र्श पे
टूथपेस्ट का ढक्कन कहीं
कल के मोज़े उलट के पहने
वक़्त का कुछ भी होश नहीं

जीने का तुमको ढंग सिखलाती है
तुम्हें जानवर से इंसान बनाती है
उसके बिना इक पल
रह न सकोगे तुम
उसको पता है ये
कह न सकोगे तुम
इसलिए लड़कियाँ
लड़कों सी नहीं होतीं

जाने कौन-कौन से दिन वो
तुमको याद दिलाए
प्यार को चाहे भूल भी जाए
तारीखें न भुलाए
फ़र्स्ट मार्च को नज़र मिलाई
चार अप्रैल को मैं मिलने आई
इक्कीस मई को तुमने छुआ था
छह जून मुझे कुछ हुआ था

लड़कों का क्या है
किसी भी मोड़ पे वो मुड़ जाएँ
अभी किसी के हैं
अभी किसी और से वो जुड़ जाएँ

तुम्हारे मम्मी डैडी घर पर नहीं हैं

ग्रेट! मैं आ जाऊँ
तुम्हारी फ्रेंड अकेली घर जा रही है
बेचारी! मैं छोड़ आऊँ, उफ़फ़

इक हाँ कहने को कितना टहलाती है
थक जाते हैं हम
वो जी बहलाती है
वो शरमाती है तभी छुपाती है
लड़की जो हाँ कह दे उसे निभाती है
इसलिए लड़कियाँ लड़कों सी नहीं होतीं
इसलिए लड़कियाँ लड़कों सी नहीं होतीं

ना ना ना
इसलिए लड़कियाँ लड़कों सी नहीं होतीं
ऑल राइट-ऑल राइट
इसमें झगड़ने की क्या बात है यार
पहले पहले भँवरे जैसे
आसपास मँडराएँ
फिर बिज़ी हूँ कहकर
तुमको वो टरकाएँ
समझा करो डार्लिंग
आज बहुत काम है
दूर हुआ तो क्या
दिल में तुम्हारा नाम है
जिस चेहरे पर मरते हैं
वो बोरिंग हो जाए
(आई एम नॉट लिसनिंग टू यू)
कुछ ही दिन में नज़रें इनकी

इधर उधर मँडराएँ
(आई एम नॉट लिसनिंग टू यू)
सिर्फ़ प्यार से ज़िन्दगी नहीं चलती
(ओके आई एम नॉट विद हर)
तुम इंटीरियर डेकोरेशन का कोर्स
क्यों नहीं करती

इसलिए लड़कियाँ लड़कों सी नहीं होतीं

गीत यात्रा

‘हम तुम’ के लिए लिखा गया यह मेरा पहला गीत था. यह अधिकृत रूप से पहली फ़ीचर फ़िल्म थी जिसके मैंने सभी गीत लिखे. यह अवसर मुझे एक निराले ही ढंग से प्राप्त हुआ.

एक एयरपोर्ट लाउन्ज में अकस्मात ही मेरी मुलाकात आदित्य चोपड़ा से हुई. हम दोनों बातचीत करने लगे और जल्द ही हम में अच्छी मित्रता हो गई. उन्होंने मुझे इस फ़िल्म के संवाद और गीत लिखने का प्रस्ताव दिया. आदि ने कुणाल कोहली से मेरा परिचय कराया था जिन्होंने स्क्रिप्ट लिखी थी और जो फ़िल्म का निर्देशन भी करने वाले थे. स्क्रिप्ट पढ़ने के बाद मुझे लगा कि संवाद काफ़ी अच्छे लिखे गए थे और स्क्रिप्ट में भी मैं शायद ही कोई बदलाव करना चाहता. इसलिए, भले ही थोड़ा लोभ हो रहा था, पर मैंने आदि से पूरी ईमानदारी के साथ कहा कि कुणाल के लिखे संवादों में कोई बदलाव नहीं करना चाहिए. उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं आसानी से इस अवसर का लाभ उठा सकता था और संवादों को पुनः लिख सकता था. पर मैं लेखन के प्रति कभी बेईमान नहीं हो सकता, चाहे अपने या किसी और के.

इसलिए मैंने केवल इस फ़िल्म के गीत लिखे.

‘लड़की क्यों’ वास्तव में एक मस्ती भरा गीत था. मुझे याद है, लड़कियाँ क्या सोचती हैं, इस विषय पर मैं अपनी पत्नी अपर्णा से घंटों बात किया करता था. विचारों की एक दिलचस्प भूलभुलैया उभरने लगी, जिसे मैंने कागज़ पर उतार लिया. मुझे अक्सर कहा जाता है कि इस गीत में एक गहरी बात है. पर सच तो यही है कि पुरुष और स्त्री दोनों बहुत अलग होते हैं. मैंने यही अंतर, मज़ेदार और चुलबुले तरीके से दर्शाया है.

मेरे शिल्प की आवश्यकताएँ मुझे कौतूहल में डाल देती हैं — एक ओर मैंने ‘सीखो ना नैनों की भाषा पिया’ जैसे गीत लिखे हैं जो एक स्त्री की गहरी और जटिल कामनाओं को अभिव्यक्त करते हैं, कि उसका प्रियतम उसके अंतर्मन को समझ सके. दूसरी ओर है, ‘लड़की क्यों’ जो सीधा, सरल और स्पष्ट है. अक्सर, बहुत गहरे जाने की आवश्यकता नहीं होती. इस गीत में रोज़मर्रा के अवलोकन हैं. यह स्त्री और पुरुष के बीच की समानताओं और असमानताओं के बड़े प्रश्न की सतह को, बस हल्के से खुरचता है.

मुझे इस गीत पर कार्य करने में बहुत आनंद आया. ‘तुम इंटिरियर डेकोरेशन का कोर्स क्यों नहीं करती’, अंतिम मिनट में जोड़ा गया था, जब रानी और सैफ़ गीत की रिकॉर्डिंग कर रहे थे.

एक मज़ेदार गीत और मस्ती भरा अनुभव!

साँसों को साँसों में

साँसों को साँसों में
ढलने दो ज़रा
धीमी सी धड़कन को
बढ़ने दो ज़रा
लम्हों की गुज़ारिश है ये
पास आ जाएँ
हम, हम-तुम
तुम, हम-तुम

आँखों में हमको
उतरने दो ज़रा
बाँहों में हमको
पिघलने दो ज़रा
लम्हों की गुज़ारिश है ये
पास आ जाएँ
हम, हम-तुम
तुम, हम-तुम

सलवटें कहीं, करवटें कहीं
फैल जाए काजल भी तेरा
नज़रों में हो गुज़रता हुआ
ख्वाबों का कोई क़ाफ़िला
जिस्मों को, रूहों को जलने दो ज़रा
शर्मो-हया को मचलने दो ज़रा
लम्हों की गुज़ारिश है ये
पास आ जाएँ
हम, हम-तुम
तुम, हम-तुम

छू लो बदन
मगर इस तरह
जैसे सुरीला साज़ हो

अंधेरे छुपे तेरी जुल्फ़ में
खोलो कि रात आज़ाद हो
आँचल को सीने से ढलने दो ज़रा
शबनम की बूँदें फिसलने दो ज़रा
लम्हों की गुज़ारिश है ये
पास आ जाएँ
हम, हम-तुम
तुम, हम-तुम
साँसों को साँसों में
ढलने दो ज़रा
बाँहों में हमको
पिघलने दो ज़रा
लम्हों की गुज़ारिश है ये

गीत यात्रा

आदि और कुणाल ने इस गीत से उन्हें क्या चाहिए, यह मुझे बहुत विस्तारपूर्वक समझाया था. पर हमेशा की तरह, किसी भी गीत में सबसे आवश्यक है, एक भाव को इस प्रकार अभिव्यक्त करना, जैसे पहले कभी न किया गया हो. और यह, भारतीय फ़िल्मों के लिए प्रेम गीत लिखने वाले हर लेखक के सामने एक चिरस्थायी चुनौती रहती है. जहाँ तक रूमानी शैली की बात है, शायद ही ऐसा कुछ होगा, जो अब तक कहा न गया हो.

आदि और कुणाल द्वारा दी गई सभी सूचनाओं और निर्देशों को भूलकर, मैंने अपने आपको मुक्त छोड़ दिया. मैंने पहली पंक्ति लिखी, 'लम्हों की गुज़ारिश है', और मेरे चेहरे पर एक मुस्कान तैर गई. यह अचानक ही एक खूबसूरत पथ मिल जाने के जैसा था, जो एक मनोहारी जंगल में आपको और भी अंदर जाने के लिए ललचा रहा हो.

मैंने गीत का मुखड़ा लिखा पर उसे अपने पास ही रखा. मैं पूरा गीत लिखने के बाद ही सबको बताना चाहता था. इसमें मुझे दो रातों का समय लगा. मैंने चार अंतरे लिखे थे और अगले दिन हम संगीत निर्देशक, जतिन-ललित के कार्यस्थल पर मिलने वाले थे.

ये दोनों जब मिलकर संगीत रचते हैं, तो जादू कर देते हैं. यह दुख की बात कि अब दोनों साथ काम नहीं करते.

जब हम मिले और उन्होंने मुखड़ा गाना शुरू किया, उसी क्षण हमें अहसास हो गया था कि

यह गीत दिलों पर छा जाएगा. यह उनके बेहतरीन गीतों में से एक साबित हुआ.

बाबुल सुप्रियो और अलका याग्निक ने इसे बड़ी खूबसूरती से निभाया. यह दो परिपक्व व्यक्तियों के प्रेम के विषय में है, इसलिए यह मंद और हल्का नहीं बल्कि मादक और भावनाओं की तीव्रता लिए हुए है.

यह गीत बहुत लोकप्रिय हुआ और इसके लिए मुझे श्रेष्ठ गीतकार का अपना पहला फ़िल्म पुरस्कार मिला, इसलिए भी मेरी स्मृतियों में इसका विशेष स्थान है.

थोड़ा प्यार थोड़ा मैजिक

निहाल

सीधी सपाट ज़िन्दगी
बवाल हो गई
तेरी इक नज़र से
ज़िन्दगी निहाल हो गई

जिसको मैं भीड़ कहता था
वो लोग हो गए
जिसको सड़क समझता था
वो राह हो गई
चमकती आसमान में गोल चीज़
चाँद हो गई
तेरी इक नज़र से
ज़िन्दगी निहाल हो गई

डालियों में झूमते वो रंग
फूल हो गए
खुशबुओं से साँस
मालामाल हो गई
तेरी इक नज़र से
ज़िन्दगी निहाल हो गई

इक हवा जो पास आई तो

झोंका कहा उसे
पानी जो बरसने लगा
रिमझिम कहा उसे

होंठों के मोड़ने को
मुस्कुराहटें कहा
तेरी इक नज़र से
ज़िन्दगी निहाल हो गई

बदला महीना तो
नया मौसम कहा उसे
सुर नया-नया, नई-नई सी
ताल हो गई
तेरी इक नज़र से
ज़िन्दगी निहाल हो गई

सीधी सपाट ज़िन्दगी
बवाल हो गई
तेरी इक नज़र से
ज़िन्दगी निहाल हो गई

गीत यात्रा

प्रेम भारतीय फ़िल्मों का सबसे प्रिय भाव रहा है. इस पर इतना कुछ कहा गया है, इतना कुछ रचा गया है कि कोई कहेगा यह हिंदी फ़िल्म उद्योग का सबसे घिसा-पिटा विषय है.

यह भारतीय फ़िल्म संगीत और गीतों का भी मुख्य पहलू है.

कई वर्षों तक, भारतीय समाज में, विवाह पूर्व प्रेम एक वर्जना थी, और इस प्रेम की अभिव्यक्ति मुख्यतः कविताओं और गीतों के माध्यम से होती थी.

हमारी फ़िल्मों में अनेक प्रकार के प्रेम-गीत विद्यमान हैं. कई महान कविताएँ लिखी जा चुकी

हैं और अनेक विचारोत्तेजक अभिव्यक्तियों को खूबसूरत गीतों में प्रस्तुत किया जा चुका है। प्रेम का हर पहलू, चाहे चाहत हो, शोखी हो, तड़प हो, साथ हो, दर्द हो या भाव विरेचन, अनगिनत बार हिंदी फ़िल्म के प्रेम गीतों का हिस्सा बन चुका है।

एक ताज़गी भरा प्रेम गीत लिखना, वह भी बिना घिसे-पिटे शब्दों का प्रयोग किए, वास्तव में एक कठिन कार्य है, पर उतना ही दिलचस्प भी।

तो मुझे एक स्थिति दी गई थी — एक प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए अपनी चाहत को अभिव्यक्त करना चाहता है और यह भी कि कैसे प्रेम ने उसे और उसकी ज़िंदगी को बदल दिया है।

मन में एक सुंदर विचार जागा, प्रेम कितने ही शब्दों और चीज़ों के मायने बदल देता है। आसमान की वह जानी-पहचानी गोल चीज़, अचानक खूबसूरत चाँद बन जाती है और एक विशेष अर्थ पा लेती है।

गीत लिखते समय, मैं अक्सर नए और कम प्रयोग किए गए शब्दों का साथ लेता हूँ, जैसे यहाँ मैंने लिखा, 'सीधी सपाट ज़िंदगी', और मैंने इसे बनाए रखा। एक और निर्णय जो मुझे लेना पड़ा, वह था एक विशेष प्रकार की उथल-पुथल के लिए 'बवाल' या 'वबाल' शब्द का प्रयोग। जहाँ तक उर्दू की बात है, वबाल सही शब्द है। पर आम बोलचाल की भाषा में लोग अक्सर 'बवाल' शब्द का प्रयोग करते हैं, जैसे बवाल मच गया। मैंने बवाल चुना और शब्दों के एक खूबसूरत परिवार (निहाल, मालामाल) ने बाँहें फैलाकर मेरा स्वागत किया। इस गीत की ताज़गी, मुझे बहुत सुकून देती है।

प्यार के लिए

कभी सोचा है क्या
कभी सोचा है क्या
बारिश क्यूँ गाए
क्यूँ गीत बेवजह
होंठों पे आए
क्यूँ अच्छी लगें
तलवों में लहरें
क्यूँ भटके क़दम
एक पल न ठहरें
ये सब इशारे हैं
संग जो हमारे हैं
दिल ने सँवारे हैं
प्यार के लिए

दिल की शाखों पे
डलते हैं क्यूँ झूले
खुशबू क्यूँ किसी की
साँसों को ना भूले
होंठ थरथराते क्यूँ
पर ना बताते क्यूँ
उनकी ना-नुकुर भी है
प्यार के लिए

कभी सोचा है क्या
कभी सोचा है क्या
बारिश क्यूँ गाए
क्यूँ गीत बेवजह
होंठों पे आए
क्यूँ अच्छी लगें
तलवों में लहरें
क्यूँ भटके क़दम
एक पल न ठहरें
ये सब इशारे हैं

संग जो हमारे हैं
दिल ने सँवारे हैं
प्यार के लिए

ऐसा क्यूँ लगे
है जैसे कुछ अधूरा
वो चाँद है मुकम्मल
क्यूँ न लगता पूरा
आँखों की सीपी में
ख्वाबों के मोती हैं
मोती तरसते हैं
प्यार के लिए

कभी सोचा है क्या
कभी सोचा है क्या
बारिश क्यूँ गाए

गीत यात्रा

यह एक और प्रेम गीत था और इसलिए थोड़ा मुश्किल. आज के समय में, एक प्रेम गीत लिखना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है. दुनिया शुष्क हो चली है और मानवीय रिश्ते इतने उपयोगवादी कि प्रेम के विशुद्ध स्वरूप को अक्सर हाशिये पर डाल दिया जाता है.

एक कवि के रूप में, यह विश्वास रखना ही होता है कि यह दुनिया इतनी नीरस और साधारण नहीं हो सकती कि इसमें प्रेम का कोई स्थान न हो. सरलता और सौम्य भावों में विश्वास को सहेजना ही होगा. यकीन मानिए, यह बहुत कठिन कार्य है. वास्तविकता आपके क़दम रोक सकती है, पर आत्मा, इतने अधिक मामूलीपन, सतहीपन के विरुद्ध विद्रोह करती है और सच्चे भावों की लड़ियों को खोजती है.

हमारे आसपास जो मासूमियत और खूबसूरती है, हमें उसे पहचान देनी होगी, उसका उत्सव मनाना होगा, और यही मैंने इस गीत को लिखने के दौरान किया. इस गीत का मूल भाव है कि कैसे हमारे आसपास की वस्तुएँ, एक प्यारी सी साज़िश रचती हैं, ताकि हमें प्रेम हो जाए.

गीत को पूर्ण कर, मैंने कुणाल को फ़ोन लगाया. कुणाल के साथ काम करना मुझे हमेशा से ही पसंद रहा है. वे काव्य की ज़मीन पर नहीं पले-बहे हैं पर उन्हें काव्य की स्वाभाविक समझ है. नई अभिव्यक्तियों और शब्दों से उन्हें परहेज़ नहीं है और वस्तुतः वे एक कोमल और रूमानी हृदय के व्यक्ति हैं. उन्हें ये बोल बहुत प्यारे लगे. और जैसे ही मैंने शंकर को ये बोल सुनाए, हम दोनों इस गीत को मैजिक बनाने में जुट गए.

देल्ही 6

अर्जियाँ

अर्जियाँ सारी मैं
चेहरे पे लिख के लाया हूँ
तुम से क्या माँगू मैं
तुम खुद ही समझ लो

या मौला...
मौला, मौला, मौला मेरे मौला
दरारें-दरारें हैं
माथे पे मौला
मरम्मत मुक़द्दर की
कर दो मौला
मेरे मौला...
तेरे दर पे झुका हूँ, मिटा हूँ,
बना हूँ
मरम्मत मुक़द्दर की
कर दो मौला

जो भी तेरे दर आया
झुकने जो सर आया
मस्तिyaँ पिए सबको
झूमता नज़र आया
प्यास ले के आया था

दरिया वो भर लाया
नूर की बारिश में
भीगता सा तर आया

मौला, मौला, मौला मेरे मौला
एक खुशबू आती थी
मैं भटकता जाता था
रेशमी सी माया थी
और मैं तकता जाता था

जब तेरी गली आया
सच तभी नज़र आया
मुझमें ही वो खुशबू थी
जिससे तूने मिलवाया
मौला, मौला, मौला मेरे मौला

टूट के बिखरना
मुझको ज़रूर आता है
पर न इबादत वाला
शऊर आता है
सजदे में रहने दो, अब कहीं
ना जाऊँगा
अब जो तुमने ठुकराया तो सँवर
ना पाऊँगा
मौला, मौला, मौला मेरे मौला

सर उठा के मैंने तो
कितनी ख्वाहिशें की थीं
कितने ख्वाब देखे थे
कितनी कोशिशें की थीं
जब तू रूबरू आया
नज़रें ना मिला पाया
सर झुका के एक पल में
मैंने क्या नहीं पाया

मौला, मौला, मौला मेरे मौला

मोरा पिया घर आया
मोरा पिया घर आया
मौला, मौला, मौला मेरे मौला

गीत यात्रा

‘अर्जियाँ’ ने मेरी झोली, अनेक अद्भुत अनुभवों से भरी है.

एक दिन मुझे पर्यटन मंत्रालय के एक अधिकारी का फ़ोन आया. उन्होंने मुझे बताया कि पाकिस्तान से एक बीमार और वृद्ध महिला ने मुझसे बात करने का अनुरोध किया है. क्या वे मेरा फ़ोन नंबर उस महिला को दे सकते हैं? मैंने हाँ तो कहा, पर समझ नहीं पा रहा था कि यह किस बारे में था. अगले तीस मिनटों में मुझे एक उम्रदराज़ महिला का फ़ोन आया. कॅपकॅपाती आवाज़ में उन्होंने मुझसे एक गुज़ारिश की — क्या मैं उन्हें ‘अर्जियाँ’ सुना सकता हूँ? उन्होंने कहा कि वे इसे बार-बार सुनती हैं. ये गीत उन्हें बहुत सुकून देता है. और उनकी ख्वाहिश थी कि वे इस गीत को, इसको लिखने वाले के मुँह से सुन सकें.

यह जानकर कि इस गीत ने उन्हें कितने गहरे छुआ था, मेरा मन कृतज्ञता से भर गया.

इस फ़िल्म को चार साल से भी अधिक हो चुके हैं, पर मुझे अभी भी इस गीत को लेकर मैसेज, ई-मेल और फ़ोन आते रहते हैं.

एक व्यक्ति जिसने संयोग से सीडी सुनी, उसने बताया कि कैसे इस गीत ने उसकी आस्था को पुनर्जीवित कर दिया. एक और व्यक्ति ने बताया कि कैसे इस गीत ने, उसके अंतर-धर्म विवाह की आस्था के प्रति उसे संवेदनशील बना दिया. वह अब अपने तीन वर्षीय बच्चे को, दोनों धर्मों को एक समान इज़्ज़त देने की शिक्षा देता है.

यह गीत मेरे लिए भी बहुत विशेष है.

इस गीत को लिखने में मुझे एक वर्ष का समय लगा था. रहमान ने इस गीत की धुन मुझे दे दी थी और मेरे लिखने का लंबा इंतज़ार किया. यहाँ तक कि उन्होंने इसकी धुन को मेरी रिंगटोन बना दिया था ताकि मुझे स्मरण होता रहे कि मुझे यह गीत लिखना है. पर लंबे समय तक इस पर कोई प्रगति नहीं हुई. मैं कुछ नहीं लिख सका.

यह मेरे दिमाग में कहीं दस्तक तो दे रहा था, पर विचार बनकर सामने नहीं आ रहा था.

कई महीनों बाद, देर रात, मेरे दिमाग में मेरे बचपन का एक चित्र कौंधा. कुछ समय के लिए

हम रामपुर नामक एक छोटे से कस्बे में रहे थे. मेरे घर की बगल में एक दरगाह थी, इसकी दीवार मेरे घर से सटी हुई थी.

हर सुबह, स्कूल जाने के पहले, मैं दरगाह पर अपना शीश नवाता. यहाँ अक्सर मुझे, एक बहुत चौड़े माथे वाली बूढ़ी अम्मा दिखाई दे जाती थी. सजदे में झुकी हुई, वह वहाँ चुपचाप बैठी रहती थी.

उस पेशानी, उस माथे पर बहुत ही गहरी सिलवटें रहा करती थीं. उस चेहरे को भूल पाना मुश्किल है.

मेरी चेतना में कुछ शब्द प्रकट हुए 'दरारें दरारें हैं माथे पे मौला, मरम्मत मुकद्दर की कर दो मौला'.

ऐसा लगा मानो वह बूढ़ी अम्मा, ऊपरवाले से खामोशी के साथ दरखवास्त कर रही है कि उसके माथे पर मौजूद दरारों को भर दे, उसके मुकद्दर की मरम्मत कर दे.

मैंने तुरंत लिखना शुरू किया. 'अर्जियाँ' के अंश मेरी कलम से बहने लगे.

मैंने राकेश और रहमान दोनों को फ़ोन किया.

राकेश और मैं, काव्य से गहरा जुड़ाव रखते हैं. वास्तव में, वे पहले कविता पर प्रतिक्रिया देते हैं, और फिर संगीत पर. राकेश के लिए विषय-वस्तु महत्वपूर्ण होती है. विचार, उनके लिए सर्वोपरि हैं और ऐसे साझेदारों के साथ कोई भी प्रोजेक्ट करना, बहुत आनंददायक होता है.

जितनी जल्दी हो सकता था, हम चेन्नई में रहमान के स्टूडियो में मिले. मैंने गीत अभी पूरा नहीं लिखा था.

मैंने सुझाव दिया कि हम शुरुआती स्टैन्ज़ा रिकॉर्ड कर लेते हैं, पर रहमान पूरा गीत चाहते थे.

मैं बगल के कमरे में गया और ठीक आधे घंटे बाद, मेरे पास नौ मिनट का एक पूरा गीत तैयार था.

मैं इस गीत पर आगे चर्चा नहीं करूँगा. इसका विश्लेषण या विवेचन किया भी नहीं जा सकता.

यह गीत, सीधे रूह से निकला है.

मसक्कली

ऐ मसक्कली मसक्कली
उड़ मटक कली मटक कली

ज़रा पंख झटक, गई धूल अटक
और लचक मचक के दूर भटक
उड़ डगर-डगर कस्बे कूचे
नुक्कड़ बस्ती में ये, ये, ये
तड़ी से मुड़, अदा से उड़
कर ले पूरी दिल की तमन्ना
हवा से जुड़, अदा से उड़
फुर्र फुर्र फुर्र फुर्र
तू है हीरा पन्ना रे
ऐ मसक्कली मसक्कली
उड़ मटक कली मटक कली

घर तेरा सलोनी, बादल की कॉलोनी
दिखला दे ठेंगा उन सबको
जो उड़ना ना जानें
उड़ियो ना डरियो कर मनमानी
मनमानी, मनमानी
बढ़ियो ना मुड़ियो कर नादानी
तन तान ले मुस्कान ले
कहे सन-नन-नन-नन-नन हवा
बस ठान ले तू जान ले
कहे सन-नन-नन-नन-नन हवा

ऐ मसक्कली मसक्कली
उड़ मटक कली मटक कली
ऐ मसक्कली मसक्कली
उड़ मटक कली मटक कली

तुझे क्या ग़म तेरा रिश्ता
गगन की बाँसुरी से है
पवन की गुफ्तगू से है
सूरज की रोशनी से है
उड़ियो ना डरियो कर मनमानी
मनमानी, मनमानी
बढ़ियो ना मुड़ियो कर नादानी

तन तान ले मुस्कान ले
कहे सन-नन-नन-नन-नन हवा
बस ठान ले तू जान ले
कहे सन-नन-नन-नन-नन हवा

गीत यात्रा

जो लोग हिंदी और उर्दू के अच्छे जानकार हैं, उन्हें अक्सर लगता है कि उन्होंने 'मसक्कली' शब्द कहीं सुना है. यह बहुत जाना-पहचाना लगता है, प्रचलित सा शब्द लगता है. पर ऐसा नहीं है. मैंने तो बस एक लहर में इसे गढ़ा था. बहुत से लोग इसका अर्थ पूछते हैं और मैं उन्हें कहता हूँ कि इसका अर्थ है 'कुछ भी नहीं'. यह शब्द बस एक अहसास था, जो इस गीत की धुन सुनकर मेरे पास चला आया.

यह सबको पसंद भी आया और राकेश ने तो फिल्म में कबूतर का नाम ही 'मसक्कली' कर दिया.

यह आज़ादी का गीत है. फ़िल्म में यह गीत, कबूतर की, और उसके साथ ही मुख्य किरदार बिट्टू की आज़ादी की ओर इशारा करता है. इस युवा लड़की बिट्टू के किरदार को सोनम कपूर ने निभाया था.

मेरे मन में, मैं वह कबूतर था जो पूरे शहर में उड़ता फिर रहा था, हर नुक्कड़, हर कोने को अपने पंरों से नाप रहा था, आकाश की अनंत आज़ादी का लुत्फ़ उठा रहा था. अलग-अलग लोगों के लिए यह गीत अलग-अलग मायने रखता है. एक लड़की जो अक्सर मेरे कार्यों के बारे में अपने विचार लिख भेजती है, उसने कहा कि वह एक जानलेवा बीमारी से संघर्ष कर रही थी, और पूरी बीमारी के दौरान इस गीत ने उसका उत्साह बनाए रखा और उसे पुनः स्वस्थ होने की

प्रेरणा दी.

ऐसे क्षणों में, मैं स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली महसूस करता हूँ. यह जानकर बहुत संतोष होता है कि आपने जो लिखा या रचा है, उसने किसी के जीवन पर प्रभाव डाला है.

पर मैं अक्सर कहता हूँ, एक तार को यह नहीं भूलना चाहिए कि वह सिर्फ़ एक तार है, बिजली नहीं. और एक तार की ही तरह, सृजन करने वाले व्यक्ति, सिर्फ़ एक माध्यम होते हैं. विचार, कल्पनाएँ, प्रेरणाएँ और शब्द, ये सब उनसे गुज़रते हैं और जादू पैदा करते हैं. मैं मात्र इतना कर सकता हूँ कि एक योग्य माध्यम अथवा सुपात्र होने का प्रयास करूँ.

रहना तू

रहना तू
है जैसा तू
थोड़ा सा दर्द तू
थोड़ा सुकूँ

रहना तू
है जैसा तू
धीमा धीमा झोंका
या फिर जुनूँ
थोड़ा सा रेशम
तू हमदम
थोड़ा सा खुरदुरा
कभी तो अड़ जाए
या लड़ जाए
या खुशबू से भरा

तुझे बदलना ना चाहूँ
रक्ती भर भी सनम
बिना सजावट, मिलावट
ना ज़्यादा ना ही कम

तुझे चाहूँ
जैसा है तू
मुझे तेरी बारिश में भीगना है
घुल जाना है

तुझे चाहूँ, जैसा है तू
मुझे तेरी लपट में जलना
राख हो जाना है

तू ज़ख्म दे अगर

मरहम भी आ के तू लगाए
ज़ख्म पे भी मुझको प्यार आए

दरिया, ओ दरिया
डूबने दे मुझे दरिया
डूबने दे मुझे दरिया

रहना तू...

हाथ थाम चलना हो
तो दोनों के दाएँ हाथ संग कैसे
एक दायाँ होगा एक बायाँ होगा
थाम ले हाथ ये थाम ले
चलना है संग थाम ले
चलना है संग थाम ले

रहना तू
है जैसा तू
थोड़ा सा दर्द तू
थोड़ा सुकूँ
थोड़ा सा रेशम
तू हमदम
थोड़ा सा खुरदुरा
कभी तो अड़ जाए
या लड़ जाए
या खुशबू से भरा

तुझे बदलना ना चाहूँ
रक्ती भर भी सनम
बिना सजावट, मिलावट
ना ज़्यादा, ना ही कम

तुझे चाहूँ, जैसा है तू

मुझे तेरी बारिश में भीगना है
घुल जाना है
तुझे चाहूँ, जैसा है तू
मुझे तेरी लपट में जलना
राख हो जाना है

गीत यात्रा

‘रहना तू’ एक प्रेम गीत है पर इसमें एक दार्शनिक धारा प्रवाहित होती रहती है. संभवतः यही कारण है कि निर्देशक इसे फ़िल्म में एक तटस्थ रूप में प्रयोग कर सके. फ़िल्म में यह गीत, एक स्त्री-पुरुष के प्रेम के बारे में उतना नहीं है. यह अपनी जड़ों से, जन्मस्थान से, अपनी पहचान से प्रेम के बारे में अधिक कहता है.

पर मेरे लिए, यह रिश्तों का गीत है. मैंने इसी रूप में इसकी कल्पना की थी और लिखा था.

प्रेम के आरंभ में भावनाएँ अत्यंत तीव्र होती हैं और व्यक्ति के सभी पहलुओं की स्वीकार्यता रहती है. तर्क की बाध्यताएँ नहीं सतातीं और हम उस व्यक्ति के प्रति आलोचनात्मक भी नहीं रहते. हम अपने प्रिय का अत्यधिक विश्लेषण या विच्छेदन नहीं करते. पर मैंने अक्सर देखा है, लोग कुछ समय बाद अपने प्रेमी में बदलाव लाने का प्रयास करते हैं. वे उस व्यक्ति की छोटी-छोटी बातों की शिकायतें करने लगते हैं, वह जो उन्हें एक समय हर दृष्टि से श्रेष्ठ लगता था.

यह गीत उनके लिए है जिन्हें प्रेम हो जाता है और वे प्रेम में बने रहते हैं. यह गीत व्यक्ति के स्वाभाविक रूप की कद्र करता है, उसका सम्मान करता है, उसकी कमियों और अधूरेपन को भी सर-आँखों पर बैठाता है, उन्हें अपनाता है, बजाय कि श्रेष्ठता की निरंतर खोज करने के.

मेरे अनुसार, श्रेष्ठता अपने सभी दरवाज़े बंद करके बैठती है. यह कुछ अधिक ही परिपूर्ण होती है, अंदर आने का कोई रास्ता ही नहीं. यह गीत कमियों और अधूरेपन को समर्पित है, यह उनसे उत्पन्न होने वाली कमज़ोरियों का गान है. इस प्रकार का गहरा प्रेम, प्रेम के शुरुआती उत्साह जितना ही तीव्र होता है, जो भले ही अधिक उल्लासमय हो पर जिसमें स्थायित्व की खुशबू नहीं होती.

‘तुझे बदलना ना चाहूँ, रत्ती भर भी सनम’ — और मैं भी इस गीत की एक भी पंक्ति बदलना नहीं चाहूँगा. यह जैसा है, मुझे अत्यंत प्रिय है.

गेंदा फूल

ओए होए होए
सैयाँ छेड़ देवे
ननद चुटकी लेवे
ससुराल गेंदा फूल

सास गारी देवे
देवरजी समझा लेवे
ससुराल गेंदा फूल

छोड़ा बाबुल का अंगना
भावे डेरा पिया का
सैयाँ हैं व्यापारी
चले हैं परदेस
सूरतिया निहारूँ
जियरा भारी होवे
ससुराल गेंदा फूल

सास गारी देवे
देवरजी समझा लेवे
ससुराल गेंदा फूल

बुशर्ट पहिने
खाई के बीड़ा पान
पूरे रायपुर से अलग है
सैयाँ जी की शान
ससुराल गेंदा फूल

सास गारी देवे
देवरजी समझा लेवे
ससुराल गेंदा फूल

छोड़ा बाबुल का अंगना
भावे डेरा पिया का

गीत यात्रा

आरंभ में, यह गीत फ़िल्म के पार्श्व संगीत का हिस्सा था, और, जैसा कि मुझे बताया गया, अभिनेता रघुवीर यादव ने इस छत्तीसगढ़ी लोक गीत का सुझाव दिया था।

जब यह मुझे सुनाया गया, मुझे महसूस हुआ कि इसकी धुन तो बहुत अच्छी थी पर भाषा एक बाधा थी। बहुत से लोग इसकी बोली और शब्दों को समझ नहीं पाएँगे, मैं स्वयं भी इसे समझने में असमर्थ था। कितना अच्छा हो यदि मैं इसकी धुन को ऐसे शब्दों का साथ दे पाऊँ, जो ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को समझ आ सकें। यह पृष्ठभूमि में क्यों रहे?

मूल शुरुआती पंक्ति थी 'करार गेंदा फूल'। मैं बहुत अधिक बदलाव करने के पक्ष में नहीं था, पर फिर भी इसे फ़िल्म के लिए प्रासंगिक बनाना चाहता था।

चूँकि यह गीत बुजुर्ग महिलाओं और उनके साथ एक कुँआरी लड़की पर फिल्माया जाने वाला था, मैंने लिखा 'ससुराल गेंदा फूल'।

'ससुराल' शब्द एक युवा लड़की के लिए भावों का पूरा संसार समेटे रहता है। सास द्वारा उपहास का भय, देवर का स्नेह, ननद की छेड़-छाड़, पति का प्रेम और बहुत कुछ।

यदि आप विचार करें तो गेंदे का फूल, हिन्दू जीवन और रीति-रिवाजों में व्यापक भूमिका निभाता है। यह देवी-देवताओं के चरणों में, पूजा के थाल में, विवाह के मंडप में, दुल्हन की डोली में, नवजात शिशु के पालने में और अंत में मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति की अर्थी में, सर्वत्र स्थान पाता है।

ससुराल और गेंदा, दोनों के व्यापक भाव को देखते हुए, मैंने उन्हें एक साथ लिया। मूल गीत से मैंने जितने शब्द समझ आ सके, वे लिए। 'सास', 'रायपुर', और भी कुछ शब्द। और फिर, बिना गीत के भाव को क्षति पहुँचाए, मैंने इन शब्दों के आसपास लिखने का प्रयास किया। शब्दों के कौन-से परिवार का मैं चयन करूँगा, इसकी चिंता किए बग़ैर मैं गीत को आकार देता चला गया।

मेरी यही कोशिश थी कि इस गीत में लोक संगीत की सौंधी खुशबू को कायम रख सकूँ और इसे फिल्म के लिए प्रासंगिक विचार दे सकूँ।

मैं जानता हूँ कि 'सैयाँ' और 'बुश-शर्ट' जैसे शब्द छत्तीसगढ़ की मूल भाषा का भाग नहीं होंगे, पर इनमें मिट्टी की महक थी, इसलिए मैंने इन्हें गीत में गूँथ लिया।

यह मस्ती भरा गीत है, पर फिर भी इसमें दर्द का मंद स्वर है। और यही इसकी खूबसूरती को

चार-चाँद लगाता है. और उस पर रेखा भारद्वाज की अनूठी आवाज़ इस गीत को यादगार बना देती है.

काला बंदर

हे काला, काला, काला बंदर
बाहर है या अंदर
हे काला, काला, काला बंदर
जो ढूँढे सिकंदर

आओ हम शीशा देखें
उसमें संदेशा देखें
अपना घायल हिस्सा देखें
अपना असली क्रिस्सा देखें

घूँघट की गहराई में
फन फैलाए कौन है
झक सफ़ेद लिबासों में
काला सा सच मौन है

चूस ले, चूस ले, चूस ले, चूस ले
लाइफ़ की फाँक ले
चूस ले, चूस ले, चूस ले, चूस ले
लाइफ़ की फाँक ले

ताक-झाँक, ताक-झाँक
ताक-झाँक, ताक-झाँक
दिल में भी झाँक ले

कसमें तो मूँगफली हैं
जब जी चाहे हम खाते
ऊपर से ना-ना-ना करते
पर थाली आगे सरकाते
एक थाली के चट्टे-बट्टे
अरमान हैं हट्टे-कट्टे
नाटक ये नाटक नाटक

बंद कर दो झूठ का फाटक

चूस ले, चूस ले, चूस ले, चूस ले
लाइफ़ की फाँक ले

ताक-झाँक, ताक-झाँक
ताक-झाँक, ताक-झाँक
दिल में भी झाँक ले

सारे रीति-रिवाज़ हटाकर
देखो अपने घर के अंदर
शायद कहीं किसी कोने में
ऊँघ रहा है काला बंदर

इन परदों में कितने परदे
कितनी परतें कितने परदे
और परदों के पीछे परदे
और परदों के पार कहीं पर
दर्द छुपा है घाव छुपे हैं
राज़ कहीं दबे पाँव घुसे हैं
जान के भी अनजान हैं हम सब
पागल या नादान हैं हम सब
जाने कौन से रंग में रंगे
हमाम में हम सारे नंगे

चूस ले, चूस ले, चूस ले, चूस ले
लाइफ़ की फाँक ले
ताक-झाँक, ताक-झाँक
ताक-झाँक, ताक-झाँक
दिल में भी झाँक ले

गीत यात्रा

दोषदर्शन और व्यंग्य में अंतर है। व्यंग्य आत्ममंथन की प्रेरणा देता है। यह कुछ करने का आह्वान है। व्यंग्य हमें चीज़ों की पड़ताल करने की दिशा में ले जाता है। मुझे लगता है कि हम सभी को सही अर्थों में, स्वयं की परख और पड़ताल करने की आवश्यकता है, ताकि हम एक समाज के रूप में प्रगति कर सकें। हर वह बात जिस पर आवरण डाला जाता है, वे सारे स्याह सत्य जो श्वेत की तरह प्रस्तुत किए जाते हैं, उन्हें अनावृत्त करना आवश्यक है। भले ही वे धर्म, संस्कृति या अर्थहीन आडम्बरों की भूलभुलैया में छुपे हुए हों, उन्हें प्रकाश में लाना होगा और उन पर खुले मन और खुले दिमाग से चर्चा करनी होगी।

काव्य और संगीत ने अक्सर अंतरात्मा को जागृत करने का महती कार्य किया है। संगीत की एक शैली, जो मुझे बहुत धारदार और दिलचस्प लगती है वह है हिप-हॉप। मेरे मित्र अनिल बथवाल, जिनके साथ मेरा एक अत्यंत आत्मीय और सुरीला रिश्ता है, मुझे विभिन्न प्रकार के संगीत से अद्यतन रखते हैं। उन्होंने ही इस शैली से मेरा परिचय कराया।

हिप-हॉप में प्रदर्शित होने वाली व्यग्रता और रोष ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। मैं यह नहीं कहूँगा कि 'काला बंदर' असमानता और अन्याय का दर्द दर्शाता है, पर यह गीत समाज और उसके छिछलेपन पर एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी अवश्य करता है।

इस शैली में लिखने का विचार मुझे वर्षों पूर्व आया था, जब मैं और अनिल, न्यूयॉर्क में एक उभरते हुए बैंड के अभ्यास सत्र में गए थे। यह अभ्यास एक गैरेज में किया जा रहा था। मुझे याद है, मैं अपने और उनके समाज में विद्यमान अन्यायों और दोहरे मापदंडों के मध्य समानता देख पा रहा था। यह विचार कहीं गहरे जा बसा और इस व्यंग्यात्मक गीत के रूप में वर्षों बाद सामने आया।

'काला बंदर' एक रूपक है, जो मेरे अनुसार फ़िल्म में बहुत अच्छे से नहीं समझा जा सका। यह हमारी चेतना का स्याह पक्ष है। मैंने इस गीत के माध्यम से आत्ममंथन कर, समस्या को चुनौती देने का प्रयास किया है।

दफ़तन

दिल मेरा दिल मेरा दिल मेरा दिल मेर
दिल गिरा कहीं पर दफ़तन
जानें मगर ये नयन
तेरी खामोश जुल्फों की गहराइयाँ
है जहाँ दिल मेरा
उलझा हुआ है वहीं खो गया
तू मगर, है बेखबर
है बेखबर

दिल गिरा कहीं पर दफ़तन
क्यों गूँज रही है धड़कन
जानें मगर ये नयन

सीपियों के होंठ से
मोती छलक रहे हैं
गाज़लों की सोहबत में
गीत भी बहक रहे हैं
समन्दर लहरों की, लहरों की
चादर ओढ़ के सो रहा है
पर मैं जागूँ, एक खुमारी
एक नशा सा, एक नशा सा
हो रहा है
तू मगर है बेखबर
है बेखबर

दिल गिरा कहीं पर दफ़तन
क्यों गूँज रही है धड़कन
जानें मगर ये नयन
खुशबुओं में लिपटे मौसम

तेरी खामोश जुल्फों की गहराइयाँ

है जहाँ दिल मेरा
उलझा हुआ है वहीं खो गया
तू मगर, है बेखबर
है बेखबर

दिल गिरा कहीं पर दफ़्तन
क्यों गूँज रही है धड़कन
जानें मगर ये नयन

गीत यात्रा

कई बार, संगीत की कोई लड़ी आपके भीतर, आपके साथ ही साँस लेने लगती है. यह एक इसी प्रकार की रचना थी. मैं इस प्रकार की मधुर रचनाओं का इंतज़ार करता हूँ क्योंकि ये एक अनूठे तरीके से आपके अवचेतन में प्रवेश करती हैं, और स्वतः ही विचारों और अभिव्यक्तियों के मोती चुन लाती हैं. आपको ऐसी रचनाओं को किसी प्रेमी की तरह बार-बार आपसे मिलने आने देना होगा.

इस गीत ने मानो स्वतः को ही रच लिया. मैंने स्वयं को इसमें भिगो दिया था और इस प्रक्रिया का भरपूर आनंद उठाया. इसने मेरे दिमाग में अनेक दृश्यों का सृजन किया और मैंने प्रेम की 'रासायनिक प्रतिक्रिया' को काव्यात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया. प्रेम आपको एक काल्पनिक अनुभूति देता है कि आप एक ऐसी यात्रा पर हैं, जहाँ दृश्य, यथार्थ और वस्तुएँ, सब एक दूसरे में समा रहे हैं, एक हो रहे हैं.

प्रेम मनःस्थिति को बदल देता है.

'समंदर लहरों की चादर ओढ़ कर सो रहा है' वह पहला पद था जो मैंने इस गीत के लिए लिखा था. एक और जो मुझे अत्यंत प्रिय है वह है 'ग़ज़लों की सोहबत में गीत भी बहक रहे हैं.'

यह गीत जितना रिकॉर्ड किया गया या आपके समक्ष आया उससे कहीं अधिक लिखा गया था. अंतरों का चुनाव बड़ा कठिन कार्य था. मैं सभी अंतरों को बनाए रखने के लिए देर तक लड़ता रहा, पर स्थानाभाव के कारण यह संभव नहीं हो सका.

इस गीत से जुड़ा एक दिलचस्प प्रसंग है, इसके गायक को यह गीत सिखाने का अनुभव. ऐश किंग हिंदी भाषा से परिचित नहीं थे. उन्हें सही उच्चारण सीखने में दो दिन लगे, कारण था, उनका ब्रिटिश एक्सेंट. हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी कि उन्हें अपना एक्सेंट विस्मृत

करवाकर, शब्दों को सही ढंग से उच्चारित करवाना.

काफी परिश्रम के बाद मनचाहा परिणाम मिला. उन्होंने इस गीत को अत्यंत मधुरता के साथ गाया. वे नोट्स के मध्य इतनी खूबसूरती से निकल रहे थे, जैसे कोई हिरण अपनी लालित्यपूर्ण चाल चलता हुआ.

इस गीत की धुन, शब्द और आवाज़ में रेशम-सा अहसास है. इस गीत का फ़िल्मांकन भी अत्यंत दर्शनीय है. इसके पोस्ट-प्रोडक्शन इफेक्ट्स कमाल के हैं, यदि संभव हो तो इसे पुनः देखें और आप मेरी बात से सहमत हो जाएँगे.

लंदन ड्रीम्स

यारी बिना

ये दुनिया जब ले के तराजू
तेरा तोल के भाव बताए
यार कहे आ सीने से लग जा
दुनिया भाड़ में जाए

दो कहाँ हैं एक ही है
यारी में दो होते ही नहीं
उसको काटो दर्द इसको
यारी में दो होते ही नहीं
ओ कच्चे गुड़ सी है यारी
ओ मीठे पानी से प्यारी
तो आज्ञा जश्न मना ले यारा वे
यार को गले लगा ले

दिल के अँधेरो को वो टटोले
मन को बिलो दे, मथ डाले, खोले
यारा, यारी बिना है बेसुरी
मेरी ज़िन्दगी
यारा, यारी बिना है बेसुरी,
है बेसुरी, बेसुरी ज़िन्दगी

मेरी हिचकियों में है

वो शामिल
मेरे ख्वाबों में
मेरे मौसमों में

तितलियों को छोड़े वो
मेरे आँसुओं को
मोतियों सी शान बरूँ वो
मेरी बाँसुरी में आ के
साँसें जोड़े वो

ओ कच्चे गुड़ सी है यारी
ओ मीठे पानी से प्यारी
तो आज्ञा जश्न मना ले यारा वे
यार को गले लगा ले

दिल के अँधेरों को वो टटोले
मन को बिलो दे, मथ डाले, खोले

यारा, यारी बिना है बेसुरी, है बेसुरी,
बेसुरी ज़िन्दगी

गीत यात्रा

मैंने जब यह गीत लिखा, मेरे प्रिय मित्र विकास जैन का चेहरा मेरे मन में था. उनकी आँखें अत्यंत भावप्रवण हैं, स्नेह से ओत-प्रोत.

मुझे ऐसा लगता है कि जिस प्रकार की दोस्ती की मैं यहाँ बात कर रहा हूँ, वह आजकल बहुत कम देखने को मिलती है.

आज हम अनेक दोस्तों और परिचितों की दुनिया में रहते हैं. टेक्नोलॉजी के माध्यम से हम

जुड़े तो हुए हैं, पर दिल का जुड़ाव अब शायद उतना नहीं.

यह गीत लिखते समय, मैंने महसूस किया कि दोस्ती के मायने कितने गहरे होते हैं. यह सिर्फ कोई लतीफ़ा, कुछ चित्र, अच्छे दिनों की यादें साझा करने तक सीमित नहीं है. एक-दूसरे का सहयोग करने की भावना से भी यह कुछ अधिक है.

यह एक मज़बूत मेल है, एक अटूट बंधन. पूरी सच्चाई और भरोसे के साथ, एक-दूसरे की जड़ों से जुड़ना. अपने दोस्त के साथ खड़े रहने की तैयारी, जब पूरी दुनिया उसके विरुद्ध खड़ी हो.

हम में से भाग्यशाली लोग, जिनके पास सच्ची दोस्ती की संपत्ति है, उनके दिल इन पंक्तियों के पीछे के भावों को अवश्य समझ लेंगे —

ये दुनिया जब ले के तराजू
तेरा तोल के भाव बताए
यार कहे आ सीने से लग जा
दुनिया भाड़ में जाए

ख्वाब को

जो तुझे जगाए
नींदें तेरी उड़ाए
ख्वाब है सच्चा वही
नींदों में जो आए
जिसे तू भूल जाए
ख्वाब वो सच्चा नहीं

ख्वाब को राग दे
नींद को आग दे
अँगारों को जगाए
कोयलों सा जो गाए
ख्वाब है सच्चा वही
लहरें जो उठाए
पानियों को हिलाए
ख्वाब है सच्चा वही
ख्वाब को राग दे
नींद को आग दे

मंज़िलों पे त्यौहार है
लेकिन वो हार है
क्या खुशी अपनों के बिन
है अधूरी हर जीत भी
सरगम संगीत भी
अधूरा है अपनों के बिन

ख्वाब के बादल
छाने दो लेकिन
रिश्तों की लौ को
बचा के बरसना
कहती हैं हवाएँ
चूम ले गगन को
पंखों को खोल तू

छोड़ ना तरसना
ख्वाब को राग दे
नींद को आग दे

ख्वाब को राग दे
नींद को आग दे
लिव यौर, लिव यौर
लिव यौर, लंदन ड्रीम्स

गीत यात्रा

जो लोग जी जान से अपने ख्वाबों का पीछा करते हैं, उन्हें सच बनाने के लिए हरसंभव कोशिश करते हैं, जानते हैं कि वे अपनी नींद की कुरबानी दे चुके हैं. वे यह भी जानते हैं कि उनके सपने औरों से अलग हैं, अनूठे हैं.

यह गीत उन सपनों की बात करता है, जो सपने देखने वाले को सोने नहीं देते. ये प्रेरणा देते हैं, प्रोत्साहित करते हैं, यहाँ तक कि धकियाते भी हैं, और जब तक सच न हो जाएँ, एक पल का भी चैन नहीं लेने देते.

इन पंक्तियों पर गौर कीजिए —

मंज़िलों पे त्यौहार है, लेकिन वो हार है
क्या खुशी अपनों के बिन
है अधूरी हर जीत भी
सरगम संगीत भी
अधूरा है अपनों के बिन

सुनने वालों को लग सकता है कि मैं मूल विचार से कहीं दूर चला गया. वे सही हैं. पर जब आप यह फ़िल्म देखेंगे और कहानी के संदर्भ में इस गीत को सुनेंगे, तो यह आपको बहुत उपयुक्त लगेगा.

यह मुझे उस प्रश्न के समक्ष खड़ा कर देता है, जो मैं अक्सर एक लेखक के रूप में स्वयं से पूछता हूँ. क्या मेरा गीत प्रसंग की तात्कालिकता के परे, फ़िल्म के बाहर भी एक जीवन धारण

करता है? क्या यह लोगों से मूलभूत स्तर पर जुड़ पाता है?

गीत हमारी कथा-कहानियों के प्राण हैं. फ़िल्मों के भी बहुत पहले से, ये हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं. भारत और कई अन्य संस्कृतियों में, जीवन के हर महत्वपूर्ण पड़ाव के लिए गीत विद्यमान हैं. जन्म से लेकर विवाह, और मृत्यु के लिए भी, बीज बोने से लेकर फसल काटने के लिए भी.

गीत अपने संग भावनाएँ, आश्वासन, जीवन-दृष्टि और न जाने कितना कुछ लिए होते हैं.

मुझे लगता है कि मैं इस गीत को, फ़िल्म के परे भी एक जीवन दे पाने में कुछ हद तक सफल रहा.

विपुल (फ़िल्म के निर्देशक) और उनकी समान रूप से प्रतिभाशाली पत्नी शेफाली, दोनों को ही यह गीत बहुत पसंद है. कभी-कभी, जब मुझे लोगों का टेक्स्ट या ई-मेल मिलता है, जो कहते हैं कि इस गीत में उनकी भावना झलकती है, तो मुझे अत्यंत खुशी होती है कि हम में से कुछ के पास अभी भी वे सपने हैं, जो हमें सोने नहीं देते.

खानाबदोश

खानाबदोश, खानाबदोश
फिरते हैं हम ख्वाबों के संग
लिए लंदन ड्रीम्स

है होंठों पे सीटी
पैरों में सफ़र है
है दूर मंज़िल
साथ बस हुनर है
गुनगुनाएँगे हम
चलते जाएँगे हम
जब तक देखे ना
सुने ना, समझे ना, माने ना
ये सारा जहाँ

आ ज़माने आ, आज़माने आ
पेशेवर हवा, मुश्किलें सजा
ख्वाब ना सगे, ज़िन्दगी ठगे
फिर भी जाने क्यों उम्मीद जगे

खानाबदोश, खानाबदोश
फिरते हैं हम ख्वाबों के संग
लिए लंदन ड्रीम्स

हम तो नदी ताल के
लहरें उछाल के
रहते वहीं जहाँ बहते हैं हम
दिल की सुराही, सौंधी सौंधी
गहराई जहाँ छलके है
गीत जिन्हें कहते हैं हम

आ ज़माने आ, आज़माने आ

पेशेवर हवा, मुश्किलें सजा
ख्वाब ना सगे, ज़िन्दगी ठगे
फिर भी जाने क्यूँ उम्मीद जगे

आसमान से छनती है
आँधियों से बनती है
ठोकरोँ में है अपनी तो मस्तियाँ
सागरोँ के यार हैं
झूमने से प्यार है
डोलते रहेंगे, हैं आवारा
कश्तियाँ

आ ज़माने आ, आज़माने आ
पेशेवर हवा, मुश्किलें सजा
ख्वाब ना सगे, ज़िन्दगी ठगे
फिर भी जाने क्यूँ उम्मीद जगे

खानाबदोश, खानाबदोश
फिरते हैं हम ख्वाबों के संग
लिए लंदन ड्रीम्स

गीत यात्रा

इस शीर्षक गीत में 'लंदन ड्रीम्स' को शामिल करना एक कठिन कार्य था. इन दो शब्दों को अलग से देखें, तो इनसे अर्थ स्पष्ट नहीं हो पा रहा था. मुझे कोई राह निकालने की आवश्यकता थी, जिससे इनका सही भाव प्रकट हो सके.

'खानाबदोश' ने यह खाली स्थान भरा. खानाबदोश, बंजारों के लिए प्रयुक्त एक फारसी शब्द है. 'संगीत के बंजारे' मैं यह बताना चाहता था. यह फिल्म में दर्शाई गई स्थिति के संदर्भ में उचित था, और इसका भाव भी पूर्णतया अनुकूल था. अजय देवगन और सलमान खान के किरदार,

संगीत के क्षेत्र में अपनी तक्रदीर बनाने, पंजाब, भारत से इंग्लैंड की धरती पर आते हैं. रणविजय और आदित्य के किरदार, पाकिस्तान से लंदन आते हैं ताकि अपने सपनों को सच कर सकें. इसलिए, यह उनके जीने के तरीके का सही वर्णन करता है.

हम में से वे सभी जो बड़े शहरों में रहते हैं, लेकिन जिनकी जड़ें कहीं और हैं, इस गीत के मर्म को समझ सकेंगे. आज जब अधिकाधिक लोग, छोटे स्थानों को छोड़कर शहरों का रुख कर रहे हैं, तब जड़ों की, स्थान से अपने संबंधों की, नई परिभाषाओं को गढ़ना आवश्यक है. क्या कोई अपनी जड़ों से अलग हो जाता है या फिर नई जड़ें प्राप्त करता है, पक्की मिट्टी में फिर से बोया जाता है? यह विचार करने योग्य है. एक तरह से, हम सभी परिवर्तन की प्रक्रिया में हैं.

मैं आश्चर्य नहीं था कि लोग 'खानाबदोश' शब्द से परिचित होंगे, पर मुझे आश्चर्य हुआ और खुशी भी कि अनेक लोगों को इसका अर्थ पता था.

मैंने इस गीत को बहुत अलग ढंग से लिखा, और इसमें कुछ बड़े ही रोचक पदों का प्रयोग किया, जैसे 'आ ज़माने आ, आज़माने आ' या 'पेशेवर हवा मुश्किलें सजा'.

इस गीत को पूरी ताकत और ताज़गी के साथ मोहन ने गाया है, जो बैंड अग्नि के गायक हैं.

जश्र है जीत का

सुन ले खुदा ग़ौर से ज़रा
आसमाँ मेरा अब आसमाँ मेरा
नींद तोड़ के ख़्वाब उड़ गए
आसमाँ मेरा अब आसमाँ मेरा
आसमाँ मेरा अब आसमाँ मेरा

बादल भींच के होंठ तर किए
आसमाँ मेरा अब आसमाँ मेरा

मैं तो अकेले चल दिया
हाथों में ले के पतवार
माँझी पे मुझको नहीं था
थोड़ा सा भी ऐतबार
जश्र है जीत का, जीत का, जीत का

छाले कई तलवों में
चुभे भाले कई
जलती हुई कहीं थी ज़मीं
टाले कई दर्द
या फिर संभाले कई
हौसलों में नहीं थी कमी
हम भी अड़ गए
आँधियों से लड़ गए
मैंने धकेल के अँधेरे
छीन के ले ली रोशनी

मेरे हिस्से के थे सवेरे
मेरे हिस्से की ज़िन्दगी
जश्र है जीत का, जीत का, जीत का

गीत यात्रा

यह गीत, जिस चीज़ पर आपका हक़ है, उस पर अपना अधिकार जताने के बारे में है, उसे पाने, उसका जश्न मनाने के बारे में है. यह हम भारतीयों का स्वाभाविक भाव नहीं है. एक ऐसे स्थान पर, जहाँ अनेक लोग दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जी रहे हैं और उन्हें बुनियादी सुविधाएँ तक प्राप्त नहीं हैं, सफलता का प्रदर्शन करना या इसकी चाह भी रखना, अपराध बोध जगाता है.

यह गीत ठीक इसके विपरीत है. यह जीवटता के बल पर प्राप्त सफलता का खुलेआम जश्न मनाता है. फिल्म के संदर्भ में यह अत्यंत उपयुक्त है, क्योंकि मुख्य किरदार ने बहुत संघर्षों के बाद सफलता प्राप्त की है.

यदि सौभाग्य और संपत्ति के साथ अपराध बोध जुड़ा हुआ है, तो उसे प्राप्त करने के लिए जो तपस्या की गई है, उसके लिए सम्मान भी है. भारतीय बिना पसीना बहाए प्राप्त की गई सफलता का कभी आदर नहीं करेंगे और यह गीत कड़े परिश्रम से प्राप्त सफलता का जश्न मनाता है.

शोला शोला

दे हवा दिल की अँगीठी को दे हवा
और बढ़ा, नारंगी शोलों को
और बढ़ा
टिमटिमाती लौ की कोई ना
समझे जुबाँ
लपट बन जा तू, बढ़ के
छू ले आसमाँ
और जल तू पिघल
हवा है तू, बह निकल
राहें बना, रास्ते बना, चल रे

शोला शोला शोला शोला है तू
खोया है कहाँ
रख दे हथेली पे अँगारे तभी
समझेगा जहाँ
शोला है तू, शोला शोला शोला
शोला है तू

खामोश रहने का
अब मौसम नहीं
ले तान ऊँची
धीमी सरगम नहीं
हार को त्यौहार कर
दर्द से झंकार कर
कैसे नहीं सुनेगी ये दुनिया

ज़ख्मों को खोल दे तू
चीर के दिल बोल दे तू
धारा है तू, नारा है तू, गूँज जा
शोला शोला शोला शोला है तू
खोया है कहाँ
रख दे हथेली पे अँगारे तभी

समझेगा जहाँ
शोला है तू, शोला शोला शोला
शोला है तू

अपनी नज़र के आगे जब आएगी
मंज़िल ही पहले पलकें झपकाएगी
ठोकरोँ में बात हो तो
कंकरों की मात हो
जीत भी तेरे साथ हो
सर पे कफ़न तेरे अगर
मेहरबाँ हर डगर
ख्वाबों पे यक़ीं तो जाग
अभी ज़िन्दगी

शोला शोला शोला शोला है तू
खोया है कहाँ
रख दे हथेली पे अँगारे तभी
समझेगा जहाँ
शोला है तू, शोला शोला शोला
शोला है तू

गीत यात्रा

इस गीत में केंद्रीय पात्र के संघर्षों का वर्णन किया जाना था. तभी इस गीत में भावनाओं की तीव्रता है, कुछ कर गुज़रने का जुनून है.

अनेक युवा मुझे इस गीत के विषय में लिख भेजते हैं कि स्वयं को साबित करने के उनके संघर्ष में यह गीत उन्हें प्रेरणा देता है, क्योंकि यह उनकी भावनाओं को दर्शाता है.

खामोश रहने का अब मौसम नहीं

ले तान ऊँची, धीमी सरगम नहीं

मुझे एक कलाकार की निराशा, कठिनाइयों के विरुद्ध उसके संघर्ष, उसके अटल निश्चय

और अपनी प्रतिभा में उसके अटूट विश्वास का वर्णन करना था.

अपनी नज़र के आगे जब आएगी

मंज़िल ही पहले पलकें झपकाएगी

बचपन में मेरी नानी मुझे रामायण की कथा पढ़कर सुनाती थीं. इसमें मुझे जामवंत के पात्र ने सदैव प्रभावित किया है. रामायण में जामवंत की भूमिका अद्भुत है. वे ही भगवान हनुमान को अपनी शक्तियों का स्मरण कराते हैं, उन्हें अपनी क्षमताओं का बोध कराते हैं. कहानी कुछ इस प्रकार है कि हनुमान जब बालक थे, उन्होंने खेल-खेल में सूर्य को निगल लिया था. इसके फलस्वरूप वे सूर्य के कोप का भाजन बने. हनुमान को श्राप मिला कि उन्हें अपनी शक्तियों का स्मरण नहीं रहेगा. वे अपनी शक्तियों को तभी पुनः प्राप्त कर सकेंगे जब कोई उन्हें इनका स्मरण कराएगा. मुझे लगता है हम में से अधिकतर लोग भी इसी अवस्था में रहते हैं और हमें भी एक जामवंत की आवश्यकता होती है, जो हमें स्वयं के मूल्य और सभी बाधाओं को पार करने की हमारी क्षमता का बोध करा सके. इस गीत में मैंने जामवंत की भूमिका निभाने का प्रयास किया है. मैं इसमें कितना सफल हो पाया हूँ, यह तो मुझे ज्ञात नहीं, पर मैंने एक कवि की भूमिका से न्याय करने का प्रयास अवश्य किया, जो हम सबके अंदर विद्यमान योद्धा को जगाने का उद्देश्य रखता है.

तारे ज़मीं पर

देखो इन्हें

देखो इन्हें ये हैं
ओस की बूँदें
पत्तों की गोद में
आसमाँ से कूदें
अँगड़ाई लें फिर करवट बदलकर
नाज़ुक से मोती हँस दें फिसलकर
खो न जाएँ ये
तारे ज़मीं पर

ये तो हैं सर्दी में
धूप की किरनें
उतरें जो आँगन को
सुनहरा सा करने
मन के अँधेरों को
रोशन सा कर दें
ठिठुरती हथेली की
रंगत बदल दें
खो न जाएँ ये
तारे ज़मीं पर

जैसे आँखों की डिबिया
में निंदिया

और निंदिया में मीठा सा सपना
और सपने में मिल जाए
फ़रिश्ता सा कोई

जैसे रंगों भरी पिचकारी
जैसे तितलियाँ फूलों की क्यारी
जैसे बिन मतलब का प्यारा
रिश्ता हो कोई

ये तो आशा की लहर हैं
ये तो उम्मीद की सहर हैं
खुशियों की नहर हैं
खो न जाएँ ये
तारे ज़मीं पर

देखो रातों के सीने पे ये तो
झिल-मिल किसी लौ से उगे हैं
ये तो अंबिया की खुशबू हैं
बाग़ों से बह चलें

जैसे काँच में चूड़ी के टुकड़े
जैसे खिले खिले फूलों के मुखड़े
जैसे बंसी कोई बजाए पेड़ों के तले

ये तो झोंके हैं पवन के
हैं ये घुँघरू जीवन के
ये तो सुर हैं चमन के
खो न जाएँ ये
तारे ज़मीं पर

मोहल्ले की रौनक गलियाँ हैं जैसे
खिलने की ज़िद पर कलियाँ हैं जैसे
मुट्ठी में मौसम की जैसे हवाएँ

ये हैं बुजुर्गों के दिल की दुआएँ
खो न जाएँ ये

तारे ज़मीं पर
तारे ज़मीं पर

कभी बातें जैसे दादी नानी
कभी छलकें जैसे मम-मम पानी
कभी बन जाएँ भोले सवालों
की झड़ी
सन्नाटे में हँसी के जैसे
सूने होंठों पे खुशी के जैसे
ये तो नूर है बरसे गर तेरी
किस्मत हो बड़ी
जैसे झील में लहराए चंदा
जैसे भीड़ में अपने का कंधा
जैसे मनमौजी नदिया झाग उड़ाती
कुछ कहे
जैसे बैठे-बैठे मीठी सी झपकी
जैसे प्यार की धीमी सी थपकी
जैसे कानों में सरगम
हरदम बजती ही रहे
जैसे बरखा उड़ाती है बुंदिया...

खो न जाएँ ये
तारे ज़मीं पर

गीत यात्रा

इस गीत के लिए आरंभ में जो मीटर मुझे दिया गया था, वह वर्तमान मीटर से बहुत छोटा था। मुझे याद है, मैं किसी तरह पुराने मीटर में अपने विचार बैठाने का प्रयास कर रहा था, और इस कारण, गीत बहुत जटिल सुनाई दे रहा था। आमिर (खान) ने मुझे इस बाध्यता से मुक्त किया। उन्होंने कहा कि वे शंकर-एहसान-लॉय से स्वयं बात करेंगे और यह कि मैं आज़ाद होकर लिखूँ।

मुझे तो मुँह माँगी मुराद मिल गई क्योंकि मैंने जो विचारों की राह पकड़ी थी, उस पर आगे बढ़ने के लिए लालायित था। मैंने कुछ दिनों में यह गीत लिखा और अपने ड्राफ्ट के साथ आमिर से मिला। आमिर ने कहा कि पंचगनी चलते हैं, जहाँ उनका घर है, और जल्द ही हम पंचगनी में थे।

तब तक मेरे पास दो अंतरे यानी कि पूरा गीत तैयार था। (आजकल, गीतों की सामान्य लम्बाई, दो अंतरे की हो गई है)। पर आमिर तो आमिर हैं, उन्होंने ज़ोर दिया कि मैं बच्चों से जुड़ी और अधिक उपमाएँ खोजूँ। मुझे प्रेरित करने के लिए मैं उनका सदैव आभारी रहूँगा।

इस गीत को लिखते समय, मुझे याद है मैंने आमिर से कहा था, 'जब मैं पूरा गीत लिख लूँगा, आप उसमें से कुछ भी हटाना नहीं चाहेंगे, पर फिर जब व्यवहारिकता हावी हो जाएगी, मुझे अपने विचारों और शब्दों की कुरबानी देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, वे जो मैं इतनी कोमलता के साथ लिख रहा हूँ।'

उन्होंने वादा किया कि वे कुछ नहीं हटाएँगे। मैं दिन भर लिखता रहा और हमारा शीर्षक गीत 'देखो इन्हें ये हैं, ओस की बूँदें' तैयार हुआ। वादे के अनुसार एक भी शब्द नहीं हटाया गया और हमने सीधे सात मिनट का शीर्षक गीत रिकॉर्ड किया।

शंकर-एहसान-लॉय से मेरा परिचय बहुत पुराना है और हम एक दूसरे की कार्य करने की शैलियों से बहुत अच्छी तरह से वाकिफ़ हैं। शंकर अपनी रचनाओं को लेकर बहुत लचीले हैं, यह उनकी एक अद्भुत खूबी है। वे अत्यंत गुणी हैं और इस गीत में उनका जादू स्पष्ट देखा जा सकता है।

आमिर ने सुझाव दिया कि बच्चों से जुड़ी उपमाओं को अंतहीन बताया जाए। इसलिए हमने गीत को इस प्रकार आकार दिया कि इसे सुनते समय लगता है कि बच्चों से जुड़े रूपक चलते जाएँगे, चलते जाएँगे। गीत मंद होता जाता है — ऐसा महसूस होता है मानो हौले-हौले, मीठी थपकियों के रास्ते, आप प्यार और मासूमियत की एक खूबसूरत दुनिया में पहुँच गए हैं।

मेरे लिए यह गीत, एक और कारण से विशेष है — मेरी बेटी। इसके पहले मैंने 'जंगल बुक २' नामक बच्चों का एक एलबम लिखा था। पर मैंने बच्चों के विषय में कभी इतनी तीव्रता से नहीं सोचा था, न ही उनसे जुड़े इतने बेशुमार भावों का अनुभव किया था, जब तक कि मेरी बेटी मेरे जीवन में नहीं आई।

तब वह मात्र अठारह महीनों की थी। बचपन से जुड़े कोमल रूपक जो मैं सोच सका और अनेक शब्द जिनका मैं प्रयोग कर पाया, वे सिर्फ़ इसलिए क्योंकि मैं भोलेपन, मासूमियत, खनकती हँसी और निर्मलता के एक जादुई संसार का वासी था। मैं यह गीत अपनी बेटी ऐशान्या को समर्पित करता हूँ।

खोलो खोलो

खोलो खोलो दरवाज़े
पर्दे करो किनारे
खूँटे से बंधी है हवा
मिल के छुड़ाओ सारे

आ जाओ पतंग ले के
अपने ही रंग ले के
आसमाँ का शामियाना
आज हमें है सजाना

क्यूँ इस क़दर, हैरान तू
मौसम का है, मेहमान तू
दुनिया सजी तेरे लिए
खुद को ज़रा पहचान तू

तू धूप है, झम से बिखर
तू है नदी, ओ बेख़बर
बह चल कहीं, उड़ चल कहीं
दिल खुश जहाँ
तेरी तो मंज़िल है वहीं
क्यूँ इस क़दर, हैरान तू
मौसम का है, मेहमान तू

बासी ज़िन्दगी उदासी
ताज़ी हँसने को राज़ी
गरमा-गरम सारी
अभी अभी है उतारी
ज़िन्दगी तो है बताशा
मीठी-मीठी सी है आशा
चख ले, रख ले, हथेली से ढक
ले इसे

तुझमें अगर प्यास है
बारिश का घर भी पास है
रोके तुझे कोई क्यूँ भला
संग-संग तेरे आकाश है

तू धूप है, झम से बिखर
तू है नदी, ओ बेखबर
बह चल कहीं, उड़ चल कहीं
दिल खुश जहाँ
तेरी तो मंज़िल है वहीं

खुल गया, आसमाँ का रस्ता
देखो खुल गया
मिल गया, खो गया था जो सितारा
मिल गया, मिल गया
रोशन हुई सारी ज़मीं
जगमग हुआ सारा जहाँ
उड़ने को तू आज़ाद है
बंधन कोई अब है कहाँ

तू धूप है, झम से बिखर
तू है नदी, ओ बेखबर
बह चल कहीं, उड़ चल कहीं
दिल खुश जहाँ
तेरी तो मंज़िल है वहीं

गीत यात्रा

यह गीत एक बहुत अनूठी स्थिति के लिए था. फ़िल्म में यह उस समय के लिए था, जब केंद्रीय

पात्र ईशान, जो कि एक बालक है, अपने स्कूल से भाग जाता है।

मैंने इस स्थिति के लिए लिखना शुरू किया पर आमिर को लगा कि यह गीत फ़िल्म के क्लाइमैक्स के लिए अधिक उपयुक्त रहेगा। पहले लिखे गए गीत की गति तेज़ थी और वह मस्ती भरा था।

आज़ादी से संबंधित गीत, मेरे अंदर से स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होते हैं। एक व्यक्ति जो मेरे कार्य को पसंद करता है (किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो आपकी कला क़द्रदान है, फैन शब्द का प्रयोग करना मुझे थोड़ा अशिष्ट लगता है) उसने एक बार मुझसे कहा था कि उसे अक्सर मेरे कामों में पहाड़ों के बीच होने की ललक, प्रकृति के करीब रहने की चाहत नज़र आती है।

वह सही था।

मेरी आत्मा पहाड़ों में बसती है। चीड़ की पत्तियों पर फिसलना, नदी के किनारे, पेड़ों के तले, नंगे पाँवों के नीचे नरम-नरम घास....मेरे लिए आज़ादी के दृश्य ये ही हैं।

मैं कई बार सोचता हूँ, आज़ादी की चाह और इसकी तड़प को दर्शाते इतने गीत क्यों हैं? शायद इसलिए, क्योंकि अपने रोज़ाना के जीवन में हम इतने उलझे हुए हैं कि आज़ादी हम में से अधिकतर लोगों की पहुँच से दूर है। हम सबकी अपनी-अपनी बेड़ियाँ हैं, बंधन के क्षण हैं, और हम सभी इस क़ैद से छुटकारा पाना चाहते हैं।

इस गीत में मैंने आम तौर पर प्रयोग किए जाने वाले 'छम' शब्द की जगह 'झम' (तू धूप है, झम से बिखर) का प्रयोग किया। 'झम' एक पहाड़ी शब्द है। धूप जब पहाड़ी से घाटी में कूदती है, मेरे लिए यह उसका वर्णन करता है।

जिन लोगों ने पहाड़ों में समय बिताया है, वे इस 'धूप की कूद' से परिचित होंगे। धूप-छाँव का यह खेल विस्मयकारी है, मैंने सुबह से लेकर शाम तक, एक दर्शक की भाँति घंटों इसे निहारा है। कई बार, मैंने सूरज का पीछा भी किया है, ताकि एक पहाड़ी से दूसरे पहाड़ी पर कूदती उसकी रोशनी के अलग-अलग नज़ारों को देख सकूँ।

अब जब मैं सोचता हूँ, गीत को क़ैद से भाग निकलने की स्थिति के स्थान पर फ़िल्म के अंत में मुक्त होने की स्थिति में प्रयोग करने का निर्णय बिल्कुल सही था। यह इसी स्थान पर सबसे उपयुक्त था।

मुझे याद है वह समय, जब मैंने यह गीत टीम के अन्य सदस्यों को सुनाया था। अमोल गुप्ते की आँखें, उनके मन के हर भाव को तुरंत व्यक्त कर देती हैं। यदि कोई विचार या वाक्य अमोल को छू जाता है, तो उनकी आँखें, एक क्षण से भी कम समय में भर आती हैं। वे कोमल भावनाओं की क़द्र करते हैं। मैं उस दिन उन्हें पूरा गीत सुना ही नहीं पाया, वे बार-बार भाव-विह्वल हो जाते।

आख़िरकार, उन्होंने न सिर्फ़ 'तारे ज़मीं पर' की कहानी को लिखा है, पर एक तरह से इसे जीया भी है।

बम बम बोले

देखो देखो, क्या वो पेड़ है
चादर ओढ़े या खड़ा कोई
बारिश है या आसमान ने
छोड़ दिए हैं नल खुले कहीं
हम जैसे देखें ये जहाँ है वैसा ही
जैसी नज़र अपनी

खुल के सोचें आओ
पंख ज़रा फैलाओ
रंग नए बिखराओ
चलो चलो चलो चलो
नए ख़्वाब बुन लें

बम बम बोले
मस्ती में डोले
बम बम बोले
मस्ती में तू डोल रे

भला मछलियाँ भी क्यों
उड़ती नहीं
ऐसे भी सोचो ना
सोचो सूरज रोज़ नहाए
या बाल भिगो के ये बुद्धू
बनाए हमें
ये सारे तारे टिमटिमाएँ
या फिर गुस्से में कुछ
बड़बड़ाते रहें

खुल के सोचें आओ
पंख ज़रा फैलाओ
रंग नए बिखराओ

चलो चलो चलो चलो
नए ख्वाब बुन लें

बम बम बोले
मस्ती में डोले
बम बम बोले
मस्ती में तू डोल रे

ओ रट-रट के क्यों टैंकर फुल्ल
आँखें बंद तो डब्बा गुल
ओए बंद दरवाज़े खोल रे
हो जा बिंदास बोल रे

मैं भी हूँ
तू भी है
ओ मैं भी तू भी
हम सब मिल के
बम चिक बम बम चिक...

ऐसी रंगों भरी अपनी दुनिया
है क्यों
सोचो तो सोचो ना
प्यार से चुन के इन रंगों को
किसी ने सजाया ये संसार है
जो इतनी सुंदर है अपनी दुनिया
ऊपरवाला क्या कोई कलाकार है

खुल के सोचें आओ
पंख ज़रा फैलाओ
रंग नए बिखराओ
चलो चलो चलो चलो
नए ख्वाब बुन लें

बम बम बोले
मस्ती में डोले
बम बम बोले
मस्ती में तू डोल रे

बम बम बोले
मस्ती में डोले
बम बम बोले
मस्ती में तू डोल रे
ओए बम बम बोले

गीत यात्रा

इस गीत का एक विशेष उद्देश्य था — एक शिक्षक अपने छात्रों से कला और चित्रकला के विषय में बात कर रहा है, पर छुपकर, नए तरीकों से सोचने और चीज़ों को महसूस करने के लिए, अपने दिलो-दिमाग के दरवाज़े खोलने के लिए प्रेरित कर रहा है।

‘देखो, देखो, क्या वो पेड़ है, चादर ओढ़े या खड़ा कोई?’ यह खेल मैं अपनी बेटी के साथ कई बार खेलता रहा हूँ और अपने बचपन में भी मुझे इसमें बहुत आनंद आता था। बादलों को देखना, उनमें अलग-अलग आकृतियाँ ढूँढना, उनमें चेहरों की कल्पना करना, सूरज और पेड़ों के बीच की अठखेलियाँ देखना, ये वे बातें हैं जिनका मज़ा हम सभी ने अपने बचपन में लिया है।

मुझे लगता है कि यह गीत बच्चों की अपेक्षा, उम्र में बड़े लोगों के लिए अधिक है — अपने पूर्वाग्रहों और घिसी-पिटी धारणाओं को छोड़ने का आग्रह करता हुआ।

बड़े लोगों के उलट, बच्चे पहले से ही निश्चित नहीं कर लेते कि वे क्या देखने वाले हैं। बहुत छोटे बच्चों का चीज़ों को देखने का ढंग तो वाकई निराला होता है। ‘तो क्या अगर आप इसे पेड़ कहते हैं? मुझे तो यह एक झबरीले बालों वाला एक लंबा आदमी दिखाई देता है’। वर्णन करने के उनके तरीके असाधारण होते हैं।

मुझे याद है, मेरे मित्र की नन्ही सी भतीजी ने मुझे बताया था कि एक बार वह अपने माता-पिता के साथ, एक पुराने, खाली पड़े घर में गई थी। जब उसने ज़ोर से बात की तो घर ने भी ‘वापस चिल्लाकर जवाब दिया’। वह गूँज अथवा प्रतिध्वनि का वर्णन कर रही थी, पर गौर कीजिए बच्चों का चीज़ों को देखने का नज़रिया और उसे अभिव्यक्त करने का तरीका कितना

अनूठा होता है.

वयस्क लोग चीज़ों को स्वाभाविक रूप से नहीं देख पाते. उनकी नज़रें कुछ थकी-मांदी होती हैं. तो इस गीत में मैंने एक बच्चे की नज़र से दुनिया देखने का विषय लिया — 'तुम जैसे देखो ये जहाँ है वैसा ही, जैसी नज़र अपनी'. देखने का नज़रिया और उद्देश्य, ये ही तो वस्तुओं को उनका रंग-रूप और स्वरूप देते हैं.

कई बार मैं, जिन तरीकों से हमारे स्कूलों में पढ़ाया जाता है, उन पर गहन विचार करता हूँ. हम बच्चों को बहुत जल्दी तर्क करना सिखा देते हैं. पर हम उनकी कल्पनाशीलता को अवरुद्ध कर देते हैं, उसके प्रवाह को रोक देते हैं.

मेरा मानना है कि काव्य और साहित्य सिर्फ स्कूलों और कॉलेजों में ही नहीं सिखाए जाने चाहिए बल्कि इंजीनियरिंग और बिज़नेस कॉलेजों में भी इन्हें स्थान मिलना चाहिए.

कितनी ही बार मैंने सरकारी अधिकारियों, वित्तीय प्रमुखों, नेताओं और व्यवसाय के मुखियाओं को अत्यंत महत्वपूर्ण और कठिन सभाओं में अपनी बात रखने के लिए काव्य और साहित्य का सहारा लेते देखा है. मैं समझने में असमर्थ हूँ, यदि काव्य और साहित्य प्रेरणा के स्रोत हैं और शुष्क तथ्यों के परे जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करते हैं, तो क्या इन्हें हमारे पाठ्यक्रमों में एक महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया जाना चाहिए, क्या एक सकारात्मक जीवनधारा के रूप में इनके संस्कार नहीं डाले जाने चाहिए? यह एक विचार करने योग्य बात है.

माँ

मैं कभी बतलाता नहीं
पर अँधेरे से डरता हूँ मैं माँ
यूँ तो मैं दिखलाता नहीं
तेरी परवाह करता हूँ मैं माँ
तुझे सब है पता, है न माँ
तुझे सब है पता, मेरी माँ

भीड़ में यूँ ना छोड़ो मुझे
घर लौट के भी आ ना पाऊँ माँ
भेज ना इतना दूर मुझको तू
याद भी तुझको आ ना पाऊँ माँ
क्या इतना बुरा हूँ मैं माँ
क्या इतना बुरा, मेरी माँ

जब भी कभी पापा मुझे
जो ज़ोर से झूला झुलाते हैं माँ
मेरी नज़र ढूँढे तुझे
सोचूँ यही, तू आ के थामेगी माँ

उनसे मैं ये कहता नहीं
पर मैं सहम जाता हूँ माँ
चेहरे पे आने देता नहीं
दिल ही दिल में घबराता हूँ माँ
तुझे सब है पता, है न माँ
तुझे सब है पता, मेरी माँ

मैं कभी बतलाता नहीं
पर अँधेरे से डरता हूँ मैं माँ
यूँ तो मैं दिखलाता नहीं
तेरी परवाह करता हूँ मैं माँ
तुझे सब है पता, है न माँ

तुझे सब है पता, मेरी माँ

गीत यात्रा

‘माँ’ लिखने की दृष्टि से मेरे कठिनतम गीतों में से एक था. कागज़ पर इसे सिर्फ़ ‘अलगाव का गीत’ कहा गया था — माता-पिता अपने बच्चे को बोर्डिंग स्कूल में छोड़ रहे हैं.

स्थिति मर्मस्पर्शी थी, पर मेरा प्रयास कुछ ऐसा लिखने का था जो स्थिति के परे जाए, जो स्थिति को और भी अधिक परतें व आयम प्रदान कर सके. यदि बात सिर्फ़ वर्णन करने की हो, तो यह अपेक्षाकृत आसान होता है. इसमें सिर्फ़ अपने शिल्प पर अच्छी पकड़ की आवश्यकता होती है. पर यह मुझे आत्मिक संतुष्टि नहीं देता.

पता नहीं कैसे, पर मैंने इस गीत में अपने बचपन के डरों से मिलने का निर्णय लिया. चूँकि विषय ‘माँ’ था, मैं अपने अंतर्मन को पूरी तरह खोलकर रख सका और स्वीकार कर सका कि एक बच्चे के रूप में, मैं अँधेरे से डरता था, अकेले छोड़ दिए जाने से घबराता था.

गीत के अंतरे में, मैंने पिता के साथ संबंध को भी छुआ, जो एक बच्चे के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है. पर माँ से लिपटने की चाहत और ज़रूरत, सदैव बनी रहती है.

एक महत्वपूर्ण पाठ जो मैंने इस गीत के माध्यम से सीखा वह यह कि हम जैसा महसूस करते हैं, बहुत से अन्य लोग भी उसी तरह महसूस करते हैं. कई अहसास, समान होते हैं.

मुझे ऐसा लग रहा था कि इस गीत में अपनी भावनाओं का वर्णन करते हुए मैं कुछ अधिक ही व्यक्तिगत हो रहा था. पर मेरे बचपन के डर और मेरी आशंकाएँ, इतने अधिक लोगों से मिलती हैं, यह जानकर मैं दंग रह गया! मैं उस ८० वर्षीय वृद्ध व्यक्ति को कभी नहीं भूल सकता, जिसने मुझे थामा और रोने लगा, कहकर कि यह गीत सुनकर उसे महसूस हुआ जैसे वह एक छोटा बच्चा है और अपनी माँ को ढूँढ रहा है.

मुझे बाद में ज्ञात हुआ कि इस गीत ने सबको समान रूप से छुआ, फिर चाहे माँ हो या बच्चे.

एक सहकर्मी ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ फ़िल्म देखने गया था, और जब यह गीत पर्दे पर आया, तो वह अपनी माँ को, जो उससे तीन सीट छोड़कर बैठी थी, गले लगाने से स्वयं को रोक नहीं सका. एक माँ और बच्चे के बीच का रिश्ता शब्दों के परे होता है.

शंकर महादेवन ने इस गीत को बहुत खूबसूरती से साधा है, पूरी दक्षता और सरलता के साथ इसे निभाया है. कोई आश्चर्य नहीं कि इस गीत ने असंख्य आँखों और दिलों को भिगोया है.

जमे रहो

कस के जूता कस के बेल्ट
खोंस के अंदर अपनी शर्ट
मंज़िल को चली सवारी
कंधों पर ज़िम्मेदारी
हाथ में फ़ाइल, मन में दम
मीलों मील चलेंगे हम
हर मुश्किल से टकराएँगे
टस से मस ना होंगे हम

दुनिया का नारा 'जमे रहो'
मंज़िल का इशारा 'जमे रहो'

ये सोते भी हैं अटेन्शन
आगे रहने की है टेन्शन
मेहनत इनको प्यारी हैं
एकदम आज़ाकारी हैं

ये ऑमलेट पर ही जीते हैं
ये टॉनिक सारे पीते हैं
वक़्त पे सोते, वक़्त पे खाते
तान के सीना बढ़ते जाते

दुनिया का नारा 'जमे रहो'
मंज़िल का इशारा 'जमे रहो'

यहाँ अलग अंदाज़ है
जैसे छिड़ता कोई साज़ है
हर काम को टाला करते हैं
ये सपने पाला करते हैं

ये हरदम सोचा करते हैं
ये खुद से पूछा करते हैं
क्यों दुनिया का नारा, 'जमे रहो'
क्यों मंज़िल का इशारा, 'जमे रहो'

ये वक़्त के कभी गुलाम नहीं
इन्हें किसी बात का ध्यान नहीं
तितली से मिलने जाते हैं
ये पेड़ों से बतियाते हैं

ये हवा बटोरा करते हैं
बारिश की बूँदें पढ़ते हैं
और आसमान के कैनवस पे
ये कलाकारियाँ करते हैं

गीत यात्रा

जब तक 'जमे रहो' लिखने की बारी आई, मैं फिल्म और उसके किरदारों में गहरे उतर चुका था. मैं ईशान और अन्य लोगों की दुनिया का अंतर, स्पष्ट रूप से देख पा रहा था.

मैं जीवन के कुछ बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोणों को देख सकता था, व्यावहारिक दुनिया की निर्मम दिनचर्या और व्यवहारों में अपना स्थान बनाने के, एक होनहार और कल्पनाशील बालक के संघर्षों को महसूस कर सकता था, तर्क और भावनाओं के मध्य के द्वंद्व का अनुभव कर सकता था.

यही टकराव मैंने इस गीत में दर्शाने का प्रयास किया है, जो मेरे लिए बहुत कठिन नहीं था.

मैंने ईशान के विश्व से जुड़े अंश, एकांत में लिखे. पर अन्य लोगों के लिए लेखन, भीड़ में किया. ऐसा मैं अक्सर किया करता हूँ. जब मुझे आंतरिक विश्व की अपेक्षा बाहरी विश्व से अधिक ग्रहण करना होता है, आत्मावलोकनों से अधिक संवादों से लेना होता है, तो मैं भीड़ भरे स्थानों पर लिखता हूँ.

इस गीत का आधा हिस्सा, आमिर, शंकर, एहसान और लॉय की संगत में लिखा गया. कहना होगा, इस गीत को बनाते हुए, जमकर मज़ा आया.

ब्रेक के बाद

धूप के मकान

बारिश है खयालों में
सब धुल जाएगा
रोशन रास्ता नया इक खुल जाएगा
बह जाएगा तिनका तिनका
कल का सिलसिला, चलो
मिल जाएगा और इक हसीन
क्राफ़िला, चलो

धूप के मकान सा ये है सफ़र
ढलान सा ये मोड़ मेहरबान
सा है ये
धूप के मकान सा ये है सफ़र
ढलान सा ये मोड़ मेहरबान
सा है ये

छत टपकती है कभी एहसास की
याद आती है पुरानी प्यास की
पर नए-नए बादल बरसकर
झूमते हैं
बूँद की लड़ियों से माथा
चूमते हैं
भीगने की ये घड़ी है

एक नई रुत संग खड़ी है
बात छोटी पर बड़ी है ये
धूप के मकान सा ये है सफ़र

ढलान सा ये मोड़ मेहरबान
सा है ये
धूप के मकान सा ये है सफ़र
ढलान सा ये मोड़ मेहरबान
सा है ये

कितनी ऊँची शाख पे
खुशियों के पल
फिर भी खुशबू तोड़ ली
हमने उछल
हाँ काँच का सामान थे और
गिर गए हम
जोड़कर खुद को बनाने
फिर गए हम
दूर दरिया के किनारे
ज़िन्दगी करती इशारे
आसमान पे हैं नए तारे

धूप के मकान सा ये है सफ़र
ढलान सा ये मोड़ मेहरबान
सा है ये

गीत यात्रा

प्यार से बाहर आने, आगे बढ़ने या 'मूविंग ऑन' का मैं मुरीद नहीं. मुझे लगता है कि आपको

प्यार में बने रहना होता है. पर यह ज़िंदगी की कड़वी सच्चाई है कि कभी-कभी चीज़ें, आपकी अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो पातीं.

‘ज़िंदगी’ और ‘जीना’ इस गीत का सार है, पर उसी समय, यह गीत विचार में भी मग्न है. पिछले को सम्मान दिए बिना, जो था उसके विचारों से संघर्ष किए बिना, स्मृतियों और साझी भावनाओं की तहों से अपनी रूमानी धारणाओं को आज़ाद करने का प्रयास किए बिना, मैं अगले का प्रशंसा गान नहीं गा सकता.

‘बारिश है खयालों में’ यह विचार एक नई शुरुआत की ओर इशारा करता है. पर फिर ‘छत टपकती है अहसास की’, और हम अतीत को अपनी चेतना में दबे पाँव आने से नहीं रोक पाते.

मैंने निराशा से उत्पन्न कड़वेपन और अन्य नकारात्मक विचारों से बचने का प्रयास किया है. मैं उम्मीदों का राही हूँ, पर आपका अतीत भी आप ही का हिस्सा होता है, इसे बेड़ी क्यों माना जाए. यह आप ही का विस्तार है, जो आपके नए अस्तित्व के साथ मिलकर रहेगा. एक व्यक्ति के रूप में यह आपको कुछ कम नहीं करता, बल्कि आपकी गहराई को और बढ़ाता ही है.

दूरियाँ हैं ज़रूरी

थोड़ी-थोड़ी गुज़रें अगर कभी
ताज़ा सी हवाएँ
सटे-सटे से ये रिश्ते
अपनी बाँहों को फैलाएँ
मेरा मन तो बस
गुनगुनाना चाहे
उसका मन खुल के
गीत गाना चाहे
मुस्कुराऊँ मैं वो
खिलखिलाना चाहे
हैं ज़िंदी ये बड़ी मजबूरियाँ भी

दूरियाँ भी हैं ज़रूरी
भी हैं ज़रूरी
ज़रूरी हैं ये दूरियाँ
दूरियाँ भी हैं ज़रूरी
भी हैं ज़रूरी
ज़रूरी हैं ये दूरियाँ

ज़्यादा नज़दीकियों में
दूरियों के होते हैं इशारे
लहरों को चखना ना
मीठे नहीं पानी हैं ये खारे
लौ कहे, मेरे पास तुम ना आना
दूर से, अच्छा है टिमटिमाना

वर्ना आग में होगा जलते जाना
हैं ज़िंदी ये बड़ी मजबूरियाँ भी

दूरियाँ भी हैं ज़रूरी
भी हैं ज़रूरी

ज़रूरी हैं ये दूरियाँ
दूरियाँ भी हैं ज़रूरी
भी हैं ज़रूरी
ज़रूरी हैं ये दूरियाँ

मैं तो ऐसी बारिश हूँ
जो टीन की छत पे कूद के बरसे
वो फुहार है धीमी रुत की
बरस न पाए, शोर के डर से
दोनों बरसें, पर संग-संग
कहाँ हैं
थोड़ी दूरी से ज़िन्दगी आसाँ है
मेरी दुनिया और उसका भी
जहाँ है
हैं ज़िद्दी ये बड़ी मजबूरियाँ भी

दूरियाँ भी हैं ज़रूरी
भी हैं ज़रूरी
ज़रूरी हैं ये दूरियाँ

गीत यात्रा

मुझे अपनी एक कविता विशेष रूप से प्रिय थी और एक शाम, मैंने इसे कुणाल कोहली को सुनाई, जो 'ब्रेक के बाद' फ़िल्म का निर्माण कर रहे थे.

कविता कुछ इस प्रकार थी: प्यार की साँस घुट न जाए कहीं, इसलिए दूरियाँ ज़रूरी हैं.

उन्हें इस विचार से प्यार हो गया और उन्होंने मुझे इसे एक गीत में बदलने का आग्रह किया. मैं इसके लिए राज़ी नहीं था क्योंकि यह कविता इस हल्की-फुल्की फ़िल्म के लिए कुछ अधिक गंभीर थी. पर कुणाल कहाँ हार मानने वाले थे, और अंततः मुझे इसे गीत में ढालना पड़ा.

यह गीत रिश्तों में ज़रा सी दूरी की बात करता है, ताकि रिश्ते साँस ले सकें. मैंने कविता की संरचना में बदलाव किया, कठिन शब्दों के स्थान पर रोज़मर्रा के शब्दों का प्रयोग किया. भाषा

की शुचिता कायम रखना, साथ ही इसे समझने में भी आसान बनाए रखना, अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी. कभी-कभी, एक साहित्यिक शब्द आप जो कहना चाहते हैं, उसे पूरी अचूकता के साथ व्यक्त कर सकता है, पर यह शब्द शायद तुरंत समझ में न आए या गीत की प्रकृति से मेल न खाता हो, ऐसे शब्द को बदलना बड़ा दुष्कर कार्य होता है.

एक कवि के रूप में, बिना शर्तों के प्रेम और पूर्ण समर्पण में मेरा चिरकालिक विश्वास है. पर कभी-कभी, हमारे विश्व की सच्चाई, हमें जीवन के व्यावहारिक पक्षों को भी देखने पर मजबूर कर देती है. ऐसा लगता है, मानो आज लोगों को आपस में थोड़ी दूरी की ज़रूरत है.

मेरे लिए भी इस विचार पर कार्य करना कुछ कठिन था क्योंकि मेरे आंतरिक विश्वास के अलावा, यह मेरे अंदर के कबीर और रूमी के विरुद्ध भी था — जहाँ तड़प है स्व से छुटकारा पाकर अपने प्रिय से एकाकार हो जाने की, उसमें समा जाने की, घुल जाने की. कबीर ने भी कहा है, 'प्रेम गली अति सँकरी, ता में दो न समाई'.

तो कोई कैसे दूरी की वकालत करे? यही मैंने इस गीत के माध्यम से करने का प्रयास किया है.

मैं जीयूँगा

खुली किताब सा है ये चेहरा
पर हिजाब सा है मुस्कुराना मेरा
और एक्टिंग में उस्ताद हूँ मैं
आएगा किसी को न नज़र
होगी न खबर

फर्श पे हो बिखरा जैसे पारा
फिसल रहा है ख्वाब ये हमारा
पर पैरों में उछाल ले के
ले के होंठों पे सीटियाँ
मैं जीयूँगा, मैं जीयूँगा

बीती खुशबू भुला के, गुनगुना के
मैं जीयूँगा, मैं जीयूँगा
मैं जीयूँगा
बीती खुशबू भुला के, गुनगुना के
मैं जीयूँगा

चाँद तो करेगा इशारे
और चिढ़ाएँगे मुझको तारे
पर यादों की लिहाफ़ खींच
सर ढक लूँगा मैं
छुप जाऊँगा मैं

ख्वाब के परिंदे जो पाले
किए आसमान के हवाले
उड़ने दूँगा उनको नीली-नीली सी
आज़ादियों में
मैं जीयूँगा, मैं जीयूँगा

बीती खुशबू भुला के, गुनगुना के

मैं जीयूँगा, मैं जीयूँगा
मैं जीयूँगा
बीती खुशबू भुला के, गिनगुना के
मैं जीयूँगा

पंख उम्मीदों के धूप
मैं सुखाऊँगा
मैंने धुन बदल दी है
गीत नए गाऊँगा
वैसे हवाओं संग, ध्यान तेरा
बहता रहेगा
पर मौसम चुन-चुन के रुत
नई बनाऊँगा
मैं जीयूँगा, मैं जीयूँगा

बीती खुशबू भुला के, गुनगुना के
मैं जीयूँगा, मैं जीयूँगा
मैं जीयूँगा
बीती खुशबू भुला के, गुनगुना के
भूल भुला के
गुनगुना के, भूल भुला के
गुनगुना के, मैं जीयूँगा

गीत यात्रा

यह गीत स्वयं से किया गया एक वादा है. जो लोग अपने संबंधों में या जीवन के किसी अन्य पहलू में बुरे दौर से गुज़रे हैं, वे इस गीत का मर्म समझ सकेंगे. यह गीत स्वयं को आह्वान है कि हार नहीं मानना है, चलते चले जाना है.

आज की दुनिया में, दिल के टूटने की आवाज़ें अक्सर सुनाई देती हैं. जल्दी प्यार में पड़ना और उससे भी जल्दी संबंध तोड़ लेना, आम बात हो गई है. फिर भी, चाहे कितनी ही बार क्यों न

हो जाए, संबंधों का टूटना दर्द अवश्य देता है. चाहे यह पूरी तरह तबाह न करे, पर आपको अंदर से कुछ तोड़ ज़रूर देता है.

इस विषय से जुड़े पूर्व गीतों के मुकाबले, यह गीत, रचना और बोलों में उतना तीव्र नहीं है. यह दिल टूटने के दर्द की बात करता है, पर यह दर्द जीवन के प्रवाह को नहीं रोकता.

अजब लहर

अजब लहर है, मेरी पड़ोसी
अजब से छींटे, अजब इशारे
अजब लहर है, मेरी पड़ोसी
अजब से छींटे, अजब इशारे
हैं ज़िन्दगी के अजब से रंग ढंग
अजब सी धुन में मुझे पुकारे
अजब लहर है, मेरी पड़ोसी
अजब से छींटे, अजब इशारे

ये प्यास कैसी कि पानियों को
क़रीब से बस मैं बहते देखूँ
और अपने ख़्वाबों के संग सच को
बड़े सुकूँ से मैं रहते देखूँ
अजब झरोखे से खुल गए हैं
अजब सी खिड़की, अजब नज़ारे
अजब लहर है, मेरी पड़ोसी
अजब से छींटे, अजब इशारे

निशान कल के जो रेत पे थे
उन्हें समंदर ने पी लिया है
और एक झोंके ने बाँसुरी से
गुज़र के लम्हों को जी लिया है
अजब सी बारिश ये हो रही है
बरस रहे हैं चाँद तारे
अजब लहर है, मेरी पड़ोसी
अजब से छींटे, अजब इशारे
हैं ज़िन्दगी के अजब से रंग ढंग
अजब सी धुन में मुझे पुकारे

गीत यात्रा

फ़िल्म में यह गीत, एक बड़ी अनूठी स्थिति के लिए था. एक युवा दंपति,.थोड़े समय के लिए अलग होने का निर्णय लेते हैं. हालात कुछ ऐसे बन जाते हैं कि इस ब्रेक-अप अवधि के दौरान दोनों को पड़ोसी बनकर रहना पड़ता है.

शब्दों में पिरोने के लिए यह एक बहुत अलग व दिलचस्प चुनौती थी.

यह आम स्थिति नहीं थी, जिससे अधिकतर लोग अपने को जोड़ कर देख सकते. इसके लिए मुझे एक निराली ही कविता लिखने की आवश्यकता थी. आम तौर पर मैं फ़िल्मों की स्थितियों को, जीवन की किसी स्थिति से जोड़ने का प्रयास करता हूँ और फिर उसमें अपने आंतरिक विश्वास को शामिल करता हूँ इस मामले में, इसकी संभावना कम ही थी, पर स्थिति का नयापन मुझे प्रेरित कर रहा था. इस गीत ने मुझे अनेक घिसे-पिटे दृश्यों को देखने के लिए नई आँखें दीं.

अब के सावन

अब के सावन

अब के सावन, ऐसे बरसे
बह जाए रंग, मेरी चुनर से
भीगे तन मन, जिया न तरसे
जम के बरसे ज़रा

रुत सावन की, घटा सावन की
घटा सावन की, ऐसे जम के बरसे
झड़ी बरखा की, लड़ी बूँदों की
लड़ी बूँदों की, टूट के यूँ बरसे

पहले प्यार की पहली बरखा
कैसी आस जगाए
बारिशें पीने दो मुझको
मन हरा हो जाए
प्यासी धरती, प्यासे अरमाँ
प्यासा है ये जहाँ
भीगने दो, हर गली को
भीगने दो जहाँ

अब के सावन, ऐसे बरसे
बह जाए रंग, मेरी चुनर से
भीगे तन मन, जिया न तरसे

जम के बरसे ज़रा

रुत सावन की, घटा सावन की
घटा सावन की, ऐसे जम के बरसे
झड़ी बरखा की, लड़ी बूँदों की
लड़ी बूँदों की, टूट के यूँ बरसे

लाज बदरी की बिखर के
मोती बन झर जाए
भीग जाए सजना मेरा
लौटकर घर आए
दूरियों का, नहीं ये मौसम
आज है वो कहाँ
मखमली सी, ये फुहारें
उड़ रही है यहाँ

अब के सावन, ऐसे बरसे
बह जाए रंग, मेरी चुनर से
भीगे तन मन, जिया न तरसे
जम के बरसे ज़रा

रुत सावन की
लड़ी बूँदों की
लड़ी बूँदों की, टूट के यूँ बरसे

गीत यात्रा

जब मुझे 'अब के सावन' एलबम के लिए गीत लिखने का प्रस्ताव दिया गया था, मुझे याद है मैंने

शुभाजी (शुभा मुद्गल) से पूछा था कि क्या वे वाकई एक पॉपुलर म्यूज़िक एलबम करना चाहती हैं. उनका सीधा उत्तर था, 'क्यों नहीं?'

मैं शुभाजी को काफ़ी समय से जानता हूँ और उनकी आवाज़ और संगीत प्रतिभा का अत्यंत आदर करता हूँ. वे एक मुक्त विचारों की कलाकार हैं, जो संगीत और उसके स्वरूपों को किसी बंधन में बाँधने में विश्वास नहीं रखतीं. शांतनु मोइत्रा (संगीतकार) और वर्जिन रिकॉर्ड्स के अतुल चूड़ामणि के साथ, हम एक शानदार टीम थे. एक टीम, जो एक-दूसरे के लिए बनी थी. इस प्रोजेक्ट में मैंने असाधारण आज़ादी का अनुभव किया. हम अलग-अलग विषय-वस्तुओं पर कार्य करते, अलग-अलग प्रकार के संगीत वाद्यों के साथ प्रयोग करते. सबसे बढ़कर, हमारे मध्य एक स्नेह संबंध विकसित हो गया था, जो एक-दूसरे के प्रति सम्मान और एक-दूसरे की क्षमताओं में पूर्ण विश्वास पर आधारित था.

एक छोटी सी याद जो मेरे मन में घर कर के रह गई — अपने कंप्यूटर पर हिंदी फॉन्ट्स इनस्टॉल करना. उन दिनों, हिंदी फॉन्ट्स मिलना आसान न था और मेरे कीबोर्ड पर चिपके हिंदी अक्षरों के लाल स्टिकर, आज भी मेरी यादों से जुड़े हुए हैं.

'अब के सावन' ने रिकॉर्डिंग के समय मुझे आश्चर्यचकित कर दिया था. मुझे पता था इस गीत की धुन अच्छी थी, बोल भी प्रभावी थे, पर मैंने अपेक्षा नहीं की थी कि यह इतना ऊर्जा से भरपूर बनेगा. सिर्फ़ और सिर्फ़ शुभा मुद्गल ही यह कर सकती थीं. वे एक महान गायिका हैं. संगीत उद्योग में अपने अनुभव के आधार पर, मैं आपको एक अच्छे और एक महान गायक के मध्य का अंतर बता सकता हूँ. महान गायक व गायिकाएँ, सुर और स्वर सामंजस्य के साथ-साथ, काव्य से कभी समझौता नहीं करते. वे सुनिश्चित करते हैं कि हर शब्द का अचूक उच्चारण हो ताकि गीत का विचार सुनने वाले तक ठीक पहुँच सके.

एक बढ़िया धुन, दिमाग में तुरंत दर्ज हो सकती है, पर वे विचार और शब्द ही होते हैं जो इसे एक लम्बी उम्र देते हैं.

शांतनु ने भी सुनिश्चित किया कि उनकी रचना में काव्य को पर्याप्त स्थान मिले. इसलिए तो, 'अब के सावन' का हर शब्द साफ़ सुनाई देता है और समझ आता है, गीत के इतने ऊर्जा से भरपूर होने के बावजूद.

इस गीत को लिखे बहुत समय हो गया है, पर आज भी, बरसात के किसी दिन जब आप रेडियो चलाएँगे, तो बहुत संभव है कि यह गीत आपको किसी न किसी स्टेशन पर, उमंग बरसाता मिल जाए.

सीखो ना

सीखो ना नैनों की भाषा पिया
कह रही तुमसे ये खामोशियाँ
सीखो ना पिया, लब तो ना
खोलूँगी मैं
समझो दिल की बोली
सीखो ना नैनों की भाषा पिया
कह रही तुमसे ये खामोशियाँ
सीखो ना पिया, लब तो ना
खोलूँगी मैं
समझो दिल की बोली
सीखो ना नैनों की भाषा पिया

सुनना सीखो, तुम हवा को
सन-न-न-नन-सन-न-न-नन
कहती है क्या
पढ़ना सीखो, सलवटों को
माथे पे ये बल खा के
लिखती हैं क्या
आहटों की है अपनी जुबाँ
इनमें भी है एक दास्ताँ
आहटों की है अपनी जुबाँ
इनमें भी है एक दास्ताँ
जाओ, जाओ, जाओ, जाओ
जाओ पिया

सीखो ना नैनों की भाषा पिया
कह रही तुमसे ये खामोशियाँ
सीखो ना पिया, लब तो ना
खोलूँगी मैं
समझो दिल की बोली
सीखो ना नैनों की भाषा पिया

ठहरे पानी जैसा लम्हा
छेड़ो न इसे हिल जाएँगी
गहराइयाँ
थमती साँसों के शहर में
देखो तो ज़रा बोलती हैं
क्या परछाइयाँ
कहने को अब बाक़ी है क्या
आँखों ने सब कह तो दिया
कहने को अब बाक़ी है क्या
आँखों ने सब कह तो दिया
हाँ, जाओ, जाओ, जाओ, जाओ
जाओ पिया

सीखो ना नैनों की भाषा पिया
कह रही तुमसे ये खामोशियाँ
सीखो ना पिया, लब तो ना
खोलूँगी मैं
समझो दिल की बोली
सीखो ना नैनों की भाषा पिया

गीत यात्रा

इस गीत पर मैंने दिल्ली में काम करना शुरू किया था, जहाँ मैं उस समय रहा करता था. रिकॉर्डिंग के लिए टीम मुम्बई आया करती थी. मेरा एक मित्र, जो मेरी प्रकृति से परिचित था, उसने मेरे ठहरने का प्रबंध जुहू के एक छोटे लेकिन शांत होटल में किया था. कमरा भी मेरे लिए ऐसा चुना गया था, जहाँ कम ही लोग आते-जाते थे. मैंने 'सीखो ना' गीत इसी कमरे में लिखा.

तुमरी मेरी प्रिय शैलियों में से एक है और मैंने पूर्व में भी कुछ लिखी थीं. हालाँकि, यह पूर्णतया तुमरी तो नहीं, पर इस शैली की खुशबू इस गीत में अवश्य महसूस की जा सकती है.

एक प्रेम करने वाले की सबसे गहरी अभिलाषा होती है कि उसका प्रिय उसे समझे. सिर्फ़ शब्दों के माध्यम से नहीं, वरन संवेदनाओं और कोमल भावनाओं के माध्यम से भी. मैं इसी

विचार की दिशा में आगे बढ़ा. यह गीत महिलाओं से अधिक रिश्ता रखता है, पर मुझे लगता है सूक्ष्म भावों को अपनी प्रेयसी द्वारा समझा जाए, यह पुरुषों की भी चाहत होती है.

यह एक खूबसूरत रचना है और शुभाजी की शैली के अनुरूप भी. जादू तो खैर, होना ही था.

उन दिनों, संगीत की दुनिया में कुछ अद्भुत घटित हो रहा था. किसी फिल्म के सहारे के बिना, जो आजकल आवश्यक है, बिना सितारों के, या हुक शब्दों के, यह सौम्य सी रचना, धीरे से सुनने वालों के हृदय में जा बसी और तब से बस, वहीं घर किए हुए है.

उसने कहा

बहारों को बुलाया
नदिया को भी मनाया
मिन्नतों की तब वो गुनगुनाई
फूलों को खुशबू बाँटी
शबनम को भी रचाया
सीपियों को साहिल पे बुलाया
आया वो, और उसने कहा
देखो आने पे मेरे
बदलते हैं मौसम

बहारों को बुलाया
नदिया को भी मनाया
मिन्नतों की तब वो गुनगुनाई

बारिशों को मँगाया
नखरे धूप के उठाए
और हवा को संदेसा भिजवाया
चाँदनी की चाशनी में
एक एक लम्हा भिगाया
रात को भी सुरमयी बनाया
आया वो, और उसने कहा
देखो आने पे मेरे
बदलते हैं मौसम

बहारों को बुलाया
नदिया को भी मनाया
मिन्नतों की तब वो गुनगुनाई

गीत यात्रा

‘उसने कहा’ मेरी एक कविता थी, जो शायद जीवन को लेकर मेरे अवलोकनों से उत्पन्न हुई थी. मैंने एक अहंकारी और आत्म-केन्द्रित प्रेमी के साथ संबंध की कल्पना की थी, एक ऐसा संबंध जो बराबरी पर आधारित नहीं था.

एक छोर पर था एक प्रेमिका द्वारा मृदु भावनाओं से रचा गया खूबसूरत संसार — नाजुक, ओस की बूंदों जितना निर्मल और दूसरे छोर पर था उसका प्रियतम, जिसके लिए इन सबका कोई मूल्य ही नहीं, और जो बिना एक क्षण का विचार किए, अहंकारपूर्वक फ़ैसला सुना देता है कि इस क्षण की खूबसूरती बस उसके कारण थी. प्रेम में अहंकार, दर्द और चोट का कारण बनता है. क्या यह अहंकार ही होता है या फिर प्रेम का अभाव? संबंधों में असंवेदनशीलता का कोई स्थान नहीं होना चाहिए.

कई बार मैंने, गीत में वर्णन किए गए उस पाषाण-हृदय पात्र को ढूँढा है. मैंने यहाँ किसका चित्रण किया है? शायद वह मेरा ही एक हिस्सा है जिसकी बात मैं कर रहा हूँ. हम में से कई लोग, अनेक अवसरों पर निष्ठुर हो जाते हैं. मैंने जब यह कविता लिखी थी, इसे गीत में परिवर्तित करने के विषय में सोचा भी नहीं था, पर धुन सुनने के बाद मुझे लगा कि यह विचार इसमें बहुत खूबसूरती से समा सकता है.

मेरे मित्र शांतनु मोइत्रा को मैं अक्सर उनके ‘पूना-प्रेम’ को लेकर छेड़ता रहता हूँ. सभी संगीत निर्देशकों की तरह, उन्होंने भी इस धुन को बनाते समय डमी शब्दों की सहायता ली थी. पर आम तौर पर प्रयोग किए जाने वाले अंग्रेज़ी, हिंदी या बांग्ला शब्दों से बिल्कुल अलग, जो बहुधा लेखक को संगीत निर्देशक द्वारा चाहे गए भाव का सूक्ष्म संकेत दे देते हैं, इस धुन के लिए शांतनु के डमी शब्द थे — पूना ने वायु. शब्दों की एक लड़ी, जिसका कोई अर्थ नहीं था. खैर, ‘पूना ने वायु’ से मुझे कोई खास सहायता नहीं मिली और मुझे नए सिरे से ही सोचना पड़ा. यह कविता पहले से ही मेरे दिमाग में थी और इसकी पहली पंक्ति ‘बहारों को बुलाया’ बड़ी खूबसूरती के साथ जाकर धुन का हिस्सा बन बैठी. फिर मैंने कविता को तराशना शुरू किया. मैं कविता के विचार को, इस रचना के अनुरूप बनाने के लिए जी जान से जुट गया और इस तरह ‘उसने कहा’ का जन्म हुआ.

भाई रे

भाई रे

रिश्तों की डगर है मुश्किल
ऐसे न मिलेगी मंज़िल
चलना तू संभल-संभल के
डोर ऐसी जोड़ना जो गाँठ
मन की खोले
एक रिश्ता जो तेरे दिल का
कोना छू ले
काँच सा नाजुक नहीं
शीशे जैसा साफ़
भाई रे

रिश्ता जो चाहे रूठ जाए
पर मनाने आए
आँखों में हो सीलन मगर
मुस्कुराने आए
पत्तों सा न उड़ जाए
शामों सा न ढल जाए
बुझते हुए रास्तों पे
उम्मीद सा जल जाए
फूल सा मुरझाए ना
खुशबू की हो बात
भाई रे...

रिश्ता वो जिसमें दूरियाँ हो
साँस आए जाए
तेरा भी अपना गीत हो
वो भी कोई गीत गाए
खुद को मिटाना न चाहे
तुझको बदलना न चाहे
जैसा भी है तू तुझको
वैसे ही वो अपनाए
हो ना अधियारा घना

रात का हो ख्वाब

गीत यात्रा

किसी भी रिश्ते में, वैयक्तिकता अथवा स्वयं का भाव बनाए रखना आवश्यक है. मैं इसी विषय की बारीकियों का प्रतीकों के माध्यम से अन्वेषण करना चाहता था. मैंने विभिन्न प्रतीकों के लिए अलग-अलग अर्थ ढूँढने का प्रयास किया था. उदाहरण के लिए, मैं रिश्तों को साफ़ और पारदर्शी बनाना चाहता था, पर काँच की तरह नाजुक और टूटने योग्य नहीं. मैंने एक ही प्रतीक के दो अर्थों का प्रयोग कर रिश्तों की व्याख्या करने का प्रयास किया. शांतनु की खूबसूरत रचना ने भी मुझे बाउल शैली में लिखने का अवसर दिया.

‘भाई रे’ एक पद के रूप में जादुई है. हिंदी काव्य में अनेक ऐसे सुंदर पद हैं, जैसे ‘साधो रे’, ‘सखी रे’ आदि. यह कितनी विस्मयकारक बात है कि सुनने वालों को आप किस प्रकार संबोधित करते हैं, उससे लेखन की शैली बदल जाती है — भक्ति से प्रेम में, प्रेम से दार्शनिकता में. हिंदी काव्य से परिचित होने के कारण, यह मेरे लिए जानी-पहचानी डगर थी. कुछ गीत, व्यक्तिगत रूप से आपको छूते हैं. यह एक ऐसा ही गीत है और मैं इसे अक्सर सुनता हूँ. शुभा मुद्गल ने इसे अत्यंत भावपूर्ण तरीके से गाया है.

सपना देखा है मैंने

मौसम गुलाल ले के
दरवाज़े मेरे आए
मिश्री सी बात हवाएँ
कानों में कह जाएँ
बादलों की रुई वाला तकिया
लिए सिरहाने
दादी की थपकी और क्रिस्से
नए पुराने

सपना देखा है मैंने
मैंने भी देखा है सपना
सपना देखा है मैंने
मैंने देखा सपना

मेरी भी चोटों को फू-फू
कोई बुझाए
मेरा भी आँसू किसी हथेली पर
रुक जाए
मैं भी उंगली मोटी सी थामूँ
कोई कस के
मेरी भी हर ज़िद को मान ले
कोई हँस के

सपना देखा है मैंने
मैंने भी देखा है सपना

सपना देखा है मैंने
मैंने देखा सपना

काला टीका माथे पे प्यार से
कोई लगाए
मुझको भी नई शरारत करना
कोई सिखाए
मेरा खोया सा बचपन कोई
वापस लाए
मेरे भी नाम को छोटा कर के
कोई बुलाए

सपना देखा है मैंने
मैंने भी देखा है सपना

गीत यात्रा

यह एक छोटा सा विचार था, पर इसने मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव डाला — जो आपको प्यार करता है, वह आपका नाम छोटा कर के आपको बुलाता है. अक्सर जब हम अपने प्रिय व्यक्ति को आवाज़ लगाते हैं या उसे संबोधित करते हैं, तो हम उसके निकनेम अथवा प्यार के नाम का प्रयोग करते हैं. यह नाम बहुत ही व्यक्तिगत होता है, व्यक्ति के गुणों के अनुरूप और लाड़ से भरपूर.

सामाजिक संदर्भ में, जब आप ऐसे बच्चों को देखते हैं जो अपने माता-पिता या अभिभावकों के प्रेम और देखभाल के बगैर बड़े हो रहे हैं, तब आपको बोध होता है कि उनके सामने अनेक बड़ी समस्याएँ तो रहती ही हैं, पर इसके अलावा एक छोटा सा खाली स्थान भी उनके दिलों में आकार ले लेता है जो शायद कभी भी नहीं भर सकेगा. यह मेरे हृदय को द्रवित कर देता है. कोई कहेगा, ऐसे बच्चों का छोटा नाम होता है — छोटू. पर यह अत्यंत अविशेष है, इसमें अपनेपन का भाव नहीं, और मेरे अनुसार यह और भी दुखद है.

मेरा खोया सा बचपन कोई वापस लाए

मेरे भी नाम को छोटा कर के कोई बुलाए
मैं भी उँगली मोटी सी थामूँ कोई कस के
मेरी भी हर ज़िद को मान ले कोई हँस के

कुछ हद तक, यह गीत जितना वंचित व्यक्तियों के लिए है, उतना ही हम में से सौभाग्यशाली लोगों के लिए भी. यह गीत, हमें जो मिला है उसके मूल्य का बोध कराता है, अहसास दिलाता है कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें इतना प्रेम मिला है, और हमें इसे बाँटना चाहिए.

‘सपना देखा है’, यह गीत मैंने एक एनजीओ के लिए लिखा था. इस गीत के वीडियो का फ़िल्मांकन बहुत खूबसूरती के साथ किया गया था और मैं सोशल मीडिया व डिजिटल विश्व का आभारी हूँ कि उनके कारण ही यह गीत आज भी सुलभ है और जीवंत भी. मन में आशा है कि यह गीत और इसका विचार अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे, और अनेक बच्चों के जीवन में, उनके सपनों से भी सुंदर सुबह ला सके.

मन के मंजीरे

झील

मैं झील हूँ, उकता गई हूँ
अब चाहती हूँ बहना
बौरा गई हूँ
जो भी यहाँ आता है
खामोशियाँ लाता है
सुलझे हुए लोगों से
तंग आ गई हूँ

उस रोज़ एक लड़की
मुझे जगा रही थी
चुन-चुन के गोल पत्थर
लहरें बना रही थी
कुछ उँगलियाँ उठी
और खामोश हो गई वो
बल खा रही थी मैं
अब ग़श खा गई हूँ

इस चाँद को तो देखो
मुझ में ही झाँकता है
अपने लबों को सीकर
हर रात काटता है
कमबख्त ने कभी भी

एक बात तक नहीं की
धरती की अंजुली में
घबरा गई हूँ
मैं झील हूँ

पानी का एक सच है
वो सच है बहते जाना
रस्तों को छोड़ देना
रस्ते नए बनाना
चाहा नहीं था मैंने
रोकी गई हूँ
मैं झील हूँ, उकता गई हूँ

गीत यात्रा

‘मन के मंजीरे’ प्रोजेक्ट का उद्देश्य था महिलाओं के स्वप्नों को स्वर देना. ब्रेकथ्रू नामक एक एनजीओ, महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए कार्य कर रहा था. उन्होंने यह गीत लिखने के लिए मुझसे संपर्क किया और हमारे देश में महिलाओं की स्थिति से जुड़े सारे तथ्य और आँकड़े मुझे उपलब्ध कराए व नीतियों में बदलाव की आवश्यकता के बारे में बताया.

लोगों तक एक बहुत स्पष्ट संदेश पहुँचाना था. यह एक कम्युनिकेशन कैम्पेन की तरह अधिक था, पर चुनौती थी एक संगीत एलबम तैयार करने की.

जब मैंने उन तथ्यों और आँकड़ों के परे जाकर अपने आसपास की महिलाओं के जीवन को गौर से देखा — मेरी नानी, माँ, बहनें, पत्नी, सहकर्मी, तब जाकर मुझे लिखने की प्रेरणा मिली — अनेक कल्पनाएँ, विचारों की श्रंखला और भाव उत्पन्न होना शुरू हुए. ये सच्ची और जीवंत भावनाएँ थीं. एक पुरुष के लिए,

एक महिला की दृष्टि से एलबम लिखना कुछ विचित्र बात थी, पर मुझे यह महसूस ही नहीं हुआ. यह एलबम लिखते समय मैं एक ध्यान समान अवस्था में था, पूरी तरह उसमें डूबा हुआ, विचारों से एकाकार.

‘मैं झील हूँ’ मेरा लिखा पहला गीत था. मेरे विचार से झील का प्रतीक, एक महिला क्या महसूस करती होगी, यह अच्छी तरह से अभिव्यक्त करता है — विवश, सीमाओं के अंतर्गत,

दायरों में कैद. मैं यह विचार संप्रेषित करना चाहता था कि कैसे एक झील सुंदर, शांत और निर्मल दिखती है, पर मन में शायद एक नदी की तरह मुक्त बहने की अभिलाषा संजोए रहती है. मैं इस विचार की धारा में बहता गया और 'झील' गीत अस्तित्व में आया.

मुक्त होने की, बहने की, बाधाओं के परे जाकर, उनसे लड़कर, अपना स्वयं का पथ निर्मित करने की, प्रत्येक क्षण में व्याप्त जीवन को जीने की अभिलाषाओं को यह गीत स्वर देता है.

पानी का एक सच है, वो सच है बहते जाना
रस्तों को छोड़ देना, रस्ते नए बनाना.

इंतज़ार

रात के पहरेंदार की सीटी
साथ हवा के सैर को निकली
जागते रहना, जागते रहना
रस्तों से आवाज़ें गुज़रीं
और हँस के मैं खुद से बोली
जन्मों से मैं जाग रही हूँ
इंतज़ार को साध रही हूँ
कोई तो आए, कोई तो बोले
तू सो जा एक बार
इंतज़ार, इंतज़ार
बोलो कब तक करूँ इंतज़ार

सुबह-सुबह आँगन में अपने
सीले ख़्वाब सुखाती हूँ मैं
कानों में खुद डाल के उँगली
ऊँचे सुर में गाती हूँ मैं
शाख़ गुलमोहर की हसरत से
कितनी बार हिलाती हूँ मैं
कभी तो ख़ुशबू से भर जाए
ये दामन एक बार
इंतज़ार, इंतज़ार
बोलो कब तक करूँ इंतज़ार

पहले थोड़ा जिया जलाया
फिर आँगन में दिया जलाया
नरम घास पर चल कर देखा
एक बुलबुल को पास बुलाया
और उसने कानों में गाया
आएगा वह धूप का टुकड़ा
एक दिन मेरे द्वार
इंतज़ार, इंतज़ार
जिसका मुझे इंतज़ार

गीत यात्रा

इस एलबम के कई गीत पहले लिखे गए, उनकी धुन बाद में बनाई गई.

‘इंतज़ार’ एक ऐसा ही गीत था. मुझे याद है, मैंने यह गीत एक ही बैठक में लिख लिया था. मैं निश्चित नहीं था कि शांतनु गीत को इसी प्रकार संगीतबद्ध करना चाहेंगे. पर अनेक संगीत निर्देशकों से अलग, जो चुनौतियाँ लेना पसंद नहीं करते, शांतनु को काव्य को संगीतबद्ध करने में आनंद आता है.

यह गीत मैंने एक प्रकार के रिवर्स गियर में लिखा था. मैंने निश्चित कर लिया था कि ‘मैं कब तक करूँ इंतज़ार’ इस विचार पर पहुँचना चाहता हूँ, और फिर अपनी लिखने की यात्रा शुरू की.

‘रात के पहरेदार की सीटी....जन्मों से मैं जाग रही हूँ, इंतज़ार को साध...’ इन पंक्तियों को मैं सहज रूप से लिख सका. इनका उद्गम यह विचार था कि महिलाओं की मुक्ति के विषय में बातें तो बहुत होती हैं, पर क्या वह समय कभी आएगा जब यह एक वास्तविकता बनेगी? महिलाओं की असली आज़ादी, सही मायनों में मुक्ति, इस पर मानो अनंत प्रतीक्षा का ठप्पा लगा हुआ है.

यहाँ तक कि हमारी शिक्षित और शहरी कही जाने वाली महिलाएँ भी वास्तव में मुक्त कहाँ? उनका जीवन तो और अधिक उलझा हुआ है. समाज और परिवार की पारंपरिक अपेक्षाओं और स्वयं की व्यक्तिगत अपेक्षाओं के मध्य संतुलन साधना उनके लिए कठिन होता है. अपनी महत्वाकांक्षाओं और स्वप्नों को पूरा करने की आज़ादी, उनका व्यक्तिगत मामला समझा जाता है, समाज का इससे कोई सरोकार नहीं होता.

दूसरी ओर, एक और बंधन जिसका सामना महिलाओं को करना पड़ता है वह यह धारणा कि वे तब तक मुक्त नहीं हैं, जब तक उनके पास कोई करियर ना हो. उनके पास अब भी चुनाव करने की स्वतंत्रता नहीं है. अपनी स्वतंत्रता को प्रमाणित करने के लिए, उन पर एक करियर अपनाने का सामाजिक दबाव रहता है.

एक महिला की सही अर्थों में मुक्ति तभी होगी, जब वह कौन-सी भूमिका निभाना चाहती है और कौन-सी नहीं, इसका चुनाव वह स्वतः कर सकेगी.

फिलहाल तो वह मन में आशा लिए, इंतज़ार कर रही है.

बाबुल

बाबुल जिया मोरा घबराए
बिन बोले रहा न जाए
बाबुल मोरी इतनी अरज सुन लीजो
मोहे सोनार के घर ना दीजो
मोहे जेवर कभी न भाए
बाबुल जिया मोरा घबराए

बाबुल मोरी इतनी अरज सुन लीजो
मोहे व्योपारी घर ना दीजो
मोहे धन दौलत ना सुहाए
बाबुल जिया मोरा घबराए

बाबुल मोरी इतनी अरज सुन लीजो
मोहे राजा घर ना दीजो
मोहे राज न करना आए
बाबुल जिया मोरा घबराए

बाबुल मोरी इतनी अरज सुन लीजो
मोहे लोहार के घर दे दीजो
जो मोरी जंजीरें पिघलाए
जो मोरी जंजीरें पिघलाए

गीत यात्रा

एक घटना ने मुझ पर बड़ी गहरी छाप छोड़ी. हमारे विस्तृत परिवार की एक सदस्य, जिसके हम बहुत करीब थे, उसकी शादी होने वाली थी. एक बंधनपूर्ण और परंपरागत पारिवारिक वातावरण

में पली-बढ़ी इस लड़की ने धारा के विरुद्ध जाने का साहस किया. वह किस प्रकार का जीवनसाथी चाहती है, उसने इस पर अपनी इच्छा, अपनी अपेक्षाएँ व्यक्त कीं.

मैंने उससे बात की तो मुझे अहसास हुआ कि जिस दृष्टि से उसके माता-पिता उसके जीवन को देख रहे थे और जो उसकी स्वयं की दृष्टि थी, दोनों में बहुत अंतर था. मैंने यह गीत स्वयं को उसके स्थान पर रखकर लिखा.

मैं नहीं जानता था कि एक लड़की की वास्तविक चाहत का वर्णन मैं किस प्रकार करूँगा? पर फिर मेरे मन में लोहार, पिघलती बेड़ियों, बंधनमुक्त हो जाने के दृश्य उत्पन्न हुए. जब मैंने यह गीत पूर्ण किया, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे.

इस गीत को मैंने परंपरागत भाषा और लोक संगीत शैली में लिखा क्योंकि यह इसी तरह मेरे अंदर से प्रकट हुआ. एक गहरे विचार वाला यह सरल सा गीत, मुझे अत्यंत प्रिय है.

जब भी मैंने इस गीत का पाठ किया है या इसे गाया है, फिर चाहे लिटरेचर फेस्टिवल जैसे भव्य आयोजनों में हो या कविता प्रेमियों की छोटी सभाओं में, इसने गहरा प्रभाव डाला है, विशेषकर महिलाओं ने इससे एक अलग ही तरह का अपनापन महसूस किया है.

माटी

सने हाथ माटी की
खुशबू लिए
रची धूप माथे पे
बूँदें लिए
जाने कितने बाज़ू
तू बाँहों में लिए
कितनी राहतें अपनी
छाँहों में लिए
तेरी बाँसुरी से चूल्हे जले
तू ये साज़ छेड़े तो जीवन चले

फसलों में बालियाँ हैं
तेरे कानों की
तपी दोपहर में ढली
तू तो है साँझ साँवली
जली रातों की आँच में
भीनी सी भोर से भरी
रतजगों में ज्योत सी
रतजगों में ज्योत सी

टीका करे तुझे हवा
मौसम सलामी दे रहा
धूल से करे तू सिंगार
बहती चली जा तू है धार
इस ज़मीं को सँवार
थकी हूई साँसों में कई शंख हैं
नीली नीली आशा के कई पंख हैं
आसमानी काजल नैनो में है

सने हाथ माटी की
खुशबू लिए
रची धूप माथे पे

बूँदें लिए
जाने कितने बाज़ू
तू बाँहों में लिए
कितनी राहतें अपनी
छांहों में लिए

गीत यात्रा

‘माटी’ विशुद्ध रूप से उत्तराखंड की महिलाओं को मेरी आदरांजलि है. बचपन से ही, इस छोटे से पहाड़ी प्रदेश की महिलाओं ने मुझे आश्चर्यचकित किया है. वे घर की देखभाल करती हैं, खेतों में काम करती हैं, वनों में गहरे जाकर मिट्टी की अँगीठियों के लिए जलाऊ लकड़ियाँ लेकर आती हैं, मवेशियों को खिलाने के लिए सर पर घास की गठरी ढोकर लाती हैं, बच्चों को जन्म देती हैं, बड़े-बूढ़ों की सेवा-सुश्रूषा करती हैं, और इतना सब करते हुए भी सदा मुस्कुराती रहती हैं, एक मधुर गीत उनके होंठों पर सदैव खेलता मिल जाएगा. उनके अंतर्मन की सुंदरता, उनके पोर-पोर से प्रकट होती है.

वे लोग जो उत्तराखंड में रह चुके हैं, इस क्षेत्र की महिलाओं के प्रति मेरे हृदय में जो अगाध श्रद्धा है, उसे भली-भांति समझ सकेंगे.

मेरी नानी भी एक ऐसी ही महिला थीं, और यह गीत मेरे मन में उनकी स्मृतियों को सजीव कर देता है.

मन के मंजीरे

मन के मंजीरे आज
खनकने लगे
भूले थे चलना
क्रदम थिरकने लगे
अंग अंग बाजे मृदंग सा
सुर मेरे जागे
साँस-साँस में, बाँस-बाँस में
धुन कोई साजे
गाए रे, दिल ये गाने लगा है
मुझको आने लगा है
खुद पे ही ऐतबार
खुद पे ही ऐतबार

बादल तक झूले मेरे
पहुँचने लगे
आँखों के आगे गगन
सिमटने लगे
गाल गाल पे, ताल ताल दे
छू के हवाएँ
खेत खेत ने, रेत रेत ने
फैला दी बाँहें
आई रे, सिंदूरी सुबह आई
घुलती जाए स्याही
रातों की, रातों की
रातों की, रातों की

खोले जो दरवाज़े तो देखा
हर शै थी नहाई
उजली उजली सी थी मेरी तन्हाई रे
बदली बदली सी बदली
मेरे अँगना में थी छाई
वीरानी रानी बन के मेरे पास आई
अपनी नज़र से मैंने देखी

दुनिया की रंगोली
मुझको बुलाने आई मौसम की टोली
खोली आँखों की खोली
मैंने पाई अपनी बोली
मुझमें ही रहती थी मेरी हमजोली रे
सुन लो, अब ना अकेली हूँ मैं
अपनी सहेली हूँ मैं
साथी हूँ अपनी मैं

मन के मंजीरे आज
खनकने लगे
भूले थे चलना
क्रदम थिरकने लगे
अंग अंग बाजे मृदंग सा
सुर मेरे जागे
साँस-साँस में, बाँस-बाँस में
धुन कोई साजे
गाए रे, दिल ये गाने लगा है
मुझको आने लगा है
खुद पे ही ऐतबार
खुद पे ही ऐतबार

बादल तक झूले मेरे
पहुँचने लगे
आँखों के आगे गगन
सिमटने लगे
गाल गाल पे, ताल ताल दे
छू के हवाएँ
खेत खेत ने, रेत रेत ने
फैला दी बाँहें
आई रे, सिंदूरी सुबह आई
घुलती जाए स्याही
रातों की, रातों की
रातों की, रातों की

गीत यात्रा

मैंने यह शीर्षक गीत सबसे अंत में लिखा, जब मुझे महसूस हुआ कि मैं एक महिला के विचारों, इच्छाओं और भावनाओं के साथ एक लय में हूँ।

यह गीत स्वयं के प्रति आस्था के बारे में है, एक ऐसी आस्था जो पुनः प्रज्वलित हो गई है। यह स्वयं में विश्वास का गान है। स्वतंत्रता अपने साथ एक उल्लास लेकर आई है, रात का अंधेरा पिघल रहा है और उसकी सुबह, सूरज की रोशनी में नहाई है।

कभी-कभी जब 'खोली आँखों की खोली' जैसा शब्दों का खेल, श्रोता समझ पाते हैं तो मेरे अंदर के लेखक को बहुत खुशी मिलती है। 'खोली' एक शुद्ध हिंदी शब्द नहीं है पर मुम्बई में, बोलचाल की भाषा में एक छोटे से कमरे, या रहने के स्थान को 'खोली' कहा जाता है। मैंने यह शब्द पहली बार तब सुना था जब मैं इस शहर में रहने आया था। गीत लिखते समय यह शब्द, अनायास ही मेरे अवचेतन से बाहर निकल आया। गीत में मैंने इसका क्रिया और संज्ञा, दोनों ही तरह से प्रयोग किया है।

यह एलबम और इसके अधिकतर गीत, महिलाओं के हृदय से एक आत्मीय नाता जोड़ने में कामयाब रहे। मुझे याद है, शुभाजी ने मुझे बताया था कि अनेक लोग उनसे पूछते थे कि इस एलबम के बोल किस महिला ने लिखे हैं, मेरा नाम लेने पर उनके मुख पर आश्चर्य का भाव तैर जाता। इन गीतों का मेरे हृदय और मेरे जीवन में एक विशेष स्थान है।

आरक्षण

कौन सी डोर

साँस अलबेली, साँस अलबेली
कौन सी डोर खींचे
कौन सी काटे रे, काटे रे
साँस अलबेली कहे
काहे मोहे बाँटे रे, बाँटे रे
कौन सी डोर खींचे
कौन सी काटे रे, काटे रे

मन जंगल में आँधी हलचल
पत्ते बिछड़न लागे
लहर लहर उत्पात नदी में
हृदय ज्वार सा जागे
जीवन शोर आए और जाए
शाश्वत बस सन्नाटे रे

कौन सी डोर खींचे
कौन सी काटे रे, काटे रे
साँस अलबेली, साँस अलबेली

बड़े जतन से फसल लगाई
चुन-चुन बीज रचाए
बाँध टकटकी की रखवाली

तब अंकुर मुस्काए
भाग्य चिरैया बड़ी निठुर है
कौन जो उसको डाँटे रे

कौन सी डोर खींचे
कौन सी काटे रे, काटे रे
साँस अलबेली, साँस अलबेली

गीत यात्रा

प्रकाश झा, जो इस फ़िल्म के निर्देशक थे, उन्हें एक ऐसा गीत चाहिए था जिसमें पुराने समय की महक हो, बहुत कुछ शास्त्रीय शैली का.

मैं बहुत रोमांचित था, क्योंकि ऐसे अवसर आजकल दुर्लभ हैं. इस गीत के विषय में सोचते हुए मुझे एक बात का अहसास हुआ. आप एक विशिष्ट प्रकार की कविताएँ बहुत पढ़ सकते हैं पर यदि आपको उसी शैली में लिखने के लिए कहा जाए, तो यह कठिन सिद्ध हो सकता है. वस्तुतः यह, जब आप सहज प्रेरणा से लिखते हैं और जब आपको लिखने के लिए कहा जाता है, इसके बीच का अंतर है. यह हर प्रकार के व्यवसायिक लेखन का सत्य है. मैं दूसरों के विषय में तो नहीं कह सकता पर मेरे लिए यह बहुत चुनौतीपूर्ण होता है.

सभी शास्त्रीय कवि एक विशिष्ट प्रकार की कविता लिखते थे, क्योंकि उनकी सहज, स्वाभाविक वृत्ति ही वैसी होती थी. एक कमीशनड आर्ट प्रोजेक्ट में, आपको उस वृत्ति, उस मनःस्थिति का निर्माण करना पड़ता है. पर आपका मन कोई मशीन तो नहीं, इसलिए यह कभी-कभी कठिन हो जाता है.

पर व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत सभी रचनात्मक लोगों को इस स्थिति से तालमेल बैठाने की कला अवगत होती है. मैंने भी यही तालमेल बैठाया. मैंने सहज, स्वाभाविक बने रहने का प्रयास किया, बजाय इसके कि वास्तविकता का निर्माण करूँ.

मेरा मानना है कि किसी विशेष शैली में लिखने का अर्थ सिर्फ़ थोड़े से शब्द बदल देना या उस शैली से संबंधित कुछ पदों का छिड़काव भर कर देना नहीं है. आपको इसे अंदर से महसूस करना होता है और फिर बारीकियों में अभिव्यक्त करना होता है.

इस गीत का विचार, कई दिनों तक मेरे साथ रहा, मेरे साथ ही उठता-बैठता, साँस लेता हुआ. एक दोपहरी, नहाते समय, मैं एक धुन गुनगुनाने लगा. यह चमत्कारी था — गीत मेरे पास

धुन के साथ ही चला आया था, और वास्तव में यह एक संगीत रचना, एक बंदिश थी जिसे मैं गुनगुना रहा था। मैं स्नानघर में ही रुका रहा, गाते हुए, गुनगुनाते हुए, मैंने लगभग दो अंतरे पूरे कर लिए। मैंने एक घंटे तक बाहर कदम नहीं रखा क्योंकि मैं विचारों की श्रंखला को तोड़ना नहीं चाहता था। मैं गीत को गाते हुए ही बाहर आया, कागज़ और पेन ढूँढने में अपना समय व्यर्थ न कर, पास में पड़ा फ़ोन उठाया और गीत को शब्दशः रिकॉर्ड कर लिया। मैंने इस रिकॉर्डिंग को शंकर (महादेवन, संगीत निर्देशक) और प्रकाशजी को फॉरवर्ड कर दिया।

मैं यह अपेक्षा नहीं कर रहा था कि शंकर, शब्दों के साथ धुन को भी बनाए रखेंगे। पर शंकर ने मुझसे कहा कि उन्होंने इसके कुछ नए रूप बनाने की कोशिश की, पर उन सभी से मूल रचना ही बेहतर लग रही थी। अतः यह गीत मेरी पहली अधिकृत संगीत रचना बना। यह शंकर की उदारता थी, वे एक ऐसे कलाकार हैं जो असाधारण प्रतिभा के धनी हैं, अपनी कला को लेकर बहुत आश्वस्त, और जब साथी कलाकारों के योगदान की बात हो तो उनका हृदय अत्यंत विशाल है।

मुझे याद है, मैं और शंकर चर्चा कर रहे थे कि पंडित छन्नूलाल मिश्र से इस गीत को गाने का अनुरोध किया जाए। पंडित छन्नूलाल मिश्र, हम दोनों के ही प्रिय शास्त्रीय और ठुमरी गायकों में से एक हैं। उन्होंने हिंदी फ़िल्मों के लिए पहले कभी नहीं गाया था, पर जब उन्होंने गीत के बोल सुने, तो वे राज़ी हो गए। इस गीत की रिकॉर्डिंग की स्मृतियाँ मेरे हृदय के बहुत निकट हैं। एक शाम, अमितजी के घर पर आयोजित एक छोटी सी बैठक में, हमने इसे अनेक बार सुना, इस पर चर्चा की और फिर अमितजी ने अपने बाबूजी (श्री हरिवंश राय बच्चन) की हिंदी कविताओं के संग्रह से कविता पाठ किया।

लो मशालों को जगा डाला

लो मशालों को जगा डाला किसी ने
भोले थे, अब कर दिया भाला किसी ने
लो मशालों को जगा डाला किसी ने

है शहर यह कोयलों का
यह मगर न भूल जाना
लाल शोले भी इसी बस्ती में
रहते हैं युगों से
रास्तों में धूल है, कीचड़ है
पर यह याद रखना
यह ज़मीं धुलती रही है
संकल्प वाले आँसुओं से
मेरे आँगन को है धो डाला किसी ने
लो मशालों को जगा डाला किसी ने
भोले थे, अब कर दिया भाला किसी ने

आग बेवजह कभी घर से
निकलती ही नहीं है
टोलियाँ जत्थे बनाकर चीख
यूँ चलती नहीं है
रात को भी देखने दो आज तुम
सूरज के जलवे
जब तपेगी ईंट तब ही
होश में आएँगे तलवे
तोड़ डाला मौन का ताला किसी ने

लो मशालों को जगा डाला किसी ने
भोले थे, अब कर दिया भाला किसी ने
लो मशालों को जगा डाला किसी ने

गीत यात्रा

भ्रष्टाचार-विरोधी लहर जो पूरे देश में फैल गई थी, उसने मुझे भी भिगो दिया था और अपनी व्यग्रता को स्वर देने के लिए बाध्य कर दिया था.

भारत अन्य देशों की तरह गैर-आयामी नहीं है, और मैं कई बार आश्चर्य करता हूँ कि कैसे, इतनी विविधता के बीच, 'एक राष्ट्र' की अवधारणा कायम रहती है, साँस लेती रहती है. हम सभी अनेक पहचानें धारण करते हैं और कोई एक ऐसी निश्चित विचारधारा भी नहीं, जो हम सबको एक सूत्र में बाँधती हो. इतना ही नहीं, भारत के मध्यम और निम्न वर्ग के बीच एक बहुत बड़ी खाई है, दोनों के विचारों और दृष्टिकोणों में काफ़ी अंतर है. असल में, भारत के मध्यम वर्ग में एक प्रकार की उदासीनता ने घर कर लिया है और यह धारणा बन गई है कि तंत्र इतना सड़ चुका है कि कोई एक आवाज़ बदलाव नहीं ला सकती. पर भ्रष्टाचार-विरोध के भाव ने अपने ही तरीके से इन सभी बाधाओं को तोड़कर रख दिया था. यह एक अभूतपूर्व व स्वतःस्फूर्त आंदोलन था.

मैं आपका ध्यान 'भोले थे अब कर दिया भाला किसी ने' की ओर आकर्षित करना चाहूँगा. भोला-भाला, सामान्यतः एक ही शब्द की तरह प्रयोग किया जाता है, पर मैंने इसे एक अलग दृष्टि से देखा और अभिव्यक्त किया. एक ओर यह समाज के सीधे-सादे, सरल व्यक्तियों का वर्णन करता है वहीं दूसरी ओर उनकी भेदने वाली तीक्ष्णता का, जो अब सवाल कर रही है.

मुझे यह देखकर बहुत संतुष्टि हुई कि एक राष्ट्र के रूप में हमने हार नहीं मानी है, हमने अपने ज़मीर को ज़िन्दा रखा है, हम बदलने के लिए तैयार हैं, और बदलाव लाने के लिए भी. 'जब तपेगी ईंट तब ही होश में आएँगे तलवे' — यह इस विश्वास पर आधारित है कि गाढ़ा दर्द और गहरी निराशा समाज को सामूहिक रूप से क़दम उठाने के लिए बाध्य कर सकते हैं. यह गीत, एक नागरिक के रूप में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन को मेरा समर्थन था, मेरी आदरांजलि थी.

मशाल, चाहे खेल के मैदान में हो या क्रांतिकारियों के हाथ में, एक अत्यंत शक्तिशाली प्रतीक है. मशाल एक नियंत्रित लौ है. अपने अस्तित्व के लिए लड़ती मोमबत्ती या दीये की लौ से अलग, मशाल की लौ में आत्मविश्वास भरा होता है. यह दृढ़ प्रतिज्ञा है, इसमें निश्चय की दमक है, यह लाचार नहीं. यह जलाए जाने की याचना नहीं करती, बल्कि प्रज्वलित किए जाने का आह्वान करती है.

सत्यमेव जयते

तेरा रंग ऐसा चढ़ गया
कोई और रंग ना चढ़ सके
तेरा नाम सीने पे लिखा
हर कोई आ के पढ़ सके

है जुनून है जुनून है
तेरे इश्क़ का ये जुनून है
रग-रग में इश्क़ तेरा दौड़ता
ये बावरा सा खून है
तूने ही सिखाया
सच्चाइयों का मतलब
तेरे पास आ के जाना
मैंने ज़िन्दगी का मक़सद
सत्यमेव, सत्यमेव,
सत्यमेव जयते
सच्चा है प्यार मेरा,
सत्यमेव जयते

तेरे नूर के दस्तूर में
न हो सलवटें न शिकन रहे
मेरी कोशिशें तो हैं बस यही
रहे खुशबुएँ गुलशन रहे
तेरी जुल्फ़ सुलझाने चला
तेरे और पास आने चला
जहाँ कोई सुर ना हो बेसुरा
वो गीत मैं गाने चला

तेरा रंग ऐसा चढ़ गया
था नशा जो और भी बढ़ गया
तेरी बारिशों का करम है ये
मैं निखर गया
मैं सँवर गया

जैसा भी हूँ अपना मुझे
मुझे ये नहीं है बोलना
क्राबिल तेरे मैं बन सकूँ
मुझे द्वार ऐसा खोलना
साँसों की इस रफ़्तार को
धड़कन के इस त्यौहार को
हर जीत को हर हार को
खुद अपने इस संसार को
बदलूँगा मैं तेरे लिए

मुझे खुद को भी है टटोलना
कहीं है कमी तो है बोलना
कहीं दाग़ हैं तो छुपाएँ क्यों
हम सच से नज़रें हटाएँ क्यों

खुद को बदलना है अगर
बदलूँगा मैं तेरे लिए
शोलों पे चलना है अगर
चल दूँगा मैं तेरे लिए
मेरे खून की हर बूँद में
संकल्प हो तेरे प्यार का
काटो मुझे तो तू बहे
हो सुख रंग हर धार का

सत्यमेव, सत्यमेव,
सत्यमेव जयते
सच्चा है प्यार मेरा,
सत्यमेव जयते

गीत यात्रा

मेरे लिए, 'सत्यमेव जयते' इस कार्यक्रम पर पूरी तरह आमिर खान की छाप है. उनके अटल विश्वास ने ही इसे संभव बनाया है. यह कार्यक्रम लोगों से एक रिश्ता जोड़ सका क्योंकि आमिर ने विभिन्न मुद्दों को पूरी सच्चाई और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया. मैं इसी तरह की ऊर्जा में पनपता हूँ, फलता-फूलता हूँ, बढ़ता हूँ, ऐसा अदम्य उत्साह ही मुझे प्राण और प्रेरणा देता है. आम तौर पर ऐसा कम ही होता है और अक्सर मुझे अपनी प्रेरणा की खोज स्वयं ही करनी पड़ती है, इसे मुझे अपने अंदर से ही कहीं खोदकर बाहर निकालना होता है. आमिर ने मेरे अंदर ऊर्जा का संचार कर दिया था. मैं प्रेरणा से ओत-प्रोत हो गया था. आमिर का दृढ़ विश्वास था कि गीत की भावना, प्रेम की ही होनी चाहिए. मैंने गीत को उसी तरह, विचार और आकार दिया. अलग-अलग संस्करण, अलग-अलग मीटर, अलग-अलग विचार....मैं लिखता गया, लिखता ही गया.

दिमाग में विचारों का मंथन लगातार जारी था. मैं जाता और एडिट किए जा रहे एपिसोड्स के कुछ अंश देखता. यह मुझे चुनौती देता, 'क्या मैं शो की विषय-वस्तु और उद्देश्य के साथ न्याय कर पाया हूँ? क्या मैं लोगों के दर्द को आवाज़ देने और देश के प्रति अपना प्यार अभिव्यक्त करने की योग्यता रखता हूँ?' परिणामस्वरूप, मैंने बहुत कुछ लिखा, बहुत कुछ खारिज किया और फेंका. यह एक अत्यंत विस्तृत विषय था. यदि यह मात्र देश का स्तुति गान होता तो अपेक्षाकृत आसान होता — कुछ सुन्दर उपमाएँ, अपने शिल्प का प्रयोग, और गीत पूर्ण हो जाता. पर यहाँ, एक अलग प्रकार के प्रेम को अभिव्यक्त करना था. प्रेम जो सुखदायक नहीं है, प्रेम जो सिर्फ़ समर्पण नहीं है, पर एक ऐसा प्रेम जो प्रश्न पूछता है, कुछ करने के लिए कहता है, जो सुकून नहीं देता उल्टा बेचैन कर देता है.

हम एक रचनात्मक प्रकार का प्रेम दर्शाना चाहते थे. प्रश्न था कि इसकी कल्पना कैसे की जाए, इसका वर्णन किस प्रकार किया जाए? क्या मेरा प्रेम, माँ के लिए अपने प्रेम की तरह है, कृतज्ञता और सम्मान से भरपूर, या इसका स्वरूप रूमानी है, फ़िदा होने का भाव लिए? मैं विचारों की गली में घूमता रहा, भटकता रहा, और जो कुछ भी इस मंथन से निकला, 'सत्यमेव जयते' नामक गीत में प्रकट हुआ.

चिटगाँव

जीने की वजह

मशाल में जगह दो
मुझे जीने की वजह दो
कह रही है मुझसे ज़िन्दगी
अस्तित्व ही मिटा दो
मुझे आग में सजा दो
कुलबुला रही है रोशनी
चिंगारियाँ बन के मैं
बिखरता जाऊँ हर कहीं

पुर्जा पुर्जा राख राख हो
मिटने वाली मेरी साख हो
पुर्जा पुर्जा राख राख हो
मिटने वाली मेरी साख हो
धधकने वाली गर्म धूल सा
गिरूँ यहाँ वहाँ जहाँ
खिलूँ मैं सुख फूल सा

मैं आँच बन उड़ूँ-उड़ूँ
लपट से मैं जुड़ूँ-जुड़ूँ
शोलों सा नारंगी लाल मैं
मिल जाऊँ मैं मशाल में
झूमूँ अग्नि ताल में

सुलग चलूँ, भभक चलूँ
धधक चलूँ, सजग चलूँ

तेरी कसम साँस साँस ये कहे मेरी
तू छेड़ दे उम्मीद वाली बाँसुरी
गूँजे-गूँजे हर तरफ़
नया नया नया नया सा राग एक
नई सी रौशनी नई-नई सी ज़िन्दगी
नई-नई सी रुत में खौलता सा ख़्वाब हो
अंगारों की तरह से सुलगता गुलाब हो

पुर्जा पुर्जा राख राख हो
मिटने वाली मेरी साख हो
पुर्जा पुर्जा राख राख हो
मिटने वाली मेरी साख हो
धधकने वाली गर्म धूल सा
गिरूँ यहाँ वहाँ जहाँ
खिलूँ मैं सुख फूल सा

मैं आँच बन उड़ूँ-उड़ूँ
लपट से मैं जुड़ूँ-जुड़ूँ
शोलों सा नारंगी लाल मैं
मिल जाऊँ मैं मशाल में
झूमूँ अग्नि ताल में
सुलग चलूँ, भभक चलूँ
धधक चलूँ, सजग चलूँ

गीत यात्रा

चिटगाँव एक अनूठा प्रोजेक्ट था. भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में इस विद्रोह के ऐतिहासिक महत्त्व के अलावा, मुझे इस फ़िल्म के लेखक-निर्देशक ने भी बहुत प्रेरित किया था — बेदब्रता पेन, या बेदो जैसा कि हम उन्हें बुलाते हैं. नासा के वैज्ञानिक, जिनके नाम कई पेटेंट दर्ज थे, बेदो ने इस ऐतिहासिक घटना पर आधारित फ़िल्म बनाने की ज्वलंत चाहत में अपनी नौकरी छोड़ दी.

उनकी ईमानदारी और निष्ठा से प्रभावित होकर, मैं इस प्रोजेक्ट से भावनात्मक स्तर पर जुड़ गया. और उस पर से युवाओं की एक प्रेरणादायी कहानी, जिनमें अधिकांश बच्चे ही थे, उनका शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध बगावत का झंडा बुलंद करना — मैं मानो पूरी तरह से इस फ़िल्म का हो गया था.

यह गीत पार्श्व में तब चलने वाला था, जब बच्चे एक बड़े उद्देश्य के लिए साथ आ रहे हैं. जब मैंने इस गीत के विषय में सोचना शुरू किया तो मुझे एक बहुत गहरा अहसास हुआ — वह क्या था जिसने इतने छोटे बच्चों को क्रांतिकारियों में बदल दिया? इन बच्चों को किस बात ने प्रेरित किया होगा, उनके दिल और दिमाग में उस क्षण क्या विचार चल रहे होंगे?

क्या स्वयं को पूरी तरह मिटा लेना ही उनके जीवन का उद्देश्य हो सकता है? हाँ, एक चिंगारी का जीवन उद्देश्य यही होता है, वह स्वयं को एक लपट में बदलने के लिए ही जन्म लेती है. 'मशाल में जगह दो मुझे, जीने की वजह दो', ये पंक्तियाँ इसी विचार को व्यक्त करने का प्रयास करती हैं.

यह एक ओज भरा और अत्यंत प्रबल गीत है. दुर्भाग्य से, बहुत से लोगों ने इसे सुना नहीं है. व्यावसायिक सफलता, गुणवत्ता के अलावा अन्य कई घटकों पर आधारित होती है. फिर भी यह गीत मेरे हृदय के बहुत करीब है और मुझे इस पर गर्व है.

बोलो ना

बोलो ना, बोलो ना
बोलो ना, बोलो ना

ऋतुओं को घर से निकलने तो दो
बोये थे मौसम खिलने तो दो
होंठों की मुँडेर पे रुकी
मोतियों सी बात बोल दो
फीकी फीकी सी है ज़िंदगी
चीनी चीनी ख्वाब घोल दो
देखो ना बीत जाएँ
ये लम्हे, ये घड़ियाँ

धड़कन रुन-झुन
साँसें रुम-झुम
मन घुँघरू सा बाजे
अँखियाँ पायल
सपने कंगना
तन में थिरकन साजे

कोहनियों से ठेल के कहती हवा
इतर की शीशी खोल दो ज़रा
राग महकाओ, गीत छलकाओ
मिश्री सी घोलो ना
बोलो ना

सन्नाटों की चोटी खींचो
शोर की रौनक लाओ
काँच खामोशी फर्श पे तोड़ो
हल्ला प्यार सजाओ
आज इंकार पुकार बने
आज चुप्पी झंकार बने

शब्द खनकाओ, छंद बिखराओ
मन के संग हो लो ना
बोलो ना, बोलो ना

गीत यात्रा

‘बोलो ना’ एक अत्यंत सुंदर गीत है — मंद, मधुर और मोहक. संगीत और शब्द, इतने प्यार से एक दूसरे में घुल जाते हैं.

इस गीत में प्रयोग किए गए कुछ पद मुझे विशेष रूप से प्रिय हैं — ‘सन्नाटों की चोटी खींचो’, ‘काँच खामोशी फर्श पे तोड़ी’ और ‘हल्ला प्यार सजाओ’.

इस गीत में प्रेमी अपनी प्रेमिका से अनुरोध कर रहा है कि वह कुछ बोले, उनके बीच की भावनाओं को शब्द दे, उन्हें स्वीकार करे. पर विचित्र बात यह कि इस गीत को सुनकर, आपके मन में ‘ना बोलो’ का अहसास उत्पन्न होता है. यह विचार और धुन के मध्य एक प्रकार का विरोधाभास है. यह गीत इतना सौम्य है कि आपको खामोश सा कर देता है. मैंने निर्देशक को यह बात नहीं बताई क्योंकि यह उनकी आवश्यकता के विपरीत था, पर यह गीत मेरे द्वारा लिखे गए सबसे खूबसूरत प्रेम गीतों में से एक है. फ़िल्म में इसने बेमिसाल प्रभाव उत्पन्न किया.

इस गीत को ढूँढ़ें और सुनें. अच्छे संगीत और गीतों के क़द्रदानों के रूप में हमें एक सुंदर रचना तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए, यदि वह स्वयं हम तक पहुँचने में असमर्थ हो. जैसे कभी-कभी, पूर्णिमा के खूबसूरत चाँद को देखने के लिए देर तक जागना पड़ता है या रात की रानी की मदहोश कर देने वाली सुगंध का आनंद लेने के लिए, देर रात को टहलने निकलना होता है. इस गीत के लिए प्रसून को वर्ष २०१२ में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला. यह प्रसून का दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार था. पहले, उन्होंने वर्ष २००७ में ‘तारे ज़मीं पर’ के लिए यह सम्मान मिला था.

चिंतन

कई लोग फ़िल्मी गीतों को काव्य के सदृश नहीं समझते. पर मेरे लिए, लिखने की प्रेरणा यही है — फ़िल्मी गीतों में काव्य को जीवित रखना.

मैं किंचित अभिमानी प्रतीत होने वाले इस विचार से पूर्णतः सहमत नहीं कि कला के चाहने वाले, उसे खोज ही लेते हैं.

मैं कला रूपों की ऊर्जा और शक्ति में विश्वास रखता हूँ, और इस सत्य में भी कि जितनी तलाश एक कला प्रेमी को कला की होती है, कला भी अपने में विश्वास करने वालों को ढूँढती है.

हमें काव्य की गुंजाइश बनानी होगी, काव्य नामक इस अद्भुत कला रूप को लोगों तक ले जाने के नए-नए रास्ते ढूँढने होंगे, रुचि के अभाव और ध्यान बँटाने वाली अन्य वस्तुओं को दोष देते रहना बंद करना होगा, कुछ करना होगा.

काव्य में कम होती दिलचस्पी को मैं चुपचाप बैठे नहीं देख सकता, क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि काव्य हमारे जीवन को अर्थ प्रदान करता है. इसलिए, मैं कभी भी फ़िल्मी संगीत, या ऐसे किसी अन्य माध्यम का उपयोग करने से पीछे नहीं हटूँगा, जो मेरे कार्य को लोगों के जीवन का हिस्सा बनाए, और जो काव्य को जीवित रखने में भूमिका निभाए. यह काव्य की उन्नति में मेरा एक छोटा सा योगदान है, और मैं इसे जारी रखूँगा.

मैंने इस पुस्तक में अपने अनुभव, विचार, विश्वास और गीत लेखन का अपना तरीका आपसे बाँटा है, इस आशा के साथ कि जब कभी आप इन गीतों को पुनः सुनेंगे, इनसे जुड़ी कोई साझी स्मृति, आपके चेहरे पर मुस्कान ले आएगी.

मैं जानता हूँ कि ये सिर्फ़ गीत हैं, और किसी व्यक्ति के जीवन का एक छोटा सा भाग. फिर भी, मेरे लिए, ये गीत मेरे रचनात्मक जीवन का हिस्सा रहे हैं, संगीत के सम्मोहक संसार में ले जाता एक सुंदर सा रास्ता. ये मेरी लय हैं, ताल हैं, मेरे हृदय का राग हैं. ये जीवन से मेरा संबंध हैं, मेरी धड़कन हैं.

यह एक बहुत खूबसूरत यात्रा रही है — मुक्त अभिव्यक्ति और प्रवाहमय कथाओं की. मुझे खुशी है कि हम इस रास्ते पर साथ-साथ चल सके.